संसार की श्रेष्ठ कहानियाँ

(तीसरा भाग)

सम्पादक—
डाक्टर आर्येन्द्र शर्मा, एम० ए०, डी० फ़िल०

मूल्य—आठ आना

हंगरी

अदृश्य घाव

लेखक—केरोली

एक दिन तड़के, बिस्तर पर से उठने के भी पहले, सुप्रसिद्ध डाक्टर के दरवाजे पर एक रोगी आया और जिद करने लगा कि उसके रोग की दवा करने और व्यस्था बताने में एक क्षण की भी देर नहीं होनी चाहिये ! डाक्टर ने झटपट कपडे पहन कर, नौकर से उस रोगी को अन्दर बुलाने के लिये कहा।

रोगी को देखने से जान पड़ता था कि वह बहुत ऊँचे घराने का है। उसके चेहरे का पीलापन और घबराहट स्पष्ट ही बता रहे थे कि उसे कोई शारीरिक कष्ट हो रहा है। उसका दाहिना हाथ रूमाल के सहारे गर्दन में लटका हुआ था और यद्यपि वह अपने चेहरे पर कोई विकार नही आने देता था, फिर भी कभी-कभी उसके मुँह से कराहने की आवाज निकल ही जाती थी।

"बैठिये। कहिये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

"मैं एक सप्ताह से बिल्कुल ही नही सो सका हूँ। मेरे दाहिने हाथ में कुछ हो गया है। शायद कोई जहरीला फोड़ा है, या और कोई भयानक रोग है। पहले-पहल मुझे कोई विशेष कष्ट नहीं होता था, पर थोड़े दिनो से इसमें जलन होने लगी है। मुझे एक क्षण के लिये भी चैन नही पड़ता। बहुत दर्द होता है। और यह दर्द प्रतिक्षण बढ़ता ही जाता है, और भी अधिक दु:खद, असह्य होता जाता है। मैं यहाँ शहर में आपसे इलाज कराने आया हूँ। अगर दर्द घटे भर मुझे

"क्या मेरे छूने पर दर्द बढ़ जाता है ?"

उसने कोई जवाब न दिया, पर उसकी आँखों में आये हुये आँसुओं ने सब हाल बता दिया।

"बड़ी अद्भुत बात है ! मुझे तो इसमे कुछ भी नहीं दीखता !"

"न मुझे ही दीखता है। लेकिन दर्द तो बराबर हो रहा है। इस तरह रहने से मर जाना कहीं अच्छा है !"

डाक्टर ने फिर से, इस बार microscope (अणुवीक्षण यन्त्र) से, हाथ को देखा-भाला, रोगी का टेम्परेचर भी देखा, और अन्त में सिर हिला कर कहा, "खाल बिलकुल ठीक हालत में है। नसे भी ठीक हैं। सूजन भी नहीं है। जैसी साधारण दशा किसी भी हाथ की होती है, वैसी ही इसकी भी है।"

"मेरा ख्याल है कि यह जगह कुछ ज़्यादा लाल है।"

"कहाँ पर ?"

उसने हाथ की पीठ पर एक पाई के बराबर जगह बता कर कहा, "यहाँ।"

डाक्टर ने उसकी ओर देखा। वे सोचने लगे, पागल का इलाज करना है। उन्होंने कहा, "आपको शहर में रहना पडेगा। मैं कुछ दिनों बाद आपका इलाज करूँगा।"

"मैं एक मिनट भी नहीं रुक सकता। डाक्टर साहब, आप मुझे पागल मत समझिये। न मुझे कोई भ्रम ही हुआ है। इस अदृश्य घाव से मुझे बहुत कष्ट होता है और मैं चाहता हूँ कि आप इतनी जगह को पूरा हड्डी तक काट कर अलग कर दें।"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि आपके हाथ मे कुछ भी नहीं हुआ है। आपका हाथ वैसा ही तन्दुरुस्त है, जैसा मेरा।"

और सहना पड़ा, तो मैं पागल ही जाऊँगा। मैं चाहता हूँ कि आप इस जगह को जला दें, काट डालें या और कुछ करें।"

डाक्टर ने रोगी को तसल्ली बँधाते हुये बताया कि शायद ऑपरेशन की कोई जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

पर रोगी ने जिद के साथ कहा, "नहीं, नहीं; ऑपरेशन करना ही पड़ेगा। मैं आया ही इस इरादे से हूँ कि इस खराब जगह को कटवा डालूँ। इसके सिवाय और कोई उपाय ही नहीं है।"

उसने गर्दन में पड़े हुये रूमाल में से प्रयत्न करके वह हाथ निकाला और फिर कहा, "अगर आपको मेरे हाथ पर कोई घाव प्रत्यक्ष न दिखाई पड़े तो आश्चर्य मत कीजियेगा। मेरा रोग बिल्कुल असाधारण है।"

डाक्टर ने उसे विश्वास दिलाया कि असाधारण बातें देख कर भी उन्हें कोई आश्चर्य नहीं होता। पर इस रोगी का हाथ देखने के बाद वे अत्यन्त चकित हुए, क्योंकि हाथ में किसी तरह की कोई गड़बड़ नहीं दिखाई देती थी। यह हाथ ठीक दूसरे हाथ की ही तरह था, रङ्ग तक में कोई भेद न था। फिर भी इसमें कोई सन्देह न था कि उस रोगी को बहुत घोर कष्ट हो रहा था, क्योंकि जब डाक्टर ने उसका यह, दाहिना हाथ देख चुकने के बाद छोड़ा तो उसने बाँये हाथ से उसे ऐसे ढग से पकड़ा कि उसे कष्ट होने की बात पर कोई सन्देह नहीं कर सकता था।

"दर्द कहाँ पर होता है?"

उसने दो बड़ी नसों के बीच में थोड़ी सी गोलाकर जगह दिखाई, पर जब डाक्टर सावधानी से अँगुली से उस स्थान को छूने लगे तब उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

"क्या यहीं पर दर्द होता है?"

"हाँ, बहुत ज़ोर से।"

समय आया तो डाक्टर ने उससे अपना मुँह फेर लेने के लिये कहा, क्योंकि लोग प्रायः अपना रक्त देख कर घबड़ा जाते हैं।

पर वह बोला, "इसकी रत्ती भर भी आवश्यकता नहीं। बल्कि मैं आपको बताता जाऊँगा कि कहाँ तक काटना है।"।

उसने ऑपरेशन को बहुत ही धैर्य और शान्ति से हो जाने दिया और उसमे कुछ बता कर सहायता भी दी। उसका हाथ जरा भी नहीं कॉपा, और जब वह गोलाकार जगह काट कर निकाल दी गई तो उसने एक शान्ति की साँस ली, मानो उसके कधों पर से कोई भारी बोझ उतर गया हो।

"अब तो दर्द नही हो रहा है?" डाक्टर ने पूछा।

उसने मुस्करा कर कहा, "बिलकुल नहीं। मुझे ऐसा लग रहा मानो दर्द ही काट कर फेक दिया गया हो। और इस काटे जाने से जो जरा सी तकलीफ हो रही है, वह गर्मी पड़ने के बाद ठण्डी हवा की तरह लग रही है। इससे मुझे बड़ा आराम मिल रहा है।"

घाव मे पट्टी बँध जाने के बाद वह प्रसन्न और सन्तुष्ट दिखाई देता था। वह अब एक नया ही आदमी बन गया था। उसने कृतज्ञता से डाक्टर का हाथ अपने बाये हाथ मे लेकर दबाया और कहा, "सचमुच मैं आपका बहुत ऋणी हूँ।"

ऑपरेशन के बाद कई दिनो तक डाक्टर उस रोगी को देखने उसके होटल मे जाते रहे और धीरे-धीरे उसका आदर करने लगे। वह एक अत्यन्त प्रतिष्ठित मनुष्य था। वह खूब सभ्य और शिक्षित था और प्रान्त के सबसे बड़े घरानों मे का था।

घाव भर जाने पर वह फिर गाँव को वापस चला गया।

तीन सप्ताह बाद वह फिर डाक्टर के यहाँ आ पहुँचा। पहले की तरह आज भी उसका हाथ रूमाल के सहारे गर्दन मे लटका हुआ था

अपने मनीबेग से एक हजार रुपये के नोट निकाल कर मेज पर रखते हुये वह बोला, "आप समझते हैं कि या तो मैं पागल हूँ या आपको धोखा दे रहा हूँ। अब तो आप मेरा विश्वास करेंगे ? मेरा रोग इतना विकट है कि मैं इसके लिये एक हजार रुपये खर्च कर सकता हूँ। अब आप ऑपरेशन कीजिये।"

"अगर आप ससार का सारा धन मेरे सामने रख दे तब भी मैं एक अच्छे खासे अङ्ग को अपने चाकू से नहीं छुऊँगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि यह मेरे पेशे की नीति के अनुकूल नहीं है। सब कोई आपको तो मूर्ख बतायेंगे ही और मुझ पर आपकी निर्बलता से अनुचित लाभ उठाने का दोष भी लगायेंगे। या कहेंगे कि मैं एक ऐसे घाव का ठीक निदान नहीं कर सका जो कहीं था ही नहीं।"

"अच्छा साहब। तब मैं आपसे एक और निवेदन करूँगा। मैं अपने आप ही ऑपरेशन करूँगा, यद्यपि मेरा बायाँ हाथ ऐसे काम ठीक से नहीं कर सकता। मैं आप से इतना ही चाहता हूँ कि ऑपरेशन के बाद घाव की ठीक तरह से मरहम-पट्टी कर दें।"

डाक्टर ने विस्मित होकर देखा कि वह सचमुच इसके लिये तैयार था। उसने अपना कोट उतार डाला और कमीज की आस्तीन ऊपर को समेट ली। उसने अपनी जेब से एक साधारण चाकू भी निकाल लिया और जब तक डाक्टर उसको रोकें, तब तक रोगी ने अपने हाथ में एक गहरा घाव कर ही तो लिया।

"ठहरो!" डाक्टर ने चिल्ला कर कहा। वे डर रहे थे कि कहीं वह आदमी अपनी कोई नस न काट डाले, "क्योंकि तुम्हारा विश्वास है कि ऑपरेशन होना चाहिये, इसलिये लाओ, मैं ही करूँगा।"

वह ऑपरेशन के लिये तैयार हो गया। जब बिलकुल काटने का

डाक्टर ने इस विचित्र रोग के बारे मे अपने कई साथी डाक्टरो से बात-चीत की। सबने भिन्न-भिन्न सम्मतियाँ दीं, पर किसी ने भी सन्तोषजनक सम्मति नही दी।

एक महीना बीत गया और वह रोगी न लौटा। कुछ सप्ताह और बीतने पर, रोगी के बदले, उसके पास से एक पत्र आया। डाक्टर ने प्रसन्न होकर पत्र खोला। वे समझ रहे थे कि दर्द फिर न लौटा होगा। पत्र इस प्रकार था :—

"प्रिय डाक्टर साहब,

मैं अपने कष्ट के कारण के बारे मे आपको सन्देह मे नहीं रखना चाहता। और न इसके रहस्य को अपने साथ कब्र मे, या शायद और कहीं, ही ले जाने की मेरी इच्छा है। मैं अपने भयानक रोग का इतिहास आपको सुनाना चाहता हूँ। अब तक यह तीन बार लौट चुका है और अब मै इससे छुटकारा पाना चाहता हूँ। इस जगह पर अन्दर ही अन्दर जो आग जल रही है, उसकी ज्वालाओं को दबाने के लिये एक जलता हुआ कोयला ऊपर रख कर मैं यह पत्र लिख सका हूँ।

"छः महीने पहले मैं एक बहुत सुखी मनुष्य था। मैं सम्पन्न था और सन्तुष्ट था। २५ वर्ष की आयु मे जो वस्तुएँ भोगी जा सकती हैं, उन सबका आनन्द मैं उठाता था। आज से एक वर्ष पहले मैंने विवाह किया था। यह विवाह प्रेम का परिणाम था। मेरी स्त्री एक अत्यन्त सुन्दर, सुशिक्षित और सरल हृदय नवयुवती थी। मेरी जागीर से थोड़ी ही दूर पर एक रानी रहती थी, उन्हीं के साथ वह रही थी। वह मुझसे बहुत प्रेम करती थी और उसका हृदय कृतज्ञता से भरा हुआ था। छ: महीने तक हमारे दिन बडे आनन्द से कटे, प्रतिदिन सुख की वृद्धि ही होती गई। वह कभी-कभी अपनी मालकिन रानी के पास जाती थी, पर दो-चार घंटे से ज्यादा कभी वहाँ न ठहरती। जब

और आज भी उसने उसी जगह पर, उसी तरह के तेज दर्द की शिकायत की जैसी ऑपरेशन से पहले की थी।

उसका चेहरा बिलकुल बेजान दिखाई दे रहा था। उसके माथे पर पसीना आ रहा था। आते ही वह आराम कुर्सी पर गिर पड़ा और बिना कुछ कहे हुये अपना दाहिना हाथ डाक्टर की ओर बढ़ा दिया।

"अरे! क्या हुआ?"

उसने कराहते हुए कहा, "आपने पूरी गहराई तक नहीं काटा। दर्द फिर से होने लगा है, पहले से भी ज्यादा जोर से। मैं मरा जा रहा हूँ। मैं आपको फिर से कष्ट देना नहीं चाहता था, इसलिये इसे सहता रहा, पर अब नही सहा जाता। आपको फिर ऑपरेशन करना पडेगा।"

डाक्टर ने उस जगह की परीक्षा की। घाव बिलकुल भर गया था और उस पर नई खाल आ गई थी। एक भी नस गड़बड़ नहीं थी, नब्ज भी ठीक चल रही थी। उसे बुखार बिलकुल नही था, फिर भी वह सिर से पैर तक काँप रहा था।

"मैंने आज तक ऐसी कोई बात न देखी, न सुनी," डाक्टर ने कहा।

दुबारा ऑपरेशन करने के सिवाय और कुछ उपाय ही नही था। सब कुछ ठीक उसी तरह हुआ जैसे पहले हुआ था। दर्द बन्द हो गया, और यद्यपि रोगी को बहुत आराम मिला, पर इस बार वह हँस न सका। डाक्टर को धन्यवाद देते समय भी उसके चेहरे पर शोक और निराशा का भाव था।

विदा होते समय वह बोला, "महीने भर बाद अगर मैं फिर लौट आऊँ तो आपको कुछ आश्चर्य न करना चाहिये।"

"ऐसी बातें मत सोचिये।"

उसने दृढ़ता से कहा, "यह बात उतनी ही निश्चित है, जितना ईश्वर का स्वर्ग मे होना। अच्छा, विदा। फिर मिलूँगा।"

विवाह के पूर्व लिखे गये होंगे। पर किसी अज्ञात शक्ति ने मुझे प्रेरणा की। क्या पता—यह पत्र विवाह के बाद के हो ? मैंने फीता खोल डाला और एक के बाद दूसरा पत्र पढ़ने लगा।'

"मेरे जीवन का वह सबसे दारुण समय था।

"उन पत्रों में मैंने क्या, देखा ? घोर कपट, धोखा, शैतानी, जैसी आज तक किसी पुरुष के साथ न की गई होगी। वे पत्र मेरे एक घनिष्ठ मित्र के लिखे हुए थे। और वे किस टोन में लिखे गये थे !

"प्रत्येक पक्ति से गहरी घनिष्टता, उत्कट आकाक्षा, सुकुमार प्रेम छलका पडता था। बीच-बीच मे इन बातों को गुप्त रखने की प्रार्थना थी। कही-कहीं मूर्ख पतियों का मजाक बनाया गया था ! कही यह बताया गया था कि पति को कैसे उल्लू बना कर अँधेरे मे रखना चाहिये। प्रत्येक पत्र हमारे विवाह के बाद का लिखा हुआ था। और मैं समझता रहा था कि मैं सुखी हूँ। मैं अपने उस समय के भावों का वर्णन नही करना चाहता। मैंने यह विष जी भर कर पिया। फिर मैंने पत्रो को सॅभाल कर जैसे का तैसा रख दिया, और दराज मे फिर ताला लगा दिया।

"मैं जानता था कि यदि मैं रानी के महल मे नहीं जाऊँगा तो मेरी पत्नी शाम को अवश्य लौट आयेगी। ठीक यही हुआ भी। गाडी रुकते ही वह हर्ष से कूदती हुई नीचे उतरी और ड्योढ़ी मे ही प्रेमभरी मुस्कान के साथ मुझसे मिली। मैंने ऐसा भाव रक्खा मानो कुछ हुआ ही नहीं हो।

"हम बात-चीत करते रहे, साथ-साथ खाते-पीते रहे और अन्त मे नित्य की तरह अपने-अपने कमरो मे सोने चले गये। इस समय तक मैंने जो कुछ करने का विचार कर रक्खा था उसे एक उन्मत्त की तरह बिना हिचकिचाहट के कर डालने का निश्चय किया। आधी रात के समय उसके कमरे मे घुस कर उसके सुन्दर, सरल मुख की ओर

मैं शहर को जाता, तो वह मुझसे मिलने के लिये मीलों तक चली आती। मेरे प्रति उसका इतना प्रेम उसकी सहेलियों को अच्छा नहीं लगता था। वह यदि कभी स्वप्न मे भी पर-पुरुष को देख लेती तो इसे पाप समझती। वह एक सुन्दर और सरल, निष्कपट बालिका थी।

"मैं नही कह सकता, क्या बात ऐसी हुई, जिससे मैं समझने लगा कि यह सब बहाना, छल-कपट था। मनुष्य जाति ऐसी मूर्ख होती है कि बडे से बडे सुख के बीच में दुःख की खोज करने लगती है।

"उसकी एक सीने-पिरोने की छोटी-सी मेज थी, जिसके ड्राअर (दराज) मे वह हमेशा ताला लगाये रखती थी। यह बात मुझे बहुत बुरी लगने लगी। मैंने देखा कि वह दराज को कभी ताला बिना लगाये नहीं छोडती थी और उसकी ताली कभी वहाँ नहीं रखती थी। इतनी सावधानी मे छिपाने की कौन-सी चीज उसके पास है ? मैं ईर्ष्या से पागल हो उठा। मुझे उसकी सरल आँखों पर, चुम्बनो पर और प्रेमालिङ्गनों पर विश्वास न आया। शायद यह सब मक्कारी, कपट, धोखा हो ?

"एक दिन रानी साहिबा हमारे घर आईं और उसे एक दिन अपने महल मे रहने के लिये हठ-पूर्वक अपने साथ ले गईं। मैंने भी उनसे वायदा कर लिया कि दोपहर बाद आऊँगा।

"उन लोगो की गाडी फाटक से बाहर मुश्किल से पहुँची होगी कि मैं उस दराज को खोलने की कोशिश करने लगा। अन्त मे मेरी तालियो में से एक उस ताले मे लग गई। दराज खुल गया। रेशमी रूमाल की कई तहो में लपेटा हुआ एक चिट्ठियों का बडल मैंने उसमे से ढूँढ निकाला। एक बार देखने भर से कोई भी समझ सकता था कि वे प्रेम-पत्र थे। एक लाल रग के फीते से वे बँधे हुये थे।

"मैंने इस बात का भी विचार नही किया कि इस प्रकार चोरी से अपनी पत्नी के गुप्त पत्रों का पढ़ना अनुचित है, जो शायद हमारे

ध्यान देकर उनकी बातें सुनीं ही, क्योंकि मुझे सान्त्वना की रत्ती भर भी आवश्यकता नहीं थी। फिर उन्होंने बड़ी घनिष्ठता से मेरा हाथ पकड़ कर कहा, 'मैं अपना एक रहस्य आपको बताना चाहती हूँ। मैंने आपकी पत्नी के पास एक पत्रों का बंडल रख दिया था। उनमें कुछ ऐसी बातें थीं जिनके कारण मैं उन्हे अपने पास नहीं रख सकती थी। क्या आप कृपा कर वे पत्र मुझे वापस कर देंगे।'

"मेरा रक्त मानो जमने लगा, पर मैंने बिना अशान्त हुये उनसे पूछा कि उन पत्रों में क्या था। यह प्रश्न सुन कर वे घबरा गईं और बोलीं, 'आपकी पत्नी की बराबर ईमानदार स्त्री मैंने नहीं देखी। उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह उन पत्रों को कभी खोल कर भी न देखेगी।'

" 'उन पत्रों को वह कहाँ रखती थी ?'

" 'अपनी मेज की दराज मे ताला लगा कर। वे एक लाल फीते में बँधे हुये हैं। आप आसानी से पहचान सकते हैं। कुल तीस हैं।'

"मैं उन्हे मेज के पास ले गया और पत्रों का बंडल उन्हे दिखा कर पूछा, 'क्या यही वे पत्र हैं ?' उन्होंने उत्सुकता से उन पत्रों को ले लिया। मैंने इस डर से अपनी आँखें ऊपर नही उठाई कि उन्हे कहीं कुछ सन्देह न होने लगे। थोड़ी देर मे वे चली गईं।

"इसके ठीक एक सप्ताह बाद मेरे हाथ मे ठीक उसी जगह पर जोर का दर्द होने लगा, जहाँ उस भयानक रात को खून की बूँद गिरी थी। इसके बाद जो कुछ हुआ, आप जानते ही हैं। मैं जानता हूँ कि यह दर्द और कुछ नही, मेरे मन का भ्रम है, पर मैं इससे अपना पीछा नहीं छुड़ा सकता। यह उस निर्दयता और जल्दबाजी का दण्ड मुझे मिल रहा है, जिसके कारण मैंने उस सुन्दर, भोली बालिका की हत्या कर डाली। मैं इससे बचने का अब कोई प्रयत्न नहीं करूँगा। मैं उससे मिलने जा रहा हूँ और उससे क्षमा पाने का प्रयत्न करूँगा। निश्चय ही वह मुझे क्षमा कर देगी। जैसे वह यहाँ मुझसे प्रेम करती थी, वैसे ही वहाँ भी करेगी। डाक्टर साहब, आपने जो कुछ मेरे लिये किया है, उसके लिये धन्यवाद।"

देखते-देखते मैंने मन ही मन कहा, ईश्वर पाप को ऐसा सुन्दर रूप देकर मनुष्यो को कैसे धोखे मे डाल देता है। ईर्ष्या के विष ने रग-रग मे घुस कर मेरी आत्मा पर अपना प्रभाव जमा लिया था। मैंने चुपचाप अपना दाहिना हाथ उसकी गर्दन पर रक्खा और अपनी पूरी शक्ति लगा कर उसे दबाया। क्षण भर के लिये उसने अपनी आँखे खोलीं, और मेरी ओर एक बार विस्मय से देख कर फिर बन्द कर ली। उसका शरीर निर्जीव हो गया। उसने अपने प्राण बचाने का जरा भी प्रयत्न नही किया और ऐसी शान्ति से मर गई मानो वह स्वप्न देख रही हो। प्राण लेने पर भी वह मुझसे नाराज नही हुई। उसके ओठो मे से खून की एक बूंद निकली और मेरे हाथ पर गिर पडी—आप जानते ही हैं, किस जगह पर। मैंने उस बूँद को सवेरे ही देखा, तब तक वह सूख गई थी। अन्तिम क्रिया साधारण रूप से कर दी गई। मैं शहर से बहुत दूर गाँव में एक स्वतन्त्र जागीरदार था। किसी ने भी उस मामले की छान-बीन नहीं की। न किसी को कुछ सन्देह हो ही सकता था, क्योंकि वह मेरी पत्नी थी। उसके कोई सम्बन्धी या घनिष्ट आत्मीय भी न थे जो कुछ पूछताछ करते।

"मेरे चित्त मे कोई ग्लानि नही थी। मैंने उसके साथ निर्दयता की थी पर वह उसी योग्य थी। मैंने उससे घृणा नही की। मैं उसे आसानी से भूल सकता था। जैसी शान्ति और तटस्थता से मैंने उसकी हत्या की वैसी कभी किसी ने न की होगी।

"मैं उसका अन्तिम सस्कार करके घर लौटा। उसी समय रानी साहिबा की गाड़ी रुकी। मैं नही चाहता था कि अन्तिम सस्कार मे वे शामिल हो। मैंने उनको देर से सूचना भेजी थी। वे बड़ी परेशान दिखाई देती थी। उसकी आकस्मिक मृत्यु के शोक से वे पागल-सी हो गई थीं। वे मुझे सान्त्वना देने का प्रयत्न कर रही थी। पर ऐसी अजीब तरह से बोल रही थी कि उनकी बाते ही मेरी समझ मे नहीं आती थीं। न मैंने

के कण की तरह बिताये, जो अपने जैसे करोड़ों कणों के बीच समुद्र के किनारे पड़ा रहता है। और जब वायु उसे उठा कर समुद्र के दूसरे किनारे पर ले गई, तो किसी का भी ध्यान इस ओर नहीं गया।

जब वह जीवित था तब गीली भूमि पर उसके पैरों के चिन्ह तक नहीं बने रहते थे; जब वह मर गया तो उसकी कब्र पर लगी हुई छोटी-सी तख्ती को भी हवा ने उखाड़ फेंका, और कब्र खोदने वाले की औरत ने इस तख्ती को कब्र से दूर पड़ा हुआ पा कर इसकी आग से आलू उबाले.. । और अब बोंत्ये की मृत्यु के केवल तीन दिन बाद, कब्र खोदने वाला भी आपको नहीं बता सकता कि वह कहाँ पर गाड़ा गया था।

अगर बोंत्ये की कब्र पर (उस छोटी-सी लकड़ी की तख्ती के बदले) एक पत्थर भी लगा होता, तो शायद भविष्य के किसी पुरातत्वज्ञ के हाथ वह पत्थर लग जाता और चुप रहने वाले बोंत्ये का नाम इस दुनिया मे एक बार फिर सुनने मे आता।

वह एक छाया की तरह था; वह न किसी मानव-हृदय मे अपनी आकृति का प्रतिबिम्ब और न किसी के मन मे अपनी स्मृति का चिन्ह छोड़ गया।

न उसने कोई जायदाद छोड़ी, न कोई वारिस; जीवन मे वह अकेला रहा था, अकेला ही मौत मे भी!

दुनिया मे अगर इतना शोर न होता रहता, तो शायद कभी किसी को सुनाई दे जाता कि भारी बोझ के कारण बोंत्ये की हड्डियाँ कैसी चटख रही हैं। दुनिया के लोग अपने-अपने कामो मे इतनी बुरी तरह से न फँसे रहते, तो शायद किसी को यह देखने के लिये समय मिल जाता कि बोंत्ये (जो आखिर एक इसान था) किस दिशा मे इधर-उधर घूमता फिरता है—उसकी आँखों की ज्योति बुझ गई है, उसके गाल भयानक ढंग से अन्दर धँस गये हैं, और कधो पर कोई बोझा रक्खा हुआ न होने पर भी, उसका सिर जमीन की ओर झुका हुआ

यिद्दिश

श्रौनी बोंत्ये

ले०—जे० एल० पेरेत्स

सदा चुप रहने वाले बोंत्ये की मृत्यु का इस पृथ्वी के लोगों पर कुछ भी असर नहीं हुआ। किसी को भी पता नहीं था कि बोंत्ये कौन था, कैसे रहता था और कैसे मर गया। क्या उसका हृदय फट गया था? या उसकी शक्ति ने जवाब दे दिया था? या वह किसी भारी बोझ के कारण ढेर हो गया था? ..कौन जाने? हो सकता है कि वास्तव मे वह भूखों ही मर गया हो!

गाड़ी का एक घोड़ा भी मर कर गिर पड़ा होता, तो लोगों ने उसकी ओर अधिक ध्यान दिया होता; अखबारों में यह खबर छपती; कौतूहल के प्रेमी सैकड़ों आदमी, घोडे की लाश देखने और घटना-स्थल का निरीक्षण करने, इधर-उधर से दौडे आये होते...

पर यदि दुनिया मे इतने ही करोड़ घोड़े भी होते, जितने आदमी हैं, तो गाडी के घोड़े को यह प्रतिष्ठा नही मिलती!

बोंत्ये ने चुप रह कर ही अपना जीवन बिताया था, और चुपचाप ही वह मर भी गया। एक छाया की तरह वह पृथ्वी पर से होता हुआ चला गया।

उसके जन्मोत्सव के अवसर पर न किसी ने शराब पी, न गिलास खडकाये। गिर्जाघर मे दीक्षा लेने के अवसर पर उसने एक सुन्दर व्याख्यान भी नहीं दिया, (जैसे और सब लड़के दिया करते हैं)। उसने अपने जीवन के सारे दिन उस तुच्छ, मैले रग के, छोटे से बालू

पास दौडे आये । उनके पखों की मर्मर ध्वनि, स्लीपरों की 'छुनछुन' और उनके सुन्दर, गुलाबी ओठों की हर्ष भरी हँसी सारे स्वर्ग में प्रतिध्व-नित होती हुई ईश्वर के सिंहासन तक पंहुँच गई : ईश्वर को भी मौनी बोंत्ये के आने का पता लग गया।

देवताओं के पिता एब्राहम स्वर्ग के द्वार पर बैठे। उन्होने अपना सीधा हाथ बढा कर बोंत्ये का हार्दिक स्वागत किया और उनका झुर्री-दार चेहरा कोमल, मधुर मुस्कान से खिल उठा।

और स्वर्ग मे यह घबराहट का शब्द कैसा है ?

यह बढ़िया सोने की बनी हुई आरामकुर्सी के पहियों की आवाज़ है, जिसे दो देवदूत, बोंत्ये के बैठने के लिये, खीच कर स्वर्ग मे ला रहे हैं।

और यह बिजली की सी चमक कहाँ से आई ?

यह अमूल्य रत्नों से जडे हुए सोने के मुकुट की चमक है। यह सब बोंत्ये के ही लिये है !

स्वर्ग मे रहने वाली साधु-सन्तों की आत्माएँ यह समारोह देख कर ईर्ष्या के स्वर में पूछने लगीं, "हैं ! प्रभु के दरबार मे इसके पाप-पुण्यों का विचार होने के पहले ही इसका ऐसा सम्मान ?"

देवदूतो ने उत्तर दिया, "इसके पाप-पुण्यों का विचार तो केवल रीति निभाने के लिये किया जायगा। स्वर्ग का 'सरकारी वकील' भी मौनी बोंत्ये के विरुद्ध कोई बात नही कह पायेगा ! इसका विचार होने मे पाँच मिनट से अधिक नहीं लगेंगे।"

क्योंकि यह और कोई नहीं, स्वय मौनी बोंत्ये है !

× × ×

जब छोटे-छोटे देवदूतों ने बोंत्ये की आत्मा को हवा मे से पकड़ उसके सामने एक मधुर राग बजाया, जब पिता एब्राहम ने उससे एक पुराने मित्र की तरह हाथ मिलाया; जब उसने सुना कि

है, मानो जीवन मे ही वह अपनी कब्र खोज रहा है ! दुनिया मे आदमियों की गिनती अगर उतनी ही थोडी होती, जितनी गाड़ी के घोड़ों की, तो, शायद कोई कभी पूछ लेता, "बोत्ये का क्या हुआ ?"

जब बोत्ये बीमार पडा और उसे अस्पताल मे ले जाया गया, तो मकान के निचले भाग का वह कोना, जहाँ वह पडा रहता था, खाली नहीं रहा, क्योंकि उसी के जैसे एक दर्जन आदमी उस कोने पर ताक लगाये बैठे थे और उन्होंने आपस मे नीलाम करके सबसे ऊँची बोली बोलने वाले को वह कोना दे दिया। (मर जाने के बाद) उसे अस्पताल की चारपाई से मुर्दाघाट मे ले जाया गया, पर इससे पहले ही बीस दरिद्र लोग उसकी जगह के खाली होने की राह देख रहे थे। जब वह मुर्दाघर से निकला, तो बीस आदमियों को, जो एक दीवार के गिरने से मर गये थे, वहाँ लाया गया। कौन जानता है कि कितने दिनो तक वह अपनी कब्र मे शान्ति से सो सकेगा ? कौन जानता है कि कितने आदमी अभी से उस थोडी-सी भूमि के खाली होने की राह देख रहे हैं ?

वह चुपचाप ससार मे आया था, चुपचाप रहा, चुपचाप ही मर गया, और इससे भी अधिक चुपचाप उसे दफना दिया गया।

पर दूसरे लोक मे ऐसा नहीं हुआ ! स्वर्ग में बोत्ये की मृत्यु से एक सनसनी मच गई !

मसीहा के बिगुल की आवाज सातों स्वर्गो मे गूँजने लगी : "सदा चुप रहने वाला बोत्ये मर गया है !" सबसे बडे देवदूत, सबसे बडे परों वाले, इधर-उधर उड़ कर घोषणा करते फिरते थे : "बोत्ये को परम-प्रभु के दरबार मे बुलाया गया है !!" सारा स्वर्ग इसी हर्षध्वनि से काँप रहा है : "सदा चुप रहने वाला बोत्ये ! मौनी बोत्ये की जय !"

उज्ज्वल आँखो और सुनहले परो वाले, अपने चचल पैरों मे चाँदी के 'स्लीपर' पहने हुये, कोमल देवकुमार प्रसन्न होकर बोंत्ये के

डर के मारे वह हक्का-बक्का हो गया था।

उसके डर की मात्रा तब और भी बढ़ गई, जब उसकी दृष्टि अचानक न्याय-भवन के फ़र्श पर पड़ी। फर्श स्वच्छ सङ्गमर्मर और कीमती पत्थरों का था। 'मेरे पैरों के नीचे ऐसा फ़र्श!' वह डर से बेजान हो गया, 'ये लोग न जाने किस धनी, सन्त या महात्मा के धोखे मे मेरा इतना आदर कर रहे हैं? ..उस असली व्यक्ति के आने पर जब इन्हे अपनी भूल का पता लगेगा, तब मेरा क्या हाल होगा!'

इसी डर से वह ऐसा बुद्धिशून्य हो गया कि न्यायाधीश ने जब पुकारा, "मौनी बोंत्ये का मुक़दमा पेश किया जाय!" तो उसने सुना ही नहीं। उसके बारे में जो कागज-पत्र थे, उन्हे बोंत्ये के वकील को देकर न्यायाधीश ने कहा, "इसे पढ़िये, पर संक्षेप मे ही!"

बोंत्ये को पूरा भवन घूमता हुआ दिखाई देने लगा। उसके कानों में 'धम्-धम्' की आवाज हो रही थी। फिर भी वकील के ओठों से बेला के मधुर संगीत की तरह जो शब्द-लहरी बह रही थी, वह धीरे-धीरे उसे स्पष्ट—और स्पष्ट—सुनाई पड़ती जाती थी।

वकील कह रहा था, "यह नाम—'मौनी'—बोंत्ये के लिये ऐसा ही 'फिट' बैठता है जैसी चतुर दर्जी द्वारा बनाई हुई अचकन एक सुन्दर शरीर पर।"

बोंत्ये सोचने लगा, 'यह क्या कह रहा है?'

इतने मे न्यायाधीश ने वकील को टोक कर कहा, "कृपया उपमायें मत दीजिये!"

वकील आगे कहने लगा, "उसने अपने सारे जीवन मे ईश्वर के विरुद्ध या मनुष्य के विरुद्ध शिकायत का एक शब्द भी कभी नहीं कहा! उसकी आँखों में घृणा की चिनगारी कभी नहीं चमकी; न कभी उसने अपनी आँखे स्वार्थ भरी प्रार्थना के लिये स्वर्ग की ओर उठाई।"

उसके लिये स्वर्ग मे एक सिंहासन तैयार किया जा रहा है और एक मुकुट लाया जा रहा है; जब उसे पता चला कि प्रभु के दरबार मे उसके विरुद्ध एक भी शब्द नहीं कहा जायगा,—जब बोंत्ये ने यह सब देखा और सुना, तो भय और आतङ्क से उसकी बोली बन्द हो गई, वह जैसे पृथ्वी पर रहता था, उसी तरह मौन हो गया! उसका दिल बैठने लगा। उसे दृढ विश्वास था कि यह सब या तो स्वप्न है या भूल से किया जा रहा है।

इन दोनों बातों का अनुभव उसे अपने जीवन मे पहले भी कई बार हो चुका था। जब वह नीचे पृथ्वी पर था, तो न जाने कितनी बार उसने स्वप्नों मे देखा था कि ढेर का ढेर रुपया जमीन पर बिखरा पड़ा है, जिसे वह बटोर रहा है; और जागने पर अपने आपको पहले से भी ज्यादा ग़रीब पाया था। कई बार किसी ने, भूल से, उसकी ओर देख कर मुस्करा दिया था और दो प्रेम के शब्द बोल दिये थे, पर भूल का पता लग जाने पर वह व्यक्ति तुरन्त ही घृणा से मुँह फेर कर चला गया था...

इसीलिये बोंत्ये ने आज भी सोचा, 'मेरा भाग्य ही ऐसा है!'

वह सिर झुकाये और आँखे मूँदे चुपचाप खडा था। वह डर रहा था कि आँखे खोलने पर स्वप्न टूट जायगा और जागने पर उसे देखने को मिलेगा कि वह एक गुफा मे छिपकलियों और साँपो के बीच में पड़ा हुआ है। वह एक भी अक्षर बोलते हुए, पलको को जरा-सा भी ऊपर उठाते हुए इसलिये डर रहा था कि कोई उसे पहचान न ले और वह नरक मे न फेंक दिया जाय।

वह काँप रहा था, और न तो देवदूतो द्वारा की गई अपनी प्रशसा सुन रहा था, न अपने सत्कार मे किया गया हर्षोत्सव देख रहा था। पिता एब्राहम के हार्दिक स्वागत का भी उसने जवाब नहीं दिया और प्रभु के सामने पहुँचने पर वह उन्हे प्रणाम करना भी भूल गया।

उस बेचारे के फटे-पुराने कपड़ों मे से शरीर की चोटो के काले-नीले दाग सब जगह दिखाई पड़ते थे ..। जाड़ो मे, भयानक सर्दी के दिनों में बोंत्ये को नगे पैर जगल मे जाकर सौतेली माँ के लिये लकड़ी काटनी पड़ती थी—अपने छोटे छोटे, निर्बल हाथों से भारी-भारी लकड़ी के लट्ठे, सो भी बिना धार की, टूटी हुई कुल्हाडी से...। कई बार उसके हाथों मे मोच आ गई। कई बार उसके पैर ठड से जम गये, फिर भी वह चुप ही रहा। अपने पिता—"

"शराबी!" सरकारी वकील ने हँस कर कहा। बोंत्ये की हड्डियाँ तक डर से 'सुन्न' पड गई।

"अपने पिता से भी उसने कभी शिकायत नहीं की!" बोंत्ये के वकील ने बात पूरी की।

वह आगे कहने लगा, "और बोंत्ये सदा अकेला ही रहा—न कोई साथी, न मित्र, न स्कूल......। कभी कोई नया कपड़ा नहीं, कभी क्षण भर के लिये स्वतन्त्रता नहीं—"

"असली बात कहिये!" न्यायाधीश ने एक बार फिर चिल्ला कर कहा।

"बाद मे भी, जब एक रात को उसके पिता ने नशे की झोंक में उसे बाल पकड़ कर घर के बाहर तूफान मे फेंक दिया, तब भी वह चुप ही रहा! वह चुपचाप बर्फ पर से उठा और जिधर को पैर बढ़े, उधर भाग गया...। यह सब होते हुए भी वह चुप ही रहा...। भूख से अत्यन्त व्याकुल होने पर भी उसने मुँह से कभी कुछ न कह कर आँखों से ही भोजन के लिये प्रार्थना की।

"अन्त में एक रात को वह एक बडे शहर मे पहुँचा। अप्रैल के दिन थे—वर्षा लगातार हो रही थी और हवा जोर से चल रही थी। उस शहर मे बोंत्ये इस तरह विलीन हो गया, जैसे समुद्र में एक पानी की बूँद—फिर भी उस रात को वह जेल मे सोया...। पर वह चुप ही

बोंत्ये की समझ में इस बार भी कुछ नहीं आया। न्यायाधीश ने कठोर स्वर में वकील को फिर टोका, "कृपया कविता की भाषा मे मत बोलिये !"

वकील ने फिर शुरू किया, "जॉब (एक प्रसिद्ध ईश्वर-भक्त) पर इतना दुःख नही पड़ा था, फिर भी वह, बोंत्ये की तरह, अन्त तक अटल नहीं रह सका—"

न्यायाधीश अप्रसन्न होकर चिल्ला पड़े, "मैं वास्तविक बातें सुनना चाहता हूँ ! केवल वास्तविक बाते !"

"जन्म के आठवे दिन बोंत्ये की 'सुन्नत' हुई—"

"ऐसी साधारण बाते कहना बिल्कुल व्यर्थ है।" न्यायाधीश फिर बोल उठे।

"इस अवसर पर जो 'सर्जन' बुलाया गया था, वह 'नीम-हकीम' था और ख़ून का बहना नहीं रोक सका—"

"कहते जाइये !"

"फिर भी बोंत्ये चुप रहा। तेरह वर्ष की अवस्था में माँ की मृत्यु हो जाने पर जब उसे एक सौतेली माँ से पाला पड़ा...वह सौतेली 'माँ' नहीं थी, वह एक नागिन, एक डायन—चुड़ैल थी..."

बोंत्ये सोचने लगा, 'क्या सचमुच ही मेरे बारे में बाते हो रही हैं ?'

न्यायाधीश ने फिर वकील को डाँटा, "दूसरे लोगों की निन्दा मत कीजिये !"

"सौतेली माँ बोंत्ये को टुकड़े-टुकड़े के लिये तरसाती थी—उसे सड़ी-गली रोटियाँ और गोश्त के नाम पर सिर्फ हड्डियाँ देती थी-अपने आप बढ़िया मलाईदार काफी पीती थी—"

न्यायाधीश चिल्ला उठे—"असली बात पर आइये !"

"वह बोंत्ये को अपने तेज नाखूनों से ऐसा नोच डालती थी कि

बोंत्ये सोचने लगा, 'सचमुच ये लोग मेरे ही बारे मे बातें कर रहे हैं !"

× × ×

एक घूँट पानी पीकर वकील फिर कहने लगा, "एक बार बोंत्ये के जीवन में एक परिवर्तन हुआ...रबड के पहियों वाली एक बग्घी बड़ी तेजी से उसके पास से निकल गई ..घोडे बिगड़ गये थे...कोचवान बहुत दूर पीछे सडक पर पड़ा हुआ था—उसका सिर फट गया था...डर से बेतहाशा भागते हुए घोड़ों के मुँह से फेन बह रहा था, उनके खुरों से चिनगारियाँ निकल रही थीं, उनकी आँखे अँधेरे में जलते हुए कोयलों की तरह चमक रही थी—और बग्घी मे, डर से अधमरा, एक आदमी बैठा था।

"बोंत्ये ने बिगड़े हुये घोड़ों को रोक लिया।

"इस तरह से बोंत्ये ने जिसे बचाया था, वह एक भला और दयालु आदमी था; बोंत्ये के उपकार को वह नहीं भूला।

"उसने बोंत्ये को अपने मरे हुये कोचवान की जगह दे दी। बोंत्ये एक कोचवान हो गया! इतना ही नहीं, उस भले आदमी ने बोंत्ये के लिये एक पत्नी का भी प्रबन्ध कर दिया!...फिर भी बोंत्ये चुप रहा!"

'उनका मतलब मुझसे ही है, मुझसे ही है!' बोंत्ये आप ही आप बोला। उसे विश्वास होता जा रहा था कि स्वर्गदूतो ने उसे पहचानने में कोई भूल नहीं की है, फिर भी उसका साहस न होता था कि आँख उठा कर न्यायाधीश की ओर देखे।

"जब उसका मालिक दिवालिया हो गया और बोंत्ये की तनख्वाह न दे सका, तो भी वह चुप रहा . जब उसकी पत्नी दुध-मुँहे बच्चे को छोड़ कर किसी के साथ भाग गई तब भी वह चुप रहा...

रहा; उसने यह तक नहीं पूछा कि यह सब क्यों और किसलिये हो रहा है। जेल से निकलने के बाद वह कठिन से कठिन काम की खोज में लगा। फिर भी वह मौन ही रहा!

"कोई काम खोजना काम करने से भी अधिक कठिन था—फिर भी बोंत्ये चुप रहा।

"ठंडे पसीने से तर, भारी से भारी बोझ के नीचे दबा हुआ, भूख की पीड़ा से छटपटाता हुआ भी वह चुप ही रहा!

"अजनबी लोगों ने उस पर कीचड़ फेंकी, उस पर थूका। सिर पर भारी बोझा लादे हुए उसे लोगों ने गलियों में से ऐसी सड़कों पर खदेड़ा, जहाँ गाड़ियों, ठेलों और बग्घियों का ताँता लगा हुआ था; बोंत्ये मरते-मरते बचा, पर वह चुप रहा!

"इस बात का हिसाब बोंत्ये ने कभी नहीं लगाया कि एक पेनी के लिये उसे कितने सेर का बोझा ढोना पड़ता है और कितनी बार वह ठोकर खाकर गिरता है, कितनी बार उसे मजदूरी पाने के लिये अपनी आत्मा तक को निकाल कर रख देने की नौबत आ जाती है। न उसने कभी अपने दुर्भाग्य की दूसरों के सौभाग्य से तुलना ही की। वह सदा चुप रहा!

"उसने अपनी तनख्वाह माँगने के लिये भी कभी मुँह नहीं खोला। वह अपने मालिक के दरवाजे पर एक भिखारी की तरह जाकर खड़ा हो जाता था और उस समय उसकी आँखों में ऐसा भाव रहता था, जैसा रोटी माँगने के समय एक कुत्ते की आँखों में रहता है। उसका मालिक कहता, 'जाओ, फिर किसी दिन आना!' और बोंत्ये एक मौन छाया की तरह गुम हो जाता, और फिर किसी दिन आकर पहले से भी अधिक चुप्पी के साथ अपनी तनख्वाह माँगता!

"लोगों ने बोंत्ये की उचित मजदूरी उसे नहीं दी। किसी-किसी ने उसे नकली सिक्के दिये। पर वह चुप रहा...वह सदा ही चुप रहा!"

"सज्जनो !" सरकारी वकील ने तेज आवाज और बड़प्पन के ढंग से कहना प्रारम्भ किया।

पर इतना ही कह कर रुक गया।

"सज्जनो !" उसने फिर कहना शुरू किया, इस बार पहले से कुछ कोमल स्वर मे। पर वह फिर रुक गया।

अन्त मे उसी गले से मक्खन जैसी कोमल आवाज निकली :

"सज्जनो ! बोंत्ये चुप रहा है। मैं भी चुप ही रहूँगा !"

थोड़ी देर तक अदालत मे सन्नाटा रहा, फिर एक दूसरी, कोमल, काँपती हुई आवाज सुनाई पडी :

"बोंत्ये, मेरे बच्चे बोंत्ये !"

ये शब्द बोंत्ये के हृदय में वीणा के मधुर स्वरों की तरह गूँज गये।

"मेरे प्यारे बेटे !"

बोंत्ये का हृदय पिघल कर आँसुओं के रूप मे वह चला...अब वह प्रसन्नता से अपनी आँखे खोल सकता था, पर आँखों मे आँसू भरे हुये थे . इतनी मधुरता से, इतना दिल भर कर, वह आज तक कभी नहीं रोया था।

"मेरे बेटे, मेरे बोंत्ये !"

जब से उसकी माँ मरी थी, तब से आज तक ऐसा स्वर और ऐसे शब्द उसे एक बार भी सुनने को नही मिले थे।

न्यायाधीश कहने लगे, "मेरे बेटे ! तुमने जीवन भर दुःख सहे हैं—और चुप रह कर। तुम्हारे सारे शरीर मे कोई अग, कोई हड्डी ऐसी नहीं बची है, जिससे खून न निकला हो फिर भी तुम सदा चुप रहे हो...

"नीचे की दुनिया में लोग इन बातों को नहीं समझे। शायद तुम स्वय ही नही जानते थे कि तुम करुण ढग से पुकार सकते थे, और तुम्हारी एक ही पुकार से स्वर्ग की दीवारे तक हिलने लगतीं। तुम्हे अपनी गुप्त शक्ति का पता नहीं था...

"वह तब भी चुप रहा, जब, पन्द्रह वर्ष बाद, उस बच्चे ने बड़ा और समर्थ होने पर बोंत्ये को धक्के देकर घर से निकाल दिया .."

'उनका मतलब मुझसे ही है, मुझसे ही है !' बोंत्ये प्रसन्नता मे बोला।

वकील कोमल और दुःख भरे स्वर में फिर कहने लगा, "और वह तब भी चुप रहा, जब उसके मालिक ने और सबका हिसाब चुका दिया, पर बोंत्ये की तनख्वाह की एक पाई भी नहीं दी...और तब भी, जब उसके मालिक की वही रबड़ की पहियों वाली बग्घी, जिसमें बिगड़े हुये घोड़े जुते थे, उसके ऊपर से निकल गई...

"वह बिल्कुल चुप ही रहा ! उसने पुलिस मे भी जाकर नहीं कहा कि किसने उसे लँगड़ा कर दिया है .

"वह अस्पताल में जाकर भी चुप रहा, जहाँ रोने-चिल्लाने के लिये किसी को मना नहीं किया जाता।

"वह तब भी चुप रहा, जब डाक्टर पन्द्रह सेंट की फीस लिये बिना उसका इलाज करने को तैयार नहीं हुआ और अस्पताल के नौकर ने, पाँच सेंट पाये बिना, उसकी गन्दी कमीज नहीं बदली !

"घोर कष्ट के अन्तिम क्षणों में भी बोंत्ये चुप रहा, और जब मृत्यु उस पर आक्रमण करने लगी, तब भी वह चुप रहा...

"उसने न कभी ईश्वर के विरुद्ध कोई शब्द मुँह से निकाला, न किसी मनुष्य के।......बस, मुझे इतना ही कहना था !"

× × ×

बोंत्ये का अङ्ग-प्रत्यङ्ग फिर काँपने लगा, क्योंकि वह जानता था कि अब सरकारी वकील के बोलने की बारी है। न जाने वह क्या कहेगा ? स्वयं बोंत्ये को भी अपने सारे जीवन का हाल याद नहीं था। एक क्षण में जो हुआ था, उसे दूसरे ही क्षण वह भूल गया था। वकील की बातों से उसे यह सब याद आ गया था...ईश्वर जाने, सरकारी वकील अब उसके किन-किन पापों को खोद निकालेगा ..

अमेरिका

हृदय की आवाज़

लेखक—एडगर एलेन पो

सच है ! मैं घबरा गया था, बहुत डर गया था—और अब भी डरा हुआ हूँ—यह सच है । पर तुम यह क्यो कहते हो कि मैं पागल हूँ ? क्यो ? उस रोग ने मेरी अनुभवशक्ति को तीव्र ही कर दिया था—नष्ट नहीं किया, कुंठित नही किया । सबसे अधिक तो मेरी सुनने की शक्ति तेज हो गई थी । पृथ्वी या स्वर्ग की सभी बाते मुझे सुनाई पड़ती थीं । नरक की भी बहुत-सी बाते मुझे सुनाई पड़ती थी । मुझे पागल क्यों कहते हो ? सुनो और देखो कि कैसी शान्ति से मैं अपनी पूरी कहानी तुम्हे सुनाता हूँ । फिर मुझे पागल न कहना ।

पहले-पहल यह विचार मेरे मन में कैसे आया, यह बताना असम्भव है, लेकिन एक बार मन मे आ जाने के बाद यह विचार रात-दिन मुझे परेशान करने लगा । न तो कोई उद्देश्य था, न किसी तरह का लड़ाई-झगड़ा या क्रोध । मैं उस बुड्ढे से प्रेम करता था । उसने मुझे कभी कोई हानि नहीं पहुँचाई थी । न उसने कभी मेरा अपमान ही किया था । उसके सोने-चाँदी की मुझे तनिक भी इच्छा न थी । शायद उसकी आँख—'हाँ, ठीक यही बात थी ! उसकी एक आँख गिद्ध की तरह थी, पीली-नीली, उस पर था धुँधला-सा जाला । जब कभी वह मेरी ओर ताकता, तो मानो मेरा खून नसों मे जमने लगता । उस बुड्ढे को मार डालने के सिवाय उस आँख से पीछा

"नीचे दुनिया में लोगों ने तुम्हारे मौन के लिये तुम्हे कोई पुरस्कार नहीं दिया, पर वह दुनिया तो है ही धोखे की। यहाँ सत्य के संसार मे, तुम्हे अपना पुरस्कार मिलेगा!

"यहाँ तुम्हारे कर्मो पर विचार नहीं किया जायगा, न तुम्हारी योग्यता का हिसाब लगाया जायगा। यहाँ तुम जो चाहो, ले सकते हो! स्वर्ग मे जो कुछ है, सब तुम्हारा है।"

बोंत्से ने पहली बार अपनी आँखे ऊपर उठाई। चारो ओर के प्रकाश से वह चकाचौंध हो गया। सभी ओर जगमग-जगमग हो रही थी, सभी दिशाओ से प्रताप और तेज की किरणे निकल रही थीं—दीवारों से, बरतनों से, देवदूतो से, अदालत के जजों से! जैसे असख्य सूर्य चमक रहे हो!

उसकी आँखे थक कर आप ही आप नीची हो गई।

"सचमुच?" उसने सन्देह और लज्जा के स्वर मे पूछा।

"बिल्कुल निःसन्देह!" न्यायधीश ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि यह सब तुम्हारा है!...स्वर्ग की प्रत्येक वस्तु पर तुम्हारा अधिकार है! अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी चीज पसन्द करो और ले लो! सब तुम्हारा ही है!"

"सचमुच?" बोंत्से ने एक बार फिर पूछा, पर इस बार पहले से अधिक दृढ़ता के स्वर मे।

"हाँ, हाँ, निश्चय!" सब लोगो ने उसे विश्वास दिलाया।

"यदि ऐसा ही है," बोंत्से ने मुस्करा कर कहा, "तो मैं चाहता हूँ कि मुझे प्रति दिन—प्रत्येक दिन—एक बड़ी-सी, गरमा-गरम मीठी रोटी और ताजा मक्खन मिला करे!"

जजों ने और देवदूतों ने लज्जित हो कर अपनी आँखे नीची कर ली, और सरकारी वकील की हँसी की आवाज से स्वर्ग गूँज उठा।

चीत करता, उससे पूछता कि रात कैसी बीती। इतने पर भी अगर उसे इस बात का शक था कि मैं रोज रात को बारह बजे उसके कमरे में जाता हूँ और छिप कर उसे ताकता हूँ, तो निश्चय ही वह बड़ा गहरा आदमी रहा होगा।

आठवीं रात को उसका दरवाजा खोलते समय मैं बहुत अधिक सावधान था; मेरे हाथ घड़ी की सुइयों से भी ज्यादा धीरे-धीरे चल रहे थे। उस रात से पहिले मुझे कभी यह ध्यान नहीं आया था कि मैं इतना चालाक, इतना सावधान हूँ! मुझे इस बात पर गर्व हो रहा था कि मैं थोड़ा-थोड़ा करके इसका दरवाजा खोल रहा हूँ, और इसे स्वप्न मे भी मेरे गुप्त विचारों या कार्यों का ध्यान नहीं आ सकता! मैं जरा हँस पड़ा, और शायद उसने सुन लिया, क्योंकि वह एकाएक मानो चौंक कर सोते से हिला। तुम समझते होगे कि मैं पीछे लौट आया? नहीं। उसका कमरा एकदम, घोर अँधेरा था, (चोरों के डर से वह खिड़कियों को भी बन्द करके सोता था) और मैं जानता था कि मेरा दरवाजा खोलना उसे दिखाई नहीं पड़ेगा। मैं धीरे-धीरे दरवाजा खोलता गया।

मैंने अपना सिर अन्दर किया और लालटेन खोलने ही को था कि बुड्ढा चौंक कर उठ बैठा और चिल्लाया, "कौन है?"

मैं एकदम चुप रहा। पूरे घंटे भर तक मैंने अपनी एक अँगुली तक नहीं हिलाई—और उस बीच में बुड्ढा भी नहीं लेटा, ज्यों का त्यों बिस्तर पर बैठा रहा।

थोड़ी देर बाद मैंने एक धीमी सी कराहने की आवाज सुनी, और मैं जान गया कि यह मौत के डर की आवाज थी। वह दुःख या शोक का कराहना नहीं था—नहीं!—वह धीमी, दबी हुई आवाज थी जो कि घोर भय से व्याकुल हृदय के अन्तर-तम प्रदेश से निकलती है। मैं इस आवाज को अच्छी तरह पहचानता था। कई बार रात में,

छुडाने का कोई उपाय मेरी समझ में नहीं आया और अन्त में मैंने उसके प्राण ले लेने का निश्चय कर लिया।

अब जरा ध्यान देने की बात है। तुम मुझे पागल समझे बैठे हो! पागल आदमी कुछ नहीं जानता-बूझता। लेकिन तुम देखते तो कि कैसी चतुरता से, सावधानी से, कैसी धोखेबाजी से, मैंने अपना काम किया!

जिस दिन मैंने उस बुड्ढे को मारा, उससे पहले एक सप्ताह भर मैं उसके प्रति ऐसा दयालु हो गया था, जैसा पहले कभी नहीं था। प्रत्येक रात को—आधी रात के समय—मैं धीरे से उसका दरवाजा खोलता—बहुत ही धीरे से! और जब मैं किवाड़ों को इतना खोल लेता कि मेरा सिर अन्दर जा सकता, तब मैं एक चोर-लालटेन को अन्दर ले जाता जिसमे से रोशनी इधर-उधर बिल्कुल ही नहीं फैलती थी। फिर मैं अपना सिर अन्दर करता, धीरे, बहुत धीरे, जिससे कहीं बुड्ढे की नींद न उचट जाय। बिस्तर पर सोये हुये बुड्ढे को मैं देख सकूँ, इतनी दूर तक अपना सिर अन्दर करने मे मुझे एक घंटे से कम न लगता था। यह सब काम मैं ऐसी चालाकी से करता था कि देख कर शायद तुम्हे हँसी आ जाती। और फिर भी तुम मुझे पागल बताते हो! अन्दर जाने के बाद बहुत सावधानी से मैं अपने लालटेन का ढक्कन एक ओर थोड़ा-सा—बहुत ही थोड़ा—खोलता, इतना थोड़ा कि प्रकाश की केवल एक किरण निकल कर उस गिद्ध जैसी आँख पर पडती। बराबर सात रातों तक—ठीक आधी रात के समय—मैंने यह काम किया, पर मुझे उसकी वह आँख सदा बन्द ही मिली। इसीलिये मैं अपना काम पूरा न कर सका, क्योंकि मुझे वह बुड्ढा थोडे ही कुछ हानि पहुँचाता था, मैं तो उस अशुभ आँख से अपना पीछा छुड़ाना चाहता था। प्रतिदिन सवेरा होने पर मैं साहस करके उसके पास जाता और उसका नाम लेकर, उससे घुलमिल कर, बात-

मैं कह चुका हूँ न, कि तुम जिसे पागलपन समझते हो, वह केवल मेरी इन्द्रियो की अनुभव-शक्ति की तीव्रता थी ? थोड़ी ही देर मे मुझे एक धीमी, भद्दी, किन्तु बार-बार होने वाली आवाज सुनाई पड़ी, जैसी रुई मे लपेटी हुई घड़ी मे से निकलती है। इस आवाज को भी मैं अच्छी तरह पहचानता था। यह बुड्ढे के हृदय की धड़कन थी। इससे मेरा क्रोध और भी बढ गया, जैसे ढोल की आवाज से सैनिको का उत्साह बढ़ जाता है।

पर तब भी मैं चुप रहा। मैं साँस तक रोके हुए था। मेरे हाथ की लालटैन जरा भी नहीं हिल रही थी। उसकी किरण बराबर उसी आँख पर पड़ रही थी। पर वह डरावनी हृदय की आवाज बढ़ती ही जा रही थी। प्रतिक्षण वह तीव्र और वेगवान् होती जा रही थी। अवश्य ही बुड्ढे का डर सीमा पर पहुँच चुका था। वह आवाज प्रतिक्षण बढ़ रही थी—सुनते हो ? प्रतिक्षण ! मैं कह चुका हूँ कि मैं जल्दी ही घबरा जाता हूँ। रात्रि के उस मौन प्रहर मे, उस पुराने मकान की डरावनी शून्यता मे, इस अद्भुत आवाज ने मुझे भय से पागल कर दिया। फिर भी कुछ देर तक और मैं बिना हिले-डुले, चुप-चाप खडा रहा। पर वह आवाज और भी बढ़ती गई। और भी ! मानो बुड्ढे का हृदय फटने ही वाला हो। और साथ ही साथ मुझे एक और बात का डर होने लगा, कोई पड़ोसी इस आवाज़ को सुन ले तो ! बुड्ढे का समय आ गया था ! एक चीत्कार के साथ मैंने लालटैन खोल डाली और कूद कर उसके पास पहुँचा। वह चिल्लाया—बस एक ही बार। क्षण भर मे मैंने उसे खींच कर फर्श पर गिरा दिया और भारी बिस्तर उसके ऊपर डाल दिया। इतना काम कर चुकने पर मैं मुस्कराया। कई मिनटों तक घुटी हुई सी आवाज के साथ उसका हृदय धड़कता रहा। पर मुझे अब कोई खटका न था—यह आवाज दीवारों के बाहर नहीं पहुँच सकती थी। अन्त मे आवाज रुक गई। बुड्ढा मर

आधी रात के समय, जब सारा संसार सोया रहता, तब यही आवाज मेरे भी हृदय मे से उठती थी, और इसकी भयानक प्रतिध्वनि से मेरा डर दुगना हो उठता था। मैं इस आवाज को पहचानता था। मैं जानता था कि बुड्ढ पर इस समय क्या बीत रही है। मैं प्रसन्न हो रहा था, पर मुझे बुड्ढे पर दया आ रही थी। शुरू से ही धीमी-सी आहट सुनने के बाद से वह जाग पड़ा था और तब से उसका डर धीरे-धीरे बढ़ता ही गया था। वह अपने आपको बहलाने की कोशिश कर रहा था कि डरने की कोई बात नहीं है, पर वह ऐसा नहीं कर सका। वह मन ही मन कह रहा था, 'कुछ नहीं, सिर्फ हवा है या शायद चूहे दौड़ रहे हैं,' पर वह अपने आपको इस तरह न बहला सका। यह सब व्यर्थ था, क्योंकि आने वाली मौत ने अपनी काली छाया मे बुड्ढे को पहले ही से ढँक लिया था। और यह उसी अदृष्ट काल की उदास छाया का प्रभाव था जिसके कारण बिना सुने और देखे वह अनुभव कर रहा था कि मैं उसके कमरे मे हूँ।

बहुत देर तक प्रतीक्षा करने पर भी जब मैंने उसे लेट जाते हुए नहीं सुना, तो मैंने अपनी चोर-लालटैन को थोड़ा—बहुत थोड़ा—खोलने का विचार किया। बडी सावधानी से मैंने लालटैन खोली और उसमे से केवल एक पतली, धुँधली किरण निकली और ठीक उस 'गिद्ध-आँख' पर पड़ी।

वह आँख खुली हुई थी—पूरी खुली थी। और उसकी तरफ ताकते ही मैं क्रोध से जल उठा। मैं वह आँख साफ-साफ देख रहा था—धुँधले नीले रङ्ग की, जिस पर एक घृणित जाला-सा था। मेरी हड्डियों के अन्दर तक हिस्सा भय और घृणा से जमने लगा। पर मुझे बुड्ढे के शरीर या मुँह का और कोई भाग बिल्कुल नहीं दीख रहा था, क्योंकि किसी अज्ञात प्रेरणा से वह किरण ठीक उस अशुभ आँख पर ही पड़ रही थी।

कहा। अन्त मे मैं उन्हे बुड्ढे के कमरे मे ले गया। मैंने उन्हे 'उसका धन—माल—जेवर सब ज्यों का त्यों रक्खा हुआ दिखाया। उत्साह में भर कर मैं उसी कमरे मे कुर्सियाँ ले आया और उनसे वहीं बैठने को कहा। अपनी पूर्ण सफलता के पागलपन मे मैंने अपनी कुर्सी ठीक उसी जगह पर रक्खी जहाँ बुड्ढे की लाश गडी हुई थी।

वे लोग सन्तुष्ट हुए। मेरे रंग-ढग, चाल-ढाल से उनको विश्वास हो गया। मैं बहुत निश्चिन्त था। वे और मैं बैठ कर गप्पे लडाने लगे। पर थोड़ी ही देर मे मुझे मालूम हुआ जैसे मैं डर से पीला पड़ा जा रहा हूँ, और मैं चाहने लगा कि वे लोग उठ कर चले जाँय। मेरे सिर में दर्द होने लगा और मेरे कानों मे झनझनाहट-सी होने लगी। पर वे बैठे-बैठे गपशप करते ही रहे। मेरे कानों मे जो आवाज आ रही थी, वह और भी साफ सुनाई पडने लगी। मैं उसे दबाने के लिये जोर-जोर से बाते करने लगा, लेकिन वह बढ़ती गई, यहाँ तक कि अन्त मे मुझे मालूम हुआ कि वह आवाज मेरे कानों के अन्दर नहीं थी!

सचमुच अब मैं बहुत पीला पड़ गया, पर मैं और जोर से—और जल्दी-जल्दी बाते करने लगा। फिर भी आवाज बढती गई—और मैं क्या कर सकता था? यह एक धीमी, भद्दी किन्तु बार-बार होने वाली आवाज थी, जैसे रुई मे लपेटी हुई घड़ी में से निकलती है! मेरा दम घुटने लगा—पर वे लोग उस आवाज को नहीं सुन रहे थे। मैं जल्दी, और जोर से, बाते करने लगा—पर आवाज बढती गई। यह लोग यहाँ से क्यो नही टलते? मैं तेजी से, जोर से, पैर रखता हुआ फर्श पर इधर-उधर घूमने लगा, मानो उन लोगों के मेरा भेद भाँप लेने से मुझे क्रोध आ गया हो—पर आवाज बढती गई। हे ईश्वर! मैं क्या करूँ? क्रोध मे भर कर मैंने अपनी कुर्सी को फर्श पर घसीटना शुरू कर दिया, पर वह आवाज इस सब को चीरती हुई बढने लगी। और

चुका था। मैंने विस्तर उठा कर लाश की जॉच की। सचमुच वह मर चुका था। मैंने उसके हृदय पर अपना हाथ रक्खा और बहुत देर तक रक्खे रहा। धड़कन का पता तक नहीं था। वह मर चुका था। अब उसकी आँख मुझे कभी परेशान न करेगी।

अगर तुम अभी तक मुझे पागल समझते हो, तो लाश छिपाने मे मैंने जो होशियारी की, उसे सुनने के बाद फिर नहीं समझोगे। रात बीत चली थी—मैं झटपट, पर खामोशी मे, अपना काम करने लगा। पहले मैंने लाश को टुकडे-टुकडे कर डाला। सिर, हाथ और पैर मैंने काट कर अलग कर दिये।

इसके बाद मैंने फर्श में से तीन पत्थर हटा कर खोदना शुरू किया और काफी गहरा गढा हो जाने पर लाश के टुकडों को उसमें भर दिया। फिर पत्थरों को अत्यन्त सावधानी से जहाँ का तहाँ जमा दिया—ऐसी चालाकी से कि किसी मनुष्य की आँख—उस बुड्ढे की भी आँख—कुछ भी पता नहीं पा सकती थी। फर्श को धोने की कुछ भी ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि खून का एक भी धब्बा वहाँ नहीं था। यह सब काम मैंने टीन के टब मे किया था। हाः हाः हाः!

जब मेरा काम समाप्त हुआ तो चार बजे थे। अभी तक खूब अँधेरा था। ज्यों ही चार का घंटा बजा कि किसी ने बाहरी दरवाजा खटखटाया। मैं निर्भर हो नीचे गया—अब डर किसका था?—और दरवाजा खोल दिया। तीन आदमी अन्दर आये जो पुलिस के अफ़सर थे। रात मे किसी पड़ोसी ने चिल्लाने की आवाज सुनी थी और सन्देह होने पर पुलिस आफिस मे सूचना दे दी थी।

मैं मुस्कराया—अब मुझे किस बात का डर था? मैंने उन लोगों का स्वागत किया। मैंने उन्हे बताया कि वह चिल्लाने की आवाज़ मेरी ही थी—मैं सोते-सोते चिल्ला पड़ा था।

मैंने उन्हे पूरे मकान मे घुमाया और अच्छी तरह तलाशी लेने को

अमेरिका

उपहार

ले०—ओ० हेनरी

न्यूयार्क नगर के एक टूटे-फूटे मकान मे दो कमरे लेकर एक गरीब दम्पति रहते थे। पति का नाम जिम और पत्नी का नाम डेला था। उनके कमरो में बहुत ही साधारण असबाब था। एक टेबिल, दो-तीन कुर्सियाँ, एक पलग और एक कपड़े रखने की आलमारी—बस।

इस सादे घर मे इन दम्पति का जीवन किसी तरह कट रहा था। पहले जिम सप्ताह मे २२) कमाता था, पर दुर्भाग्य से इस समय केवल १०) पा रहा था। पर इतने मे ही उनके दिन किसी तरह कट रहे थे।

बड़ा दिन ईसाइयो का सब से बड़ा त्योहार है। इस उत्सव मे धनी-गरीब सब अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार नाना प्रकार की चीजे खरीद कर अपने स्वजनों और मित्रों को उपहार देकर स्नेह और श्रद्धा प्रकट करते हैं। कल यही त्योहार है।

पलंग पर लेटी हुई डेला सोच रही थी। उसकी चिन्ता का मानो अन्त नहीं। साल भर मे उसने अपनी इस थोड़ी-सी आमदनी मे से बहुत कठिनाई से केवल चार रुपये और कुछ आने जमा कर पाये थे। इन चार रुपयो मे वह अपने प्रियतम के लिये कौन-सी चीज खरीदे! बहुत सोचने पर भी कोई उपाय उसकी समझ में नहीं आया। वह बिस्तर छोड़ कर अनमने भाव से चहल-कदमी करने लगी। सहसा कुछ सोच कर वह रुकी और छोटे दर्पण के सामने खड़ी होकर अपना चेहरा देखने लगी। देखते-देखते उसकी आँखे चमक उठीं! उसने

तब भी वे लोग गपशप कर रहे थे, हँस रहे थे। क्या यह सम्भव है कि वे उस आवाज को नहीं सुन रहे थे? नहीं, नहीं! वे अवश्य सुन रहे थे! उन्हें मेरे ऊपर सन्देह हो रहा था! वे सब कुछ जान गये थे! वे मेरे भयभीत हो जाने का मजाक उड़ा रहे थे!—मैंने तब यही समझा, और अब भी यही समझता हूँ। पर इस वेदना से सभी कुछ अच्छा था! इस मजाक की अपेक्षा और कुछ भी आसानी से सहा जा सकता था! मैं उस बनावटी हँसी को और नहीं सह सका। मुझे मालूम हुआ कि यदि मैं चिल्ला नहीं पड़ा तो मर जाऊँगा और फिर—फिर—सुनो—वही आवाज—और तेज—और! और!! और!!!

मैं चिल्ला पड़ा, "शैतानो! अब और कपट मत करो! मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ। इन पत्थरों को उखाड़ डालो! यहाँ, यहाँ! यह उसके घृणित हृदय की धड़कन है!"

एक दूकान मे उसकी तबियत की चीज मिली। वह थी एक प्लैटिनम धातु की बनी घड़ी की 'चेन'। यह 'चेन' उसे बहुत पसन्द आई। उसने सोचा—'यह 'चेन' अवश्य ही मेरे प्रियतम के लिये बनी है। मैं इतनी दूकानों मे गई, पर कहीं भी ऐसी 'चेन' नहीं देख पाई। यह उसकी सोने की घड़ी के साथ बहुत अच्छी लगेगी। इसे पाने पर वह बहुत खुश होगा।' तिहत्तर रुपये देकर उसने वह 'चेन' मोल ले ली।

'चेन' लेकर जब डेला घर लौटी तब उत्तेजना का नशा उतरने पर उसे होश आया। वह बाल सिकोड़ने के यन्त्र के द्वारा अपने विध्वस्त बालों को सिकोड़ने लगी। करीब चालीस मिनट के बाद उसका सिर छोटे-छोटे सिकुडे बालों से ढँक गया। दर्पण के सामने खड़ी होकर अपना चेहरा देखते हुये वह मन ही मन कहने लगी—'अगर जिम यह देख कर नाराज होकर मुझे मार न डाले, तो यह तो अवश्य कहेगा कि मैं नाचने वाली की तरह दीख रही हूँ।'

सध्या हो गई। जिम के दफ़र से लौटने का समय हो गया। डेला चूल्हे पर चाय के लिये गरम पानी तैयार रख कर और टेबिल पर नाश्ते की रकेबी सजा कर, द्वार के पास बैठ गई।

जिम के लौटने मे कभी देर नहीं होती। आज भी नहीं हुई। ठीक समय सीढ़ी पर उसके पैरों की आहट हुई। आहट सुन कर डेला का मुँह कुछ क्षणो के लिये डर से सफ़ेद हो गया। फिर अपने को सम्हाल कर वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगी—"हे परमात्मा, वह मुझे पिछले दिनों की तरह सुन्दर देखे।"

कमरे में आकर जिम ने द्वार बन्द कर दिया। उसकी उम्र केवल बीस साल की थी। कमरे में आकर वह डेला की ओर देखते हुये स्तम्भित-सा खड़ा हो गया। उसके चेहरे की ओर देख कर डेला उसके हृदय का भाव नहीं समझ सकी। उसने देखा—यह क्रोध, विस्मय, निराशा तथा डर का चिन्ह नहीं।

अपने बालों को खोला। नीले, स्वच्छ जल की तरंगों पर सूर्य की किरणें जैसी दीखती हैं, उसी तरह उसकी पीठ पर सुनहले बालों की तरगें चमक उठीं। बालों की ओर देख कर उसने जाने क्या सोचा— फिर झटपट उन्हे लपेट कर बाँध लिया। कुछ क्षणों मे उसका चेहरा मलिन हो गया। आँखो से कई बूँद आँसू टपक पड़े। झट-पट आँसू पोंछ कर, अपनी पुरानी टोपी और ओवर-कोट पहिन कर वह घर से निकल पड़ी।

डेला और जिम के घर मे गर्व करने लायक दो ही चीजें थीं। एक डेला के सुनहले, घुँघराले बाल और दूसरी जिम की पैतृक, सोने की घड़ी। डेला के सुनहले, घुँघराले बाल इतने सुन्दर थे कि किसी रानी के क़ीमती जेवर भी उनसे हार मानते। और अगर कोई राजा जिम की घड़ी देखते, तो उन्हे ईर्ष्या करनी ही पडती।

घर से निकल कर डेला एकदम एक दूकान के सामने जाकर खड़ी हुई। देखा, मोटे-मोटे अक्षरों मे लिखा था—"श्रीमती सफ़ोनी। सब तरह के बालो की चीजे यहाँ मिलती हैं।"

दूकान के भीतर जाकर डेला ने दूकानदारिन से पूछा—"क्या आप मेरे बाल खरीदेंगी?"

"मैं बाल खरीदती हूँ। आप अपनी टोपी खोलिये—देखूँ, कैसे बाल हैं।"

डेला ने टोपी खोली। सुनहले बालो की लहरे चमक उठीं। पसो-पेश से बालों को हाथ मे हिलाते हुये व्यावसायिक-ढग से दूकानदारिन बोली—"मैं...सत्तर रुपये तक दे सकती हूँ—अगर आपकी इच्छा हो तो दे सकती हैं।"

"ले लीजिये।"—कह कर डेला ने दूकानदारिन की ओर देखा।

बाल देकर कीमत लेकर दूकान से बाहर आकर डेला ने दो घटों तक अपनी अभीष्ट वस्तु को अनेकों दूकानो मे तलाश किया। आखिर

के कारण उसकी इच्छा पूरी नही हो पाई थी। आज वही आकाङ्क्षित वस्तु उसके हाथ मे है। पर हाय! आज उसके बाल कहाँ हैं?

डेला ने अपने को सम्हाल कर कहा—"चिन्ता मत करो, मेरे बाल बहुत जल्दी उग आवेंगे। मैं तुम्हारे लिये क्या लाई हूँ, यह तो तुमने अभी तक देखा ही नहीं?" कह कर उसने अपनी मुट्ठी खोल कर, हाथ बढ़ा कर, उसे वह प्लैटिनम धातु की बनी चेन दिखाई—"देखो, जिम, यह कितनी सुन्दर है! मैं आज इसके लिये दो घंटे तक दूकानों में घूमी हूँ। तुम्हारी घड़ी के साथ यह बहुत अच्छी लगेगी। देखूँ तुम्हारी घड़ी? देखें, इस 'चेन' के लगाने पर कैसी दीखती है।"

जिम कुछ देर तक चुप रहा। फिर चेहरे पर मलीन मुस्कराहट लाकर बोला—"यह उपहार की चीजें रख दो, डेला। वह सब इतनी सुन्दर हैं कि इस समय इस्तेमाल करना उचित नहीं।" यह कहकर हँसते हुये उसने कहा, "तुम्हारे लिये कघी खरीदने के लिये मैंने आज घड़ी को बेच दिया है। अब चाय पिलाओ।" और फिर सजल नेत्रों से पत्नी को हृदय से लगाकर उसका मुँह चूम लिया।

डेला उसके पास जाकर बोली—"प्यारे जिम, तुम इस तरह मेरी ओर न देखो। मैंने बाल कटवा डाले हैं, क्योंकि ईसा के जन्मोत्सव के दिन तुम्हे एक उपहार बिना दिये मुझ से नहीं रहा गया! तुम चिन्ता मत करो। मेरे बाल जल्दी निकल आयँगे, मेरे बाल जल्दी बढ़ते हैं। इस उत्सव के दिन आनन्द करो। तुम्हे पता नहीं, तुम्हारे लिये मैं कैसी चीज लाई हूँ—तुम्हे बहुत खुशी होगी।"

अब सब समझ कर जिम ने कहा—"बाल बेच दिये हैं?"

"हाँ, इसलिये क्या अब तुम्हे मैं पसन्द नहीं? बाल गये पर मैं तो तुम्हारी हूँ?"

जिम कमरे के चारों तरफ आँखे दौड़ा कर जाने क्या देखने लगा। "क्या देख रहो, प्रियतम? आज ईसा के जन्मोत्सव के दिन मुझ पर नारज न होओ। आओ, हम लोग आनन्द करे।"

यह कह कर उसने दुःख मिले हुये मीठे स्वर से कहा—"बाल चले जाने पर फिर निकल आयँगे, पर इस जन्मोत्सव के दिन तुम्हे कोई उपहार न दे सकने पर मुझे सदा के लिये दुःख रह जाता। चाय बनाऊँ?"

ओवर कोट की जेब से एक 'पैकेट' निकाल कर टेबिल पर रखते हुये जिम ने कहा—"यह बात नहीं है, डेला। दुनिया मे कोई ऐसी चीज नहीं है जो हम लोगों के प्रेम मे बाधा दे सके। तुम अगर इस पैकेट को खोलो तो तुम समझ सकोगी कि मैं क्यों उदास हो रहा था।"

डेला ने झट पैकेट को खोल डाला। खोल कर उसने जो कुछ देखा उससे मारे आनन्द के वह चिल्ला पड़ी, पर दूसरे ही क्षण रो पडी। उसने देखा—बालों में लगाने की, सोने की पत्ती से ढँकी हुई तीन कंघियाँ थीं। दो दोनों तरफ के लिये और एक पीछे के लिये। जाने कब से डेला ऐसी सुन्दर कंघियों की आकाक्षा कर रही थी। पर पैसे की तगी

इधर-उधर घूमता रहा। मैं अपनी चालाकी से पेट भरने लायक कुछ न कुछ कमा लेता था। कभी घुड-दौड़ मे बाजी लगाता, कभी अखबार बेचता और कभी विज्ञापन बॉटता। लेकिन लोग मुझे विज्ञापन का एजेट बनाना पसन्द नहीं करते थे, क्योंकि मेरे कपडे बहुत भद्दे और गन्दे रहते थे। इसके सिवाय मैं सवेरे-सवेरे उठ कर घूमना पसन्द भी नहीं करता था।

एक बार घुड-दौड में जाने पर मेरा परिचय दो गुंडों से हो गया। उनके नाम थे हेनरी और जूल्स। उनके साथ अठारह साल की एक लडकी भी थी, उसका नाम था गूज। हेनरी और जूल्स शहर के बाहरी भागों में चोरी और उठाईगीरी किया करते थे। दो बार वे मुझे भी अपने साथ ले गये। दोनों बार मैं उन बॅगलों के फाटक पर पहरा देता रहा जिनमें उन्होने चोरी की। गूज करीब सौ गज की दूरी पर सड़क के घुमाव पर खड़ी रही, या इधर से उधर घूमती रही, इस ढग से मानो वह रास्ता चलने वालो से कुछ मॉगने के लिये खड़ी हो। पर वास्तव में वह पहरा दे रही थी, और दो सिपाहियों से हॅसी-मजाक करके उन्हे इस तरफ आने से रोक रही थी।

मेरी मेहनत के बदले मे हेनरी और जूल्स ने मुझे बहुत थोडा रुपया दिया; एक बार दो रुपये और दूसरी बार तीन रुपये। इसके बाद मैं उनका साथ छोड़ कर अकेले ही अपना काम करने लगा।

जुलाई सन् १८८४ से मैं पेरिस के एक गन्दे मुहल्ले मे एक बहुत रद्दी से होटल मे रहता था। उसका नाम था—न जाने किस कारण से—'स्मेल्टर्स होटल,' और वह वेश्याओं और गुडो की एक खास जगह थी।

१८८५ का मार्च का महीना था, खूब गर्मी पड़ रही थी। प्रतिदिन तीसरे पहर को मैं शहर के पश्चिमी बाहरी भागो मे अपना काम बनाने की फिक्र मे घूमता-घामता रहता था, कभी-कभी मैं लौट कर शहर के

फ्रांस

हत्या का अपराध

लेखक—अज्ञात

नूमिया, ७ फ़रवरी, १८९७।

माइतेर ला० गेवाउदन,

बैरिस्टर,

अपील कोर्ट की सेवा में।

प्रिय बैरिस्टर साहब,

पिछले पत्र में मैंने जिन घटनाओं के विषय में आपको लिखा था, उनका पूरा वर्णन आज लिख रहा हूँ। मेरे मुकदमे के बारे में जो-जो बातें आप जानना चाहते हैं, वे सब आपको इस पत्र में मिलेंगी।

मेरा नाम ब्रोन्दे है। पिछली १ दिसम्बर को मैं इकतीस साल का हो गया। मेरा जन्म लियोंज नामक नगर में हुआ था। मैं जब बहुत छोटा था तभी मेरी माँ मर गई थी। मेरे पिता भी लगभग डेढ़ वर्ष पहले मर चुके है। वे अपने ही नगरमे एक दूकान में नौकर थे। मेरी एक विवाहित बहिन भी लियोंज में है।

उन्नीस वर्ष की अवस्था से ही मैं अपने घर वालों से लड़ता-झगड़ता रहता था। कई फर्मों मे मैंने क्लर्क का काम किया, पर किसी ने मुझे पसन्द नहीं किया, क्योंकि मैं सदा देर करके आफिस मे पहुँचता था। इसीलिये १८८० से १८८५ तक लगातार मैं बिना जीविका के

मैंने अपना काम तुरन्त कर डालने का निश्चय कर लिया। (उस दिन २१ मार्च थी), मैं तीन बजे उस घर से निकला। पोइसी से ट्रेन पर सवार होकर सात बजे में पेरिस अपने होटल मे आ गया। मैंने उस दिन खास तौर से होटल की मालकिन से एक मोमबत्ती मॉगी और उससे कह भी दिया कि मै सोने जा रहा हूँ।

साढे आठ बजे तक मैं अपने कमरे मे रहा। जब मैं हेनरी और जूल्स के साथ काम किया करता था, तब उन्होंने एक चोर-चाबी और एक ताला तोडने का ओजार मुझे भेंट किया था और उनसे किस तरह काम लेना चाहिये, यह भी सिखा दिया था। यह दोनों चीजे अभी तक मेरे पास थीं।

साढ़े आठ बजे मैं नीचे उतरा। मै जानता था कि होटल की मालकिन और उसका नौकर इस समय खाना खा रहे होंगे, और दरवाजे पर मुझे देखने वाला कोई भी न होगा।

पहले मैंने सोचा, पोइसी तक पैदल जाऊँ, जिससे स्टेशन का कोई आदमी मुझे देख कर पहचान न ले। पर अपना बचाव करने के लिये मेरे पास सबूत की क्या कमी थी? होटल की मालकिन को पूरा विश्वास था कि मैं अपने कमरे मे सो रहा हूँ। इसके सिवाय पोइसी तक चार घटे पैदल चलने की अपेक्षा मैंने खतरे मे पड़ना ही ज्यादा पसन्द किया।

पेरिस के सेट लजारे स्टेशन से साढे नौ बजे चल कर साढे दस बजे मैं पोइसी पहुँच गया। ईकुइल में उस बुढिया के घर तक पैदल चल कर पहुँचने मे मुझे पन्द्रह मिनट और लगे। वहाँ पहुँचने पर देखा कि नीचे की मजिल में एक खिड़की मे अभी तक रोशनी जल रही है। ऊपर की मजिल मे भी झरोखों मे से रोशनी चमक रही थी। नौकरानी अभी तक रसोई घर में और बुढिया अपने सोने के कमरे मे जाग रही थी। मैं कुछ देर के लिये घूमता-घामता दूसरी ओर चला गया। लौटने

अन्दर नही जाता था, किसी छोटे-छोटे स्टेशन या किसी गोदाम मे पड कर सो रहता था ।

मैं बॅगलों मे भीख मॉगने जाया करता था, पर मेरा प्रधान लक्ष्य होता था, कि बॅगले मे कितने आदमी रहते हैं, इसका पता लगाना। । प्रायः लोग मुझे भीख बिना दिये भगा देते थे । फिर भी मैं दिन भर घूम कर लगभग दस आने और बहुत-सी बासी रोटी जमा कर लेता था । जितनी रोटी मुझसे खाई जाती उतनी खाने के बाद शेष को अन्य भिखमगों या कुत्तो को फेक देता था, या चिड़ियों को खिला देता था ।

कभी-कभी कोई मूर्ख नौकर मुझे रसोई-घर के पास अकेला छोड-चला जाता । पर ऐसा अवसर मुझे बहुत ही कम मिलता था, जब आसानी से छिपा लेने योग्य कोई चीज हाथ लगती हो । एक बार मैंने एक पीतल का चम्मच चुरा लिया और उसे एक भिखारी के हाथ दो आने मे बेच डाला ।

एक बार पोइसी नगर के पास वैकुइल नामक स्थान मे एक बुढ़िया ने बड़ी अच्छी तरह मेरा स्वागत किया । वह ख़ूब मोटी-ताजी, छोटे कद की थी, और उसके सिर के बाल उड़ गये थे । उसे दूसरों के साथ भलाई करने का कुछ शौक-सा था । वह मुझसे बहुत देर तक बातचीत करती रही । बाद मे उसने मुझे सम्मति दी कि मैं उसके नाम से पेरिस की एक सस्था मे अर्जी दूॅ, जिससे मुझे कोई नौकरी मिल जाय । वह अपने रसोई-घर मे बैठ कर मुझसे बातचीत कर रही थी । पास ही उसकी नौकरानी बैठी तरकारी छील रही थी । वह भी अपनी मालकिन की तरह मोटी-ताजी थी । बात करते समय मेरा ध्यान इधर-उधर की चीजो पर लगा हुआ था, मुॅह से मैं 'हूॅ-हूॅ' कहता जाता था । मैंने देखा कि दरवाजे मे तालेदार चटखनी नहीं थी । बाग के चारों ओर की दीवाल नीची थी । आस-पास के बॅगले सब खाली पडे थे । इस बुढ़िया ने मुझे साढ़े तीन रुपये दिये, जिसमे से मैंने एक बड़ा छुरा खरीदा ।

मैंने आवाज बदल कर धीरे से कहा, "हाँ!"

मुझे आशा थी कि इससे सतुष्ट होकर वह फिर सो जायगी। पर इतनी रात को नौकरानी को चलता-फिरता सुन कर बुढ़िया को कुछ शक हो गया था। मैंने अपनी मोमबत्ती बुझा दी और साँस रोक कर चुपचाप दीवार के सहारे खड़ा रहा। एकाएक उसके कमरे का दरवाजा खुला और चारों ओर रोशनी फैल गई। बुढ़िया रात के कपड़े पहने और मोमबत्ती हाथ में लिये बाहर आई। मैंने एक कदम आगे बढ़ कर बिना देखे-भाले, ठीक अपने सामने छुरा मारा। बुढ़िया एक बार बच्चों की तरह जोर से चीख कर जमीन पर ढेर हो गई। उसकी मोटी देह आधी दरवाजे के बाहर थी, आधी अन्दर।

उसके हाथ की मोमबत्ती जमीन पर गिर कर लुढकने लगी और बुझ गई। मैं अपनी मोमबत्ती जला कर देखना ही चाहता था कि जीने में रोशनी दिखाई पड़ी और भारी पैरो से कोई आता हुआ सुनाई दिया। यह बुढ़िया की नौकरानी थी। उसके हाथ में एक छोटा-सा लैम्प था, जिसकी रोशनी ठीक मेरे चेहरे पर पड़ी। मुझे लग रहा था जैसे मेरे मुँह पर पसीना आ गया है और बहुत सी खून की बूँदे भी हैं।

नौकरानी भयभीत होकर पीछे हट गई। उसने मुझे पहिचान लिया था। उसका भरा हुआ भला चेहरा अभी तक मेरी आँखों के सामने फिर रहा है। उसने लैम्प जमीन पर रख दिया और हाथ जोड़ने लगी। मैंने उसके कन्धे में छुरा घुसेड़ दिया। उसके मुँह में से चूँ भी न निकली और वहीं जीने मे ढेर हो गई।

मैंने लैम्प उठा लिया और बुढ़िया की लाश के ऊपर से होकर उसके कमरे मे गया।

एक डेस्क का ढकना तोड़ने पर मुझे उसमें दो सौ रुपये के नोट और एक सौ दस रुपये सोने के सिक्को में रक्खे हुए मिले। एक दराज में कुछ गहने भी थे। गहनों को लेना खतरे से खाली न था, वे बहुत

पर देखा, रोशनी अभी तक ज्यों की त्यों जल रही है। मैं फिर थोड़ी देर के लिये चला गया। फिर बाग की चहारदीवारी के पास पहुँचा। लगभग साढ़े ग्यारह बजे नौकरानी के कमरे की रोशनी बुझी हुई दिखाई दी। पर बुढ़िया के कमरे में अभी तक रोशनी थी, वह अब भी जाग रही थी। शायद कोई किताब पढ़ रही थी। बारह, फिर साढ़े बारह बजे, पर वह रोशनी न बुझी। मैं चाहरदीवारी से लग कर खड़ा हुआ एकटक उसी कमरे की खिड़की की ओर ताक रहा था। क्या यह रोशनी रात भर जलती रहेगी. और मुझे फिर अपने उसी दरिद्र और नीरस जीवन में लौटना पड़ेगा?—मुझे कुछ-कुछ ऐसी इच्छा भी हो रही थी।

मुझे अब विश्वास होने लगा कि वह रोशनी कभी न बुझेगी। उस सन्नाटे में मैं एक के घण्टे की आवाज सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था। पर मेरी आँखें उसी खिड़की पर लगी हुई थीं। सहसा चौंक कर मैंने देखा कि रोशनी बुझ गई, मानो मुझे अनुमति का सकेत करती हुई एक आँख बन्द हो गई।

मैं दस मिनट तक और रुका रहा जिसमें वह बुढिया सो जाय। तब दीवार पर चढ़ कर अन्दर कूद गया।

जमीन मुलायम थी और मेरे जूतों के तले भी पुराने घिसे हुये थे, इसलिये किसी तरह की आहट बिल्कुल ही नहीं हुई। सामने के दरवाजे पर पहुँच कर मैंने अपनी पुरानी चोर-चाबी से उसका ताला सहज ही में खोल डाला। ड्योढ़ी में से एक घुमावदार जीना बुढिया के कमरे तक गया था।

मैंने अपना कोट और वेस्ट-कोट उतार कर वहीं रख दिया, जिससे खून के धब्बे सिर्फ मेरी कमीज पर ही पड़े। फिर मोमबत्ती जला कर बाँये हाथ में, और अपना छुरा दाहिने हाथ में लेकर मैं ऊपर चढा।

बुढिया के कमरे के पास मैं जैसे ही पहुँचा कि वह अन्दर से बोल उठी, "कौन जेन?" (जेन नौकरानी का नाम था।),

एकाएक बिना कारण के ही मेरे दाँत कटकटाने लगे—सम्भवतः ठड से। जेबो मे हाथ डालने पर देखा, वह जवाहिरातों की मूठ वाली छुरी पड़ी हुई है। वह कीमती तो थी पर उसकी पूरी कीमत मुझे मिलना असम्भव ही था। उसे फेक देना ही अच्छा था। स्टेशन के पास ही एक अन्धा कुआँ था, वह छुरी उसमे फेक कर मैं चल दिया।

चलते-चलते मैंने हिसाब लगा कर देखा, यह अपराध करके मैंने तीन सौ दस रुपये कमाये हैं। उन गुडों के साथ काम करने पर मुझे जो कुछ मिला था, उसकी तुलना मे यह रक़म बहुत ज्यादा थी। मुझे सन्तोष था। पर मैंने मेहनत भी बहुत की थी और अपने आपको खतरे मे भी डाला था।

ट्रेन मे बैठते ही मै सो गया। पेरिस के सेट लजारे स्टेशन पर पहुँचते ही एकाएक मैं जाग पड़ा। दिन का अप्रिय प्रकाश चारो ओर फैला हुआ था। मेरे मुँह का स्वाद बिगड़ा हुआ था और मेरे अग-प्रत्यङ्ग मे पीड़ा हो रही थी। इस समय साढ़े छः बजे थे। एक छोटे से होटल मे मैंने कुछ खाना खाया। उसके बाद मैं अपने होटल की ओर चला। करीब आठ बजे मैंने एक दूकान से एक कमीज खरीदी, क्योंकि मेरी पुरानी कमीज पर खून के धब्बे पड़ गये थे।

मैंने इरादा किया था कि दिन भर अपने कमरे मे पड़ा-पड़ा सोता रहूँगा। खून और चोरी करने का मेरा प्रधान लक्ष्य यही था कि कुछ काम बिना किये बिस्तर पर पड़ा-पड़ा आराम से दिन काटूँ। पर अब कुछ रुपया हाथ मे आने पर मुझे जमा करने की इच्छा होने लगी। मैं इस रुपये मे से कम से कम खर्च करना चाहता था। होटल की ओर जाते-जाते मैंने निश्चय कर लिया कि कल ही किसी नौकरी की तलाश करूँगा।

इन्हीं विचारो मे डूबा हुआ मै जब होटल के पास पहुँचा, तो वहाँ का दृश्य देख कर मेरे प्राण सूख गये।

कीमती भी नहीं थे। मैंने सिर्फ नकद रुपया ले लिया और गहने वहीं छोड़ दिये।

ठीक इसी समय बुढ़िया कराह उठी। गंग छुरा ? इधर-उधर देखने पर मुझे एक छोटी, चांदि फल की छुरी एक मेज पर रक्खी हुई दिखाई दी। उसकी मूठ किसी भारी धातु की थी और उसमें बहुत से जवाहिरात जड़े हुए थे। उसी छुरी को उठा कर मैंने बुढ़िया के गले के पार कर दिया। फिर फर्श पर उनका खून पोंछ कर मैंने उस कीमती छुरी को अपनी जेब में रख लिया।

इसके बाद मैं चुपचाप नीचे उतर आया। नीचे पहुँच कर मैंने लैम्प बुझा दिया और अपना कोट और वेस्टकोट पहन कर सावधानी से दरवाजा बन्द करने के बाद बाहर निकल आया।

धीमी, ठंडी हवा चल रही थी। सड़क अब बिल्कुल सुनसान थी। मैं चहारदीवारी पार करके स्टेशन की ओर चल दिया। तीन बजने में बीस मिनट बाकी थे। स्टेशन पर टाइम-टेबुल में देखा, पेरिस को पहिली गाड़ी पाँच बज कर बीस मिनट पर जाती थी। मैंने इस गाड़ी को चार मील दूर पिछले स्टेशन पर पकड़ने का इरादा किया, जिससे पुलिस वाले धोखे में पड़ जायँ।

रवाना होने के पहिले मैं सड़क के पास क्षण भर के लिये रुका। कोट के बटन खोल कर देखा कि कमीज पर खून के दाग हैं। एक छोटा-सा धब्बा पतलून पर भी था, पर वह साफ नहीं दीखता था।

मुझे विश्वास था कि मुझ पर कोई सन्देह न कर सकेगा। पिछली शाम को होटल की मालकिन ने मुझे ऊपर अपने कमरे में सोने के लिये जाते हुये देखा था। मैं ठीक नौ बजे होटल में लौट जाऊँगा। कोई भी मुझे नहीं देख पायेगा, क्योंकि उस समय मालकिन बाजार गई होगी, होटल में रहने वाले मजदूर लोग तड़के ही अपने काम पर चले गये होंगे, और औरतें तब तक सोती ही होंगी।

हुए कमरे में लाकर खड़ा किया। बिस्तर पर एक युवती की लाश पड़ी हुई थी।

यह दृश्य देख कर मेरे मन की जो दशा हुई उसका वर्णन मैं ठीक-ठीक नही कर सकता। मेरा सिर घूम रहा था। मैं जैसे स्वप्न देख रहा था। यह लाश उस बुढ़िया की नहीं थी, जिसे मैंने मारा था। मैं समझता हूँ कि उस समय मेरे चेहरे का भाव मेरी निर्दोषिता प्रकट कर रहा था। मैं चकित, स्तब्ध होकर खड़ा रहा। एक क्षण के बाद मैंने बहुत सीधे-सादे ढंग से पूछा, "मुझे क्यों गिरफ़ार किया गया है?" पर यह सवाल मुझे बहुत पहले ही पूछना चाहिये था।

बाद में मैं बोला, "यह युवती कौन है?"

उस कमरे में सफेद दाढी और ऊँचे हैट वाला एक व्यक्ति बैठा था। गिरफ़ारी के समय मेरे हाथ में से जो छोटा बडल छीन लिया गया था, उसे सिपाहियों ने उस व्यक्ति के सामने रख दिया। उस बंडल मे मेरी नई खरीदी हुई कमीज थी।

वह बोला, "इसे ले जाओ, और कपडे उतार कर तलाशी लो।"

तलाशी लेने पर मेरी जेब मे लगभग तीन सौ रुपये निकले। मेरी कमीज पर खून के धब्बे भी उन्होने देखे। यह सब बातें सुपरिण्टेण्डेण्ट से कह दी गईं। फिर मुझे हवालात मे ले जाया गया।

मुक़दमा चलने पर मालूम हुआ कि मुझ पर क्या जुर्म लगाया गया है। आधी रात के समय होटल की मालकिन ने ऊपर खटपट की आवाज सुनी थी! थोड़ी देर के बाद कोई नीचे उतरा और बाहर चला गया। ऊपर की मजिल मे चिल्लाने और कराहने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। नौकर ने ऊपर जाकर देखा, एक कमरे का दरवाजा खुला है, और होटल मे रहने वाली एक औरत की लाश अन्दर फर्श पर पड़ी हुई है। मेज की दराजे खुली पड़ी थी और बिछौने का गिलाफ़ चिरा हुआ था। नौकर के शोर मचाने पर होटल के सब लोग दौड़े

होटल के दरवाजे पर करीब पचास आदमियों की भीड़ जमा थी। एक बग्घी और बहुत से पुलिस के सिपाही भी दिखाई दिये। कुछ ही क्षणों मे मैं न जाने कितनी बाते सोच गया। निश्चय ही ईकुइल की उस बुढ़िया के बारे मे इन लोगो को सब कुछ पता चल गया है। शायद अपना कोट पहिनते समय मेरी जेब मे से कोई रूमाल या और कोई चीज निकल पड़ी है। टेलीफोन से यहाँ खबर कर दी गई है... इसमे कोई सन्देह नहीं कि मैं पकड़ लिया गया हूँ।

आप ही आप मैं एक कदम पीछे हट गया और भाग जाने को तैयार हुआ। इतने मे खाकी रग का कोट पहने और फेल्ट हैट लगाये एक छोटे क़द का आदमी एकाएक मेरे सामने आकर खड़ा हो गया—

"तुम्हारा नाम पाइरे ब्रोन्दे है ?"

मैंने कुछ जवाब नहीं दिया।

"मैं तुम्हे गिरफ्तार करता हूँ।"

उसने दो पुलिसमैनों को इशारा किया, और उन्होंने आकर मेरा एक-एक हाथ पकड़ लिया।

× × ×

वे मुझे होटल के दरवाजे पर ले गये। पुलिस ने भीड़ को पीछे हटाया। वे सब खूब हो-हल्ला मचा रहे थे, मुझे देख कर और भी चिल्लाने लगे।

जिस आदमी ने मुझे गिरफतार किया था, वह पुलिस का इन्सपेक्टर था। वह मुझे अपने अफसर के पास ले गया जो होटल की मालकिन के दफ्तर में बैठा हुआ था। उसने मुझे ऊपर ले जाने का हुक्म दिया।

गिरफ़्तार होने के बाद मैं एक भी शब्द नहीं बोला था। सब से ऊपरी मजिल पर ले जाकर पुलिस वालों ने मुझे धक्का देते

पता चला कि जिस बुढ़िया को मैंने मारा था, वह एक प्रसिद्ध मूर्तिकार की विधवा थी। मुझे यह भी मालूम हुआ कि वह नौकरानी मेरे छुरे के घाव से मरी नहीं थी। होश मे आने पर उसने मेरा सब हाल ठीक-ठीक और विस्तार से बता दिया था। उसने मुझे पहले ही पहचान लिया था। उससे मेरी हुलिया मालूम होने पर पुलिस ने मुझे सब जगह खोजा—केवल उस जेलखाने मे नही खोजा जहाँ मैं था। मुझे यह भी मालूम हुआ—और यह बात महत्त्व की है—कि पुलिस को उस छोटी, जवाहिरातो से जड़ी हुई छुरी के गुम होने का पता चल गया था, जिससे मैंने बुढ़िया को समाप्त किया था, और बाद मे कुँए में फेक दिया था।

जज के सामने अपना बचाव करने के लिये मैं यह नहीं साबित कर सका कि उस रात को मैं होटल मे नही था। मुझे निश्चय था कि फाँसी की सजा मिलेगी। मैं अपना असली अपराध स्वीकार करने को तैयार हो गया। पर बाद मे मैंने निश्चय किया कि जब तक फाँसी की सजा सचमुच ही न सुना दी जाय तब तक कुछ न कहूँगा। युवती की हत्या का अपराध मैंने एकदम अस्वीकार किया। इससे जूरी लोगों पर कुछ प्रभाव पड़ा और उन्होंने मेरे साथ रियायत की। मुझे जन्म भर के लिये काले पानी का दड मिला।

अब मैं आपको न्यू कैलिडोनिया द्वीप से यह पत्र लिख रहा हूँ। यहाँ मैं ग्यारह वर्ष बिता चुका हूँ, और मेरा चाल-चलन बराबर अच्छा रहा है। मैं जेलर के आफिस मे क्लर्क के काम पर हूँ। मैं दुःखी नहीं हूँ। पर कानून के अनुसार अब मुझे छुटकारा मिल सकता है और मैं इसका लाभ उठाना चाहता हूँ। मुझे छुटकारा किस तरह मिल सकता है, यह आपसे स्पष्ट करके कहूँ। मैंने यह पता लगा लिया है कि ईकुइल की उस बुढिया के मुकदमे मे अन्तिम निर्णय १० अगस्त सन् १८८६ को लिखा गया था। कानून के अनुसार इस मुकदमे के बारे में

आये । न जाने कैसे इस बात की ओर सब का ध्यान गया कि मैं उस समय वहाँ नहीं था । मालकिन को पूरा विश्वास था कि पिछले दिन मैं होटल में लौट आया था । पर मृत युवती पिछली रात को अकेली लौटी थी, या किसी के साथ, इसके बारे में वह कुछ भी नहीं कह सकती थी । मेरा दरवाजा खटखटाया गया । जवाब न मिलने पर 'मास्टर-चाबी' से ताला खोला गया । मेरा कमरा खाली था । मेरे बारे में लोग पहले ही से जानते थे कि मैं बुरी सङ्गति में रहता हूँ । हेनरी के नाम से यहाँ सभी परिचित थे । सुपरिण्टेण्डेण्ट के आने पर सब को विश्वास हो गया कि मैंने ही हत्या की है । और मेरा हुलिया पुलिस वालों को बता दिया गया ।

प्रायः ऐसा होता है कि हत्यारे के मन में एक अजीब इच्छा उस जगह को देखने की उठती है, जहाँ उसने हत्या की थी । इसी बात को ध्यान में रख कर इंस्पेक्टर ने होटल को जाने वाले सब रास्तों पर निगरानी रखने का प्रबन्ध किया था ।

मैजिस्ट्रेट के सामने मैंने अपने अपराध का जोरदार शब्दों में प्रतिवाद किया । पर मेरे पास मिला हुआ रुपया और मेरी कमीज पर खून के धब्बे, इन दो सबूतों के होते हुए मुझे कौन निरपराध मानता ? और फिर जब बयान लेने वाले मैजिस्ट्रेट ने मुझसे पूछा, "२१ और २२ मार्च के बीच वाली रात को तुम अगर होटल में नहीं थे तो कहाँ थे ?" तब मैं उससे नहीं कह सका कि जब होटल में मेरे पास वाले कमरे में उस युवती की हत्या की जा रही थी, ठीक उसी समय मैं पेरिस से आठ मील दूर अन्य दो स्त्रियों की हत्या कर रहा था ।

जो अपराध मुझ पर लगाया गया था उसके बारे में समाचार पत्रों ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया । एक बदनाम होटल में एक वेश्या की हत्या—यह जनता के लिये कोई आकर्षण की बात नहीं थी । पर जो अपराध मैंने वास्तव में किया था उससे बड़ी सनसनी फैली । मुझे

फ्रांस

अनुचित प्रेम

लेखक—मोपासाँ

उस रात को जापानी 'ड्राइंग रूम' में बैठे हुए आपमें और मुझमें जो गहरा विवाद हुआ था, वह आपको याद है ? यह झगड़ा एक मनुष्य के बारे में था, जिसने अपनी लड़की को पत्नी बना लिया था। आप कितनी नाराज हो उठी थीं, मुझसे कैसे कठोर शब्द कह डाले थे ! और मैंने उस पापी पिता का पक्ष लेकर क्या कहा था, वह भी आपको याद है ? उसका पक्ष लेने के लिये आपने मुझे अपराधी ठहराया था ! मैं आज सिद्ध करूँगा कि मैं अपराधी नहीं हूँ। आज मैं वह सब घटनायें जनता के सामने रक्खूँगा। मुझे आशा है कि कोई न कोई व्यक्ति अवश्य ऐसा होगा जो यह घटनायें सुनने के बाद मान जायगा कि मनुष्य का भाग्य कभी-कभी ऐसी विचित्र और भयानक परिस्थिति उत्पन्न कर देता है कि उसके विरुद्ध लड़ना असम्भव हो जाता है।

सोलह वर्ष की अवस्था मे उस लड़की का विवाह एक बुड्ढे के साथ कर दिया गया था; वह एक व्यापारी था और उसने यह विवाह धन के लोभ से किया था, क्योंकि वह लड़की खूब सम्पन्न थी।

वह एक भली, सुन्दर लड़की थी, गेहुँवा रंग की, प्रसन्न चित्त और कल्पना-शील; उसे जीवन का सुख पाने की बड़ी अभिलाषा थी। विवाह होने के बाद जब उसके सारे स्वप्न, आकाक्षायें धूल मे मिल गई, तो उसका हृदय टुकडे-टुकड़े हो गया। जीवन की कठोरता, अपने

अब किसी तरह की कार्रवाई नहीं की जा सकती। इसलिये अब मैं साबित कर सकता हूँ कि उस युवती की हत्या मैंने नहीं की, क्योंकि उस रात को मैं आठ मील दूर ईकुइल नगर में हत्या कर रहा था। मैंने जिस नौकरानी के छुरा मारा था वह मुझे उस समय पहचान गई थी और अब भी पहचान लेगी। उसका पता मैं आपको लिख भेजूँगा। वह छुरी भी निश्चय ही कुँए में पड़ी हुई मिल जायगी। पहले ही कह चुका हूँ कि पुलिस के दफ़्तर में इस छुरी के गुम होने की बात नोट कर ली गई है।

इस प्रकार अब मैं अपने इस मुकदमे की अपील कर सकता हूँ। मैं साबित कर सकता हूँ कि जिस जुर्म के लिये मैं यह सजा भोग रहा हूँ, वह मैंने कभी नहीं किया। एक आदमी एक ही समय में पेरिस और ईकुइल में कैसे हो सकता है? बुढ़िया को मारने का अपराध अब अपराध नहीं रह गया है। वह मुकदमा क़ानून के अनुसार समाप्त किया जा चुका है और उसके लिये मुझे कोई सजा नहीं दी जा सकती। इसलिये अपील करने पर मुझे अवश्य ही छुटकारा मिल जायगा, और मैं अपने जीवन का शेष भाग यहाँ जेल में न बिता कर स्वदेश में स्वतन्त्रता से बिता सकूँगा।

आशा है, आप मेरी अपील का काम अपने हाथ में लेने की कृपा करेंगे और लौटती डाक से मुझे सूचना देंगे।

आपका,
पाइरे लुई ब्रोन्दे,
क्लर्क, जेलर्स आफिस,
नूमिया जेल,
न्यू कैलिडोनिया।

निश्चय हो गया कि बच्चा उत्पन्न होते ही वह अवश्य मर जायगी। इसलिये उसने अपने प्रेमी से बार-बार शपथ ली कि उसकी मृत्यु के बाद वह उसके बच्चे की जीवन भर देख-भाल करेगा; उसे बच्चे के सुख के लिये वह अपना सब कुछ देने को तैयार रहेगा, यहाँ तक कि आवश्यकता पडने पर पाप करने से भी न डरेगा।

इसी मृत्यु के डर से वह मानो पागल हो गई थी। उसके एक लडकी हुई, और जैसा उसे डर था, लडकी के पैदा होते ही वह मर गई।

युवक को उसकी मृत्यु से इतना आघात पहुँचा और उसके शोक का वेग इतना अधिक था कि वह उसे छिपा न सका। मृत युवती के पति को शायद पहले से ही सन्देह था। उसने युवक को अपने घर आने से मना कर दिया। युवक को विश्वास था कि वह लडकी उसी की सन्तान है। लड़की को गुप्त रूप से घर पर शिक्षा दी जाने लगी।

कई वर्ष बीत गये।

जैसे और सब लोग भूल जाते हैं, वैसे ही पियरे मार्तेल भी पिछली बातें भूल गया। अब वह एक अमीर आदमी था। उसने फिर किसी से प्रेम नहीं किया, और अविवाहित रहा। उसका जीवन बहुत ही साधारण ढग से कट रहा था। वह सुखी और शान्त था। अपनी प्रेमिका के पति या उस लडकी के पास से अब उसे कोई खबर नही मिलती थी।

एकाएक एक दिन सवेरे उसने सुना कि उसका प्रतिद्वन्द्वी—उसकी प्रेमिका का पति—मर गया है। यह समाचार सुन कर उसके हृदय मे एक विचित्र भाव—कुछ दुःख या पश्चात्ताप-सा—उठा। उस लडकी का क्या हुआ—वह तो उसकी अपनी ही सन्तान थी? वह उसके लिये कुछ कर सकता था? पूछताछ करने पर पता चला कि उसकी बुआ ने उसे आश्रय दिया है पर वे दोनो की दोनो बहुत तंग हालत मे हैं।

भविष्य का सर्वनाश, अपनी आशाओ का विध्वस—यह सब एक साथ ही उसकी समझ मे आ गये। केवल एक अभिलाषा उसके हृदय मे रह गई—अपने प्रेम की पूर्ति करने के लिये एक सन्तान की अभिलाषा। उसके कोई सन्तान नही थी।

दो वर्ष बीत गए। वह एक युवक से प्रेम करने लगी। वह बीस साल का एक सुन्दर नवयुवक था और उससे इतना प्रेम करता था कि अपने प्राण तक देने को तैयार रहता था। फिर भी वह बहुत दिनों तक अपने मन को दृढता से वश में किये रही। उस युवक का नाम था पियरे मार्तेल।

पर अन्त में एक बार जाड़े की ऋतु में रात के समय दोनो प्रेमी एकान्त मे, उस लड़की के ही कमरे मे, न जाने कैसे, पहुँच गये। वह उससे मिलने आया था और आग के पास एक नीची कुर्सी पर बैठा हुआ था। वे दोनो चुप थे। उनके ओंठ उस तीव्र इच्छा की आग में जल रहे थे जो उन्हे मिलाना चाहती थी। उनकी बॉहे एक दूसरे को कस लेने की आकाक्षा से कॉप रही थी।

वे दोनों अस्थिर, परेशान से थे। कभी-कभी एक दो शब्द कहते, फिर चुप हो जाते। पर जब उनकी ऑखे-चार होती तो सहसा हृदय धडकने लगते।

प्रकृति की बलवती शक्ति के सामने नीति और सदाचार की दीवार कब तक खड़ी रह सकती है?

न ज़ाने कैसे, उनकी ॲगुलियॉ एक दूसरे से मिलीं। इतना काफी था.. मन के अदम्य वेग ने उन्हे एक दूसरे की बॉहों में कस दिया।

थोडे दिनो के बाद युवती को मालूम हुआ कि वह एक नई दशा में है.. अपने पति से—या प्रेमी से? जानने का क्या उपाय था? शायद प्रेमी से ही।

इसके बाद एक भयानक आतङ्क उसके मन पर छा गया। उसे

प्रेमिका के रूप में देखने लगा। लड़की में मृत प्रेमिका की जो छाया थी उससे प्रेम करते-करते वह अपने आप को भूल गया। उसे इस बात के विषय में विचार करने की इच्छा भी नही रही कि वह उसकी अपनी ही पुत्री है। वह उससे दो तरह से प्रेम करता था—कभी उसे प्रेमिका समझ कर और कभी अपनी प्रेमिका का स्मृति-चिन्ह मान कर।

पर प्रायः इस लड़की को—जिससे वह दो तरह से, अजीब ढग का प्रेम करता था—ग़रीबी मे देख कर उसका हृदय रो उठता।

वह क्या करे? कुछ रुपया दे? पर किस हैसियत से। किस अधिकार से? एक सरक्षक बन कर? पर वह सरक्षक बनने योग्य, अधिक अवस्था का, नहीं दीखता था; सब कोई उसे लड़की का प्रेमी ही बताते। उसका किसी और आदमी से विवाह कर दे? यह विचार मन मे आते ही वह डर गया। फिर शान्त होकर उसने सोचा कि उससे कोई विवाह करना स्वीकार नहीं करेगा, क्योंकि वह ग़रीब अनाथ थी।

लड़की की बुआ समझ गई थी कि पियरे के मन मे क्या विचार थे। वह देख रही थी कि पियरे लड़की से प्रेम करता था। फिर वह किस बात की प्रतीक्षा कर रहा था? क्या वह स्वय यह बात जानता था?

एक दिन शाम को वे दोनों अकेले एक सोफे पर पास-पास बैठे हुए थे। वे धीरे-धीरे बातचीत कर रहे थे। सहसा उसने लड़की का हाथ अपने हाथ मे ले लिया—एक पिता की तरह। पर प्रयत्न करने पर भी वह उसके हाथ को छोड़ नहीं सका क्योंकि लड़की स्वयं अपना हाथ नहीं खींच रही थी। वह जानता था कि जितनी ही देर तक वह उसके हाथ को पकडे रहेगा, उतना ही उसका चित्त उसके वश के बाहर चला जायगा, फिर भी वह उसे नहीं छोड़ सका। एकाएक लड़की स्वय उसकी बाँहों में आ गई। क्योंकि वह भी उससे प्रेम करती थी, उसी तरह जैसे उसकी माँ ने प्रेम किया था,

उसे अपनी लड़की को देखने की, उसकी सहायता करने की, इच्छा हुई। लड़की की बुआ से उसने जान-पहचान कर ली।

उन लोगों को उसके नाम तक का पता न था। वह अब चालीस वर्ष का था, पर देखने मे अभी तक एक युवक मालूम पड़ता था। उन दोनों ने उसका स्वागत किया; पर, कही कोई सन्देह न करने लगे, इस डर से उसने यह नहीं बताया कि वह उस लड़की की माँ को जानता था।

जब उसने पहले-पहल उस लड़की को ड्राइंग रूम में आते हुये देखा तो वह घोर आश्चर्य तथा भय से काँप उठा। उसे जान पड़ा जैसे उसकी लड़की नही, उसकी मृत प्रेमिका, सामने खड़ी है!

उसकी उतनी ही आयु थी, वैसी ही आँखे, वही बाल, वही शरीर, वही मुस्कान, वही कण्ठ! समानता इतनी पूरी थी कि वह भ्रम में पड़ कर पागल-सा हो गया। हृदय की गहराई में दबा हुआ उसका अतीत प्रेम सहसा जाग उठा।

वह अपनी माँ की तरह सीधी-सादी और प्रसन्नचित्त थी। दोनों ने एक दूसरे से हाथ मिलाये और शीघ्र ही उनमें गहरी मित्रता हो गई!

अपने घर लौट कर आने पर उसे जान पड़ा कि पुराना घाव फिर से नया हो गया है। हाथो मे मुँह छिपा कर वह बहुत देर तक रोता रहा। वह अपनी मृत प्रेमिका के लिये रो रहा था—उसकी याद करके वह घोर शोक मे डूबने लगा।

अपनी लड़की के पास वह बार-बार जाने लगा। उसे बिना देखे, उसका मधुर कण्ठ-स्वर बिना सुने, उसके कपड़ों की सरसराहट का बिना अनुभव किये, वह जीवित नहीं रह सकता था। प्रायः उसे भ्रम हो जाता कि यह लड़की उसकी प्रेमिका है। वह मृत और जीवित के भेद को भूल बैठता। अपने भावो में, अपने हृदय में, अतीत की स्मृति को, मृत्यु को भूल कर वह अपनी लड़की को अपनी मृत

अनन्त निराशा, अनन्त सताप और अनन्त अकेलेपन के मार्ग मे ला खड़ा किया था, या मृत्यु के द्वार पर ला खड़ा किया था।

और फिर, वह स्वय भी तो उसको प्यार करता था। उससे प्रेम करने म उसे एक घोर भय भी होता था और आनन्द भी। वह उसकी पुत्री थी, यह हो सकता है। सृष्टि के एक निर्दय नियम ने, एक परिस्थिति की घटना ने, उसे उस लड़की का पिता बना दिया था, जिसके साथ कानून के अनुसार उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, जिसे वह उसकी माँ की तरह, उससे भी अधिक, प्यार करता था, मानो दोनों प्रेम उसके हृदय में इकट्ठे हो गये थे।

क्या वह सचमुच उसकी पुत्री थी! और फिर यदि थी भी, तो इससे क्या? ससार का कोई व्यक्ति इस बात को नही जानता।

मरते समय इस लडकी की माँ से उसने जो प्रतिज्ञा की थी, वह भी उसे याद आई। उसने कहा था, "आवश्यकता पड़ने पर वह पाप करने से भी नहीं डरेगा।"

और वह उससे प्रेम करता था, यद्यपि उसे अपनी घृणित-वासना पर व्याकुलता होती थी। फिर भी, मन मैं तीव्र दुःख होने पर भी, वह वासना के वश मे था। और पाप तो सदा मीठा लगता है।

कानून के अनुसार जो पिता था, और जो इस रहस्य को जानता था, वह तो मर चुका था। अब किसे पता चलेगा?

"ऐसा ही हो!" वह आप ही आप कह उठा, "यह निन्दनीय रहस्य मेरे हृदय को सदा छेदता रहेगा। पर वह कभी सन्देह नही कर सकती, और मैं अकेला ही इस भार को उठाऊँगा।"

उसने लडकी से विवाह का प्रस्ताव किया और विवाह हो गया।

× × ×

मैं नहीं जानता कि बाद मे वह सुखी हुआ या नहीं, पर उसकी सी परिस्थति में मैं भी वही करता जो उसने किया—सच मानिये।

उतनी ही उत्कटता से—मानो यह घातक मनोवेग उसने अपनी माँ से पाया हो।

आवेग मे भर कर उसने उसके सुन्दर बालों का चुम्बन किया, फिर ज्यों ही लडकी ने अपना सिर ऊपर उठाया कि उन दोनों के ओठ मिल गये।

कभी-कभी मनुष्य पागल हो जाते हैं—उन दोनों की इस समय यही दशा थी।

जब कुछ देर बाद वह बाहर सडक पर आया तो सीधा सामने चलने के सिवाय और क्या करे, यह उसकी समझ मे ही नहीं आया।

आप कहेगी, उसे आत्महत्या कर लेनी चाहिये थी। पर मैं पूछता हूँ, और वह लड़की? क्या वह उसे भी मार डालता?

वह उससे बहुत प्रेम करती थी। उसके प्रेम मे तीव्रता थी, जो उसने अपनी माँ से पाई थी, और जिसने उसे—एक कुमारी को—उस आदमी के बाहुपाश मे कस दिया था।

वह जो कुछ कर बैठी थी, हृदय के एक अदम्य उन्माद के वश में होकर कर बैठी थी—वही हृदय जो एक क्षण में सब कुछ भूल कर अपने आपको दे डालता है, जिसे उत्तेजनामय प्रकृति खींच ले जाकर प्रेमी के आलिङ्गन में बाँध देती है।

यदि वह आत्महत्या कर लेता तो उस लड़की का क्या होता? वह कलङ्कित और घोर दुःखी होकर मर जाती।

अब वह क्या करे?

उसे छोड़ दे? धन देकर किसी अन्य के साथ उसका विवाह कर दे? उसका हृदय टूट जायगा, वह न धन लेगी, न विवाह करना स्वीकार करेगी, और प्राण दे देगी। वह अपने आपको उसे समर्पित कर चुकी थी। इस मनुष्य ने उसका सर्वनाश कर दिया था, उसके जीवन का सुख छीन लिया था और इस प्रकार उसे अनन्त दुःख,

इन दोनों के भी कोई सन्तान नहीं थी, न उन्हे सन्तान की कोई इच्छा ही थी। वे अपना जीवन एकान्त मे और शान्ति से बिताना चाहते थे। उनका घर साफ-सुथरा, व्यवस्थित और शान्ति-पूर्ण रहता था, क्योंकि वे दोनों स्वयं नियमितता और सादगी से रहते थे। बच्चे होने से उनके इस प्रकार के जीवन मे, उनके घर मे, गड़बड़ होने लगेगी, इस बात का उन्हे डर था। निःसन्तान रहने के लिये शायद वे अपनी ओर से कुछ उपाय न करते, पर ईश्वर की कृपा से उनके कोई सन्तान हुई ही नहीं थी, इसीलिये वे सतुष्ट थे।

पर अपनी भतीजी को निःसंतान देख कर उन धनाढ्य बुआ जी को बड़ी चिंता रहती थी और वे उसे तरह-तरह के उपाय बताया करती थीं, जो उन्होंने स्वयं सन्तान पाने के लिये बहुत दिनों तक किये थे। उनके मित्रों और ज्योतिषियो ने उन्हे हजारों उपाय बताये थे, ऐसे उपाय जो कि कभी निष्फल नहीं जाते। पर अब बुआ जी की अवस्था इतनी हो चुकी थी कि सन्तान की आशा करना व्यर्थ था। इसलिये वे उन उपायों का उपयोग अपनी भतीजी के लिये करना चाहती थीं।

कुछ दिनों के बाद वे चल बसी। उनकी मृत्यु से बोनिन दम्पति को हार्दिक हर्ष हुआ। पर बाहर से उन्होंने शोक ही प्रकट किया।

उन्हे पता लगा कि बुआ जी एक वकील के पास अपना वसीयतनामा छोड़ गई हैं। अन्तिम सस्कार के बाद वे दौड़े हुए उस वकील के यहाँ गये और वसीयतनामा खोल कर पढ़ा। बुआ जी जीवन भर सन्तान पाने की चिंता में रही थीं और वही विचार वसीयतनामे मे भी थे। अपना दस लाख रुपया अपनी भतीजी की पहली सन्तान के नाम कर गई थीं। रुपये के सूद की आमदनी भतीजी और उसके पति के नाम थी। साथ ही यह भी शर्त थी कि तीन वर्ष तक सन्तान न होने पर सब रुपया दान-पुण्य मे खर्च कर दिया जाय।

यह सब पढ़ कर वे चकित और दुःखित हुए। बेचारा बोनिन

फ्रांस

दस लाख

लेखक—मोपासाँ

उस परिवार में केवल दो प्राणी थे, पति और पत्नी। पति सरकारी दफ़्तर मे क्लर्क था। वह अत्यन्त कर्तव्य-परायण और शुद्ध हृदय का था। उसका नाम था बोनिन। वह एक छोटे कद का, साधारण विचारों वाला युवक था; दुनिया के और सब लोगों से उसमें कोई विशेषता, कोई भिन्नता न थी। उसे बचपन मे धार्मिक शिक्षा दी गई थी और उसे अपनी ईमानदारी पर गर्व था। वह छाती ठोंक कर कहा करता—"मैं धर्म का पक्का अनुयायी हूँ, बहुत ही पक्का। पर मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ, पादरियों मे नहीं।" वास्तव में वह ईमानदार और भला आदमी था। वह ठीक समय पर दफ़्तर मे आता और ठीक समय पर घर लौट जाता। काम के समय वह कभी ख़ाली नहीं बैठता था और रुपये-पैसे के मामले मे वह कभी जरा-सी भी गड़बड़ी नहीं करता था। उसने एक गरीब क्लर्क की लड़की से, प्रेम के कारण, विवाह किया था; पर उस क्लर्क की बहिन के पास दस लाख रुपया था।

इस धनाढ्य स्त्री के कोई सन्तान न थी, जिसका उसे बड़ा दुःख रहता था। उसकी सम्पत्ति का मालिक अन्त मे उसकी भतीजी, बोनिन की पत्नी, के सिवाय और कोई नही हो सकता था। और यह बात उन दोनों पति-पत्नी के मन में चौबीसों घंटे घूमती रहती थी। उनके पड़ोसी और दफ़्तर के लोग भी जानते ही थे कि बोनिन परिवार को किसी न किसी दिन दस लाख रुपये अवश्य मिलेंगे।

खाना खाने के समय बोनिन की पत्नी प्रायः कहा करती, "हमारा खाना कितने मामूली ढग का है ! यदि हम अमीर होते तो बात ही कुछ और होती ।"

दफ़्तर जाने के समय बोनिन को उसकी छड़ी देते हुये वह कहती, "अगर हम लोगो को उन दस-लाख रुपयो का, दो हजार रुपया प्रतिमास, मिलता होता तो तुम्हे इस तरह की गुलामी करने की जरूरत न पड़ती ।"

वर्षा के दिन बाहर जाने के समय वह एक ठंडी साँस भर कर कहती, "अगर हमारे पास एक घोडागाडी होती तो मुझे ऐसे मौसम मे कीचड मे क्यों चलना पडता ?"

इसी तरह प्रत्येक अवसर पर, प्रतिक्षण, वह बोनिन को लज्जित और अपमानित करती और दस-लाख रुपये की हानि के लिये उसी को अपराधी ठहराती।

अन्त मे तङ्ग आकर एक दिन बोनिन उसे एक विशेषज्ञ डाक्टर के पास ले गया। बहुत देर तक पूछ-ताछ और विचार करने के बाद डाक्टर ने कहा कि उसे कोई खास बात नही दिखाई पड़ी, पर इस तरह के 'केस' बहुत होते हैं। मन और शरीर का एक-सा हिसाब है। कई पति-पत्नी एक दूसरे से मन न मिलने पर तलाक दे देते हैं। इसी तरह कुछ पति-पत्नी अपनी शारीरिक दशा के कारण एक दूसरे के अनुकूल न होने से भी अलग हो जाते हैं। यह सब बताने की फीस दो गिन्नी हुई।

इसके बाद बोनिन के घर में रोज महाभारत होने लगा। वे दोनो एक दूसरे से घृणा करने लगे। बोनिन की पत्नी ने यह कहना कभी बन्द नहीं किया कि पति के ही दोष से वह दस-लाख रुपयो से वञ्चित रही जाती है। कभी-कभी वह कहती, "अगर मैंने किसी और पुरुष से विवाह किया होता तो आज दो हज़ार रुपये प्रतिमास मुझे मिलते होते।"

बीमार पड़ गया और सात दिन तक दफ्तर न जा सका। अच्छा हो जाने पर उसे सन्तान पाने की चिन्ता हुई। वह दिन-रात इसी चिंता मे रहता, तरह-तरह के उपाय करता। बुआ जी जो उपाय बताया करती थी, उनका भी उपयोग करता। पर कोई फल न हुआ। वह पिता नहीं बन सका। वह धीरे-धीरे सूखने लगा, उसका शरीर पीला और रक्तहीन पडने लगा। तपेदिक के से लक्षण दिखाई देने लगे। अंत मे डाक्टर से सलाह लेने पर उसे शक्ति बढ़ाने के लिये निश्चिन्त रहने की और शान्त जीवन बिताने की सम्मति दी।

जिस दफ्तर मे वह काम करता था, वहाँ बोनिन की इस असफलता के बारे मे तरह-तरह की अफवाहे फैलने लगी। उसके साथ के क्लर्क प्राय: उससे भद्दे मजाक किया करते, तरह-तरह के भूठे, काल्पनिक उपाय बताते। एक-दो तो यहा तक बढ़ गये कि वसीयतनामे की शर्त पूरी करने मे बोनिन को सहायता देने का अपमानजनक संकेत भी करने लगे। एक दिन उसके साथी, एक लम्बे तगडे युवक ने मजाक-मजाक मे कह दिया कि वह बहुत निश्चित रूप से, और बहुत शीघ्र, बोनिन को सफल बना सकता है। इसे बोनिन नहीं सहन कर सका और उस युवक से लड पड़ा। वे दोनो पिस्तोले लेकर द्वन्द्व युद्ध के लिये तैयार हो गये, पर और लोगो ने बीच-बिचाव करा दिया। उन दोनो ने एक दूसरे से क्षमा मॉगी और हाथ मिलाये।

पहले वे एक दूसरे से साधारण रूप से परिचित थे। अब धीरे-धीरे उनमे मित्रता हो गई। थोडे दिनों मे वे बहुत घनिष्ठ मित्र हो गये, सदा साथ-साथ रहने लगे।

पर अपने घर मे पहुँचते ही बोनिन का जीवन दु:खमय हो जाता था। उसकी पत्नी उससे नाराज रहती, उसे चिढाती, तंग करती। इसी प्रकार दिन बीतने लगे और तीन वर्षों की अवधि मे से एक वर्ष निकल गया। उन्हे वह दस लाख रुपया पाने की आशा बहुत कम रह गई।

ज्यों-ज्यों अन्तिम दिन पास आता गया त्यों-त्यों वे दोनों और भी व्याकुल होते गये। निराशा और दुःख से वे पागल हो गये। इस समय किसी न किसी तरह वह दस लाख रुपया पाने के लिये वे खून तक करने को तैयार थे।

एकाएक एक दिन सवेरे बोनिन की पत्नी चमकते हुये चेहरे और मुस्कराती हुई आँखों से पति के पास पहुँची और उसके कन्धे पर हाथ रख कर, मानो उसकी आत्मा के अन्दर तक देखती हुई, धीरे-धीरे बोली, "मैं एक नई हालत में हूँ।"

सहसा यह सुन कर बोनिन का हृदय आवेग से धक-धक करने लगा और वह गिरते-गिरते बचा। पत्नी को हृदय से लगा कर उसने बार-बार चुम्बन किया, बच्चों की तरह उसका प्यार किया और आवेग से उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

दो महीने और बीत जाने पर उन्हें कोई सदेह नहीं रहा। तब वे डाक्टर के पास गये और उससे सार्टिफिकेट लेकर उस वकील के घर पहुँचे जिसके पास वसीयतनामा रखा था।

वकील ने स्वीकार किया कि तीन साल बीतने के पहले सन्तान के मौजूद होने से ही वसीयतनामे की शर्त पूरी हो जाती है, सन्तान उत्पन्न हुई हो, या न हुई हो। इसलिये अवधि बीत जाने के बाद भी जब सन्तान होगी तब रुपया अवश्य मिल सकता है।

थोड़े दिनों में उन के एक पुत्र हुआ।

× × ×

अन्त में वे अमीर ... हो गये।

लेकिन एक दिन शाम को जब बोनिन इस आशा में घर लौटा कि अपने मित्र मोरेल के साथ भोजन करेगा, तो उसकी पत्नी ने मामूली ढंग से उससे कहा, "मैंने मोरेल से यहाँ अब और आने को मना कर दिया है, क्योंकि वह मेरे प्रति बुरी दृष्टि रखता था।"

बोनिन कुछ देर तक कृतज्ञता भरी आँखों से पत्नी की ओर देखता रहा, फिर उसे अपने हृदय से लगा लिया। बहुत देर तक वे दोनों एक युवा, भले, ईमानदार दम्पति की तरह प्रेम की बातें करते रहे।

अब बोनिन मेरी... की पत्नी प्रेम में पड़ कर पतित होने ... प्रायः निन्दा किया करती है।

था, "कुछ लोग ऐसे अभागे होते हैं कि दूसरों का भी बना-बनाया खेल बिगाड़ देते हैं !"

खाना खाते समय, शाम को, रात को, सदा यही बातें सुन-सुन कर बोनिन घबड़ा उठा।

अन्त में कोई उपाय न देख कर, एक दिन झगड़े से बचने के लिये वह अपने मित्र उस क्लर्क को घर ले आया, जिससे कुछ दिन पहले उससे झगड़ा हुआ था। उसका नाम था मोरेल। थोड़े ही दिनों मे बोनिन परिवार के साथ मोरेल की बहुत घनिष्ठता हो गई। मोरेल की सलाह को वे दोनो सदा मानते थे।

तीन वर्षों मे से अब केवल छः महीने बचे थे। इसके बाद वह दस लाख रुपया दान कर दिया जायगा। धीरे-धीरे अपनी पत्नी के प्रति बोनिन का व्यवहार बदलने लगा। वह तरह-तरह के अपराध लगा कर, उसके दोष बता कर, उसे तग करने लगा। वह बार-बार कहता, "अमुक क्लर्क बहुत गरीब था, पर उसकी चतुर पत्नी ने उसकी दशा बदल दी। रेविंस्ट पॉच साल तक उम्मेदवारी करता रहा, पर अब वह अपने दफ़्र का प्रधान है।"

उसकी पत्नी कह उठती, "फिर क्या सब तुम्हारी तरह निठल्ले, बेकार लोग हैं ? तुमने तो कुछ भी नहीं किया ?"

बोनिन कधे सिकोड कर कहता, "क्या तुम समझती हो कि रेविंस्ट और सब लोगों से अधिक चतुर है ? नहीं, चतुर तो उसकी पत्नी है! उसी ने बड़े साहब को प्रसन्न कर लिया है, और वह जो चाहती है, उससे करा लेती है। कोई मनुष्य चाहे किसी दशा में रहता हो, बुद्धि होने पर सब काम बन जाते हैं।"

उसकी इस बात का क्या अर्थ था ? उसकी पत्नी क्या समझी ? इसके बाद क्या हुआ ?

तीन वर्ष की अवधि के दिन एक-एक करके बीतने लगे और ज्यों-

भी भयानक निश्चय किया। अवकाश पाकर बक्स से चुन-चुन कर सब से मूल्यवान् जवाहिरात की चोरी करने वाले चोर की तरह, उसने वहाँ के पुरुषों और स्त्रियों की स्मृति से चार स्वर्गीय शब्द निकाल लिये—'तुमसे प्रेम करता हूँ।'

यह आफत ढाकर, अपने सुन्दर गुलाबी ओठो से मुस्कराती हुई वह चली गई।

(२)

पहिले पुरुष और स्त्रियाँ इस अत्याचार को केवल आधा ही समझ सके। उन्हे कोई अभाव है; इसका अनुभव वे करने लगे, पर वह अभाव क्या है, यह नहीं जान सके। वे प्रेमी और प्रेमिकायें, जो बाग मे प्रेम-निवेदन करने मे मग्न रहा करते थे—पति-पत्नी, जो बन्द खिड़की और परदे की आड़ मे आपस में प्रेमालाप किया करते थे, अब चुप रह कर एक दूसरे के मुँह की ओर देखते रहते या आलिगन कर लेते। वे मन ही मन एक चिर परिचित वाक्य कहने की तीव्र इच्छा का अनुभव करते, पर वह वाक्य क्या है, इसका आभास भी उन्हे नहीं होता। वे चकित और बेचैन हो गये, पर एक दूसरे से उन्होने कोई प्रश्न नहीं पूछा। क्योंकि क्या पूछना चाहिये, यह वे नहीं जानते थे—उस अमूल्य वाक्य को वे इतनी पूरी तरह भूल गये थे। फिर भी अब तक उनको बहुत अधिक कष्ट नहीं हुआ था, क्योंकि एक दूसरे से कहने योग्य अन्य शब्द उनके पास थे—प्यार करने के बहुतसे ढग वे जानते थे।

पर हाय! उन पर गहरी उदासी छा जाने मे देर नही लगी। एक दूसरे से प्रेम करना, एक दूसरे को कोमल नाम से पुकारना और मीठी से मीठी भाषा मे बोलना उन्हे अर्थहीन लगने लगा। उनके मधुर चुम्बन और आलिङ्गन, वे एक-दूसरे के लिये मर जाने के लिये तैयार हैं, यह शपथ; या 'मेरी आत्मा, मेरे स्वप्न, मेरे राजा, या मेरी रानी!' ये सम्बोधन उनके चित्त को सन्तुष्ट नही कर पाते थे। उनके हृदय इन

प्रेम की भूली बातें

लेखक—कातुले मेन्देश

किसी समय एक बहुतही निर्दय परी ने, जो फूल की तरह सुन्दर, पर साँप की तरह दुष्ट थी, एक बड़े देश के प्रत्येक मनुष्य से बदला लेने की ठान ली। यह देश कहाँ था? पहाड़ पर या समभूमि पर, नदी के किनारे या समुद्र के? कहानी यह बात नहीं बताती। कदाचित् यह उस राज्य के निकट था जहाँ के दर्जी राजकुमारियों के वस्त्रों को चाँद और तारो से सजाने मे निपुण थे। और वह अपराध क्या था जिससे परी क्रोधित हो गई थी? इस विषय मे भी कहानी मौन है। कदाचित् राजकुमारी के नामकरण के समय वे उसकी स्तुति-प्रार्थना करना भूल गये थे। चाहे कोई भी कारण हो, यह निश्चित है कि वह परी बहुत ही क्रोधित हो गई थी।

वह सोचने लगी कि बदला कैसे लिया जाय। क्या वह अपने अधीन हज़ारों भूतों को भेज कर देश भर के राजभवनों और घरों मे आग लगाकर सबका नाश करा दे,—या वहाँ के सब फूलो को सुखा दे,—या सब युवतियों को बूढ़ी और कुरूप बना दे। वह चारों ओर से भयङ्कर पवन चला कर अनायास ही सब मकानो को गिरा दे सकती थी। उसकी आज्ञा से ज्वालामुखी पहाड़ उत्पन्न होकर सारे देश का अस्तित्व मिटा दे सकते थे, और सूर्य अपना रास्ता बदल सकता था, जिससे उस शापग्रस्त देश में धूप तक न निकलती। और उसने इससे

उसके दुःखी होने का कारण यह था कि वह अपनी एक कविता को समाप्त नहीं कर पा रहा था जिसे उसने उस दुष्ट परी के बदला लेने के एक ही दिन पहिले लिखना प्रारम्भ किया था। क्यों? क्योंकि संयोग से वह कविता 'तुमसे प्रेम करता हूँ।' इन्ही शब्दों के साथ समाप्त होती थी, और किसी दूसरी तरह से उसका समाप्त होना असम्भव था।

कवि ने अपना माथा पटका, दोनो हाथों के बीच सिर थाम लिया, और अपने आपसे कहा—"क्या मैं पागल हो गया हूँ?" यह निश्चित था कि वह उन शब्दो को पा गया था जो उस अन्तिम वाक्य के पहिले आवश्यक थे। उसके उन शब्दो के पा जाने का प्रमाण यह था कि जिस तुक के साथ वे शब्द जाते, उन्हे वह पहिले ही लिख चुका था। अब वही तुक उन शब्दो के लिये प्रतीक्षा कर रही थी, नहीं-नहीं, उनको चिल्ला-चिल्ला कर पुकार रही थी; वह अन्य शब्दो को नहीं चाहती थी, उसी तरह जैसे किसी प्रेमी के ओंठ केवल अपनी प्रेमिका के ओठो से मिलने की व्याकुलता से प्रतीक्षा करते हैं। और इस अत्यावश्क वाक्य को वह भूल गया था, वह स्मरण ही नहीं कर सका कि वह कभी उसे जानता भी था। तब कवि उठ कर जगल के किनारे एक निर्मल झरने के निकट जा बैठा, जहाँ चाँदनी रात्रि मे परियाँ नाचती थी और घोर दुःख से व्यथित होकर निरन्तर सोचने लगा। कभी-कभी निराश होकर वह मन में कहता—"अवश्य ही इसमे कोई रहस्य है।" कविता की पूर्त्ति मे विघ्न पड़ने पर कवियो को जो दुःख होता है, उसका अनुमान भी करना कठिन है।

(४)

एक प्रभात मे, जब वह एक पेड़ की शाखा के नीचे बैठा हुआ था, उसी दुष्ट, निर्दय परी ने उसे देखा और उसके प्रेम में मुग्ध हो गई। परी तो कोई मामूली स्त्री नहीं, वह परिचय की प्रतीक्षा कभी नहीं करती। जितनी शीघ्रता से तितली गुलाब का चुम्बन करती है, उससे

सब से उत्कृष्ट और मधुर किसी एक वाक्य को कहने या सुनने की आवश्यकता बहुत तीव्रता से अनुभव करते, और उस वाक्य मे जो असीम आनन्द था, उसकी कटु स्मृति के साथ उन्हे इस बात पर घोर दुःख भी होता कि वे उसे अब कभी कह या सुन नहीं सकेंगे।

इस विपत्ति के आने के साथ ही उनमे परस्पर झगड़ा भी शुरू हो गया। कितनी ही इच्छा होने पर भी वाणी द्वारा उस वाक्य को व्यक्त करने मे असमर्थ होने के कारण उन्हे अपना सुख असम्पूर्ण प्रतीत होता था, और प्रेमी अपनी प्रेमिका से और प्रेमिका अपने प्रेमी से उसी वस्तु की—वह वस्तु क्या है, यह बिना जाने और बिना बताये ही—याचना करने लगे, जो उनमे से कोई भी नहीं दे सकता था। जैसा उनका हृदय चाहता था उस ढग से प्रेम प्रकट न किये जाने के कारण वे एक दूसरे के प्रति उदासीनता और विश्वास-घात की शिकायतें करने लगे।

अब प्रेमी और प्रेमिकाओ ने बाग के एकान्त कुजो मे एक-दूसरे से मिलना बन्द कर दिया, पति-पत्नी अब एक दूसरे से दूर बैठते—उनके बन्द कमरों मे अब केवल सूखे वार्त्तालाप की प्रतिध्वनि होती। क्या प्रेम के बिना सुख और आनन्द मिल सकता है? वह देश, जो उस परी के द्वारा शापग्रस्त हुआ था, यदि युद्ध से ध्वस्त हुआ होता, या महामारी से नष्ट हुआ होता, तो भी इतना उजाड़, दुःखी और उदास नहीं होता, जितना इन चार भूले शब्दो के कारण हो गया।

(३)

उसी देश मे एक कवि था। उसकी दशा और अन्य लोगों से भी अधिक बुरी और करुणाजनक थी। यह बात नही थी कि अपनी सुन्दर प्रेमिका से वही खोया हुआ वाक्य न कह पाने या उसकी वाणी से न सुन पाने के कारण वह निराश और दुःखी हो रहा था। उसकी कोई प्रेमिका नहीं थी। वह केवल अपनी धुन मे ही मस्त रहता था।

"मेरी रानी !" कवि ने कहा, "तुम दुःखित क्यो हो गई ? बात क्या है ?—हम लोग अपने आनन्द के बीच इतने सुखी हैं ! कहो, सौन्दर्य की रानी, तुम और क्या चाहती हो ?"

पहिले उसने कोई उत्तर नहीं दिया, पर जब कवि हठ करने लगा, तब वह एक ठडी साँस लेकर बोली—"हाय ! जो बुराई दूसरे पर की जाती है उसकी पीडा से कोई बच नहीं सकता। मैं इसलिये दुःखित हूँ कि तुमने मुझसे कभी नहीं कहा—'तुमसे प्रेम करता हूँ'।"

कवि ने इन शब्दों का उच्चारण नही किया, परन्तु इस तरह अपनी कविता की अन्तिम पंक्ति पाकर वह आनन्द से चिल्ला उठा। परी ने उसे अपने स्वर्गीय प्रासाद मे, जिसके चारों तरफ तारों से चमकते कमलों का बाग था, रोक रखने की निष्फल चेष्टा की। पर कवि नहीं रुका। वह पृथ्वी पर लौट आया। उसने अपनी कविता सम्पूर्ण करके प्रकाशित की, जिसमें उस अभागे देश के नर-नारी उन खोये स्वर्गीय शब्दो को फिर पा सके।

अब फिर बाग के एकान्त कुजो मे प्रेमी और प्रेमिकाओं का मिलन होने लगा और पति-पत्नियों के कमरों से प्रेम के आवेग से भरा वार्त्तालाप सुनाई देने लगा।

कविता के ही कारण चुम्बन इतना मधुर है; और प्रेमी और प्रेमिकायें ऐसी एक भी बात नही कहते जो कवियों ने नहीं गाई हो।

भी अधिक तेजी से उसने कवि के ओठों पर अपने ओठ रख दिये, और कवि को, यद्यपि वह अपनी कविता में ही मग्न था फिर भी, उस प्यार की स्वर्गीयता अनुभव करनी ही पड़ी। वहाँ तारों से चमकदार पखों से युक्त घोड़ों वाला एक सोने का रथ आया; कवि और परी के बैठते ही वह रथ पृथ्वी छोड़ कर नीले और गुलाबी प्रकाश के भीतर से उड़ने लगा। और वे दीर्घ, दीर्घकाल तक एक-दूसरे के प्रेम में मग्न रहे—अपने चुम्बन और हास्य के सिवाय सब कुछ भूल कर! यदि वे एक क्षण के लिये अपने अधरों के मिलन से विरत होते और एक दूसरे की आँखों की ओर देखते, तो केवल प्रेम के योग्य अन्य किसी विनोद का आनन्द लेने के लिये। देवदूत बैंगनी मखमल की पोशाक पहिने, परियाँ धुँधले रंग की साड़ियाँ पहिने, अदृश्य बाजे के प्रति ताल और छन्द पर उनके सामने नाचती रहती, उड़ते हाथ, जिनमें बाहें नहीं थी, उनके लिये लालमणि की बनी डालियों में भर-भर कर फल लाते; श्वेत गुलाब-सी सुगन्धित, कुमारी के स्तनों के आकार के। परी को और अधिक आनन्दित करने के लिये, कवि वीणा बजा कर सुन्दर से सुन्दर कवितायें सुनाता, जो उसकी कल्पना बना सकती थी।

वह परी ही तो थी, उसने एक सुन्दर नवयुवक की वाणी से प्रतिदिन नये-नये गाने सुनने का यह आनन्द कभी नही पाया था। गाते-गाते कवि जब चुपचाप हो जाता, और वह उसकी साँस अपने निकट अनुभव करती, अपने बालों के भीतर से साँस बह जाने का अनुभव करती, तब वह आवेशभरी अधीरता से अपने को कवि के निकट समर्पण करने के लिये व्याकुल हो उठती।

उनके सुख का मानो अन्त नही था। एक-एक करके कितने ही दिन बीत गये, किन्तु उनके आनन्द में बाधा नहीं पड़ी। पर फिर भी वह कभी-कभी उदास हो उठती, और चुप बैठ कर हाथ पर गाल रख कर कुछ सोचती रहती।

ही मैं एक कर्नल या जनरल होकर लौट आऊँगा,—राज-दरबार मे एक ऊँची नौकरी भी मिल सकती है।"

माता बोली—"अच्छा? नौकरी कब मिलेगी?"

मैंने कहा—"जरा धीरज रक्खो, समय पर सब देख सकोगी। तब मेरी सब लोग कितनी इज्जत करेंगे, मन ही मन मुझ से कितनी ईर्ष्या करेंगे! सब मुझे टोपी उठा कर अभिवादन करेंगे! तब बहिनो की ऊँचे खान्दानों मे शादी करूँगा, अपनी शादी हेनरियेट से करूँगा। फिर हम सब एक साथ मिल कर सुख और चैन से अपनी ब्रिटैनी की जमींदारी मे रहेंगे।"

माँ बोली—"तो यह सब अभी क्यो नहीं कर रहे हो, बेटा? तुम्हारे पिता तो तुम्हारे लिये काफी सम्पत्ति छोड़ गये हैं। आस-पास के किसी भी आदमी की इतनी अच्छी जमीदारी या इतना सुन्दर मकान है? तुम्हारी प्रजा कितनी आज्ञाकारी है! तुम जब गाँव की सड़को पर निकलते हो, तब एक भी आदमी ऐसा नही होता, जो टोपी उठा कर तुमको अभिवादन न करता हो। हम लोगो को छोड कर मत जाओ, बेटा, आत्मीय-जनों के साथ रहो। नही तो लौटने पर शायद तुम मुझको देख नही पाओगे। मनुष्य का जीवन बहुत जल्दी खतम हो जाता है। व्यर्थ यश के पीछे दौड़ कर अपना समय नष्ट न करो। नाना प्रकार की चिन्ता, दुःख और कष्टो से जीवन को भारी मत करो। जीवन बडा मीठा है, बेटा, और ब्रिटैनी के सूर्य का प्रकाश बहुत उज्ज्वल है।"

यह कह कर मेरी माता मुझे खिड़की के पास ले गई। उन्होने बाग के पेड़ों की ओर अँगुली उठा कर मुझे दिखाया। पेडो की डालियाँ फलों और फूलों से लदी हुई थीं, हवा फूलों की गंध से मधुर थी।

नौकर-चाकर बगल के कमरे मे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे

फ्रांस

जीवन का मूल्य

लेखक—यूजेन स्क्राइब

जोजेफ ने कमरे का दरवाजा खोल कर भीतर प्रवेश किया। वह खबर देने के लिये आया था कि बग्घी तैयार है। मेरी माता और बहिनों ने मुझे हृदय से लगा लिया। वे कहने लगीं—"अभी भी समय है, तुम अपना विचार बदल दो। हमारे साथ रहो, उतनी दूर जाने की क्या आवश्यकता है?"

मैंने कहा—"माँ, मैं एक ऊँचे घराने का लड़का हूँ। मेरी उम्र बीस साल की हो चुकी, मातृभूमि मुझे बुला रही है। मुझे यश कमाना है—वह चाहे सामरिक विभाग मे हो, या राज-सभा मे हो। लोगो के मुँह से मैं अपना नाम सुनना चाहता हूँ—मैं प्रसिद्धि चाहता हूँ।"

"और जब तुम दूर चले जाओगे, बरनार्ड, तब तुम्हारी बूढ़ी माँ की क्या दशा होगी?"

मैंने कहा—"तुम अपने पुत्र की सफलताये सुन-सुन कर आनन्द और गर्व से प्रफुल्लित हुआ करोगी।"

"और अगर तुम किसी लड़ाई मे मारे जाओ?"

"अगर मर भी जाऊँ तो उससे क्या? जीवन तो एक स्वप्न के सिवाय और कुछ नही है। बीस साल की उम्र का एक सज्जन का लड़का केवल यश का ही स्वप्न देखता है। कुछ भी शका मत करो, माँ, मेरी कुछ भी हानि नहीं होगी। देख लेना—कुछ सालों के बाद

के सिवाय और कुछ भी नहीं सोच सका। पर जैसे-जैसे परिचित दृश्य दृष्टि के बाहर होते गये, वैसे-वैसे ये सब चिन्तायें भूल कर यश और प्रसिद्धि के स्वप्नो मे डूबने लगा। कितनी ही बाते सोच डालीं! कितनी ही आकाक्षाओं के फूल चयन करके मन की डाली भर डाली। कितनी ही कीर्त्ति उपार्जन कर डाली। भाग्य अनगिनती धन और मान बरसाने लगा, मैंने सब-कुछ ले लिया। मैं ड्यूक हो गया, एक प्रान्त का गवर्नर हो गया। अन्त मे जीवन की संध्या मे जब मैं अपने लक्ष्य पर पहुँचा, तब मै फ्रासीसी साम्राज्य के प्रधान सेनापति का पद पा गया। नौकर के सीधे-सादे भाव से "जनाब!" कह कर पुकारने पर, मेरा वह सुख-स्वप्न टूटा और मैं फिर इस मिट्टी की दुनिया मे आ पहुँचा।

फिर दूसरे दिन बग्घी पर सवार होकर चला, फिर स्वप्नो मे डूब गया। कई दिनों का सफर था।

अन्त मे सेदाँ मे आ पहुँचा। मैं सि—के ड्यूक से मिलने की आशा से यहाँ आया था। वे मेरे पिता के मित्र हैं। महीने भर के बाद उनके साथ राजधानी जाने की मैं आशा कर रहा था। वे मुझे राज-दरबार से परिचित करा देंगे, और कम से कम सेना मे मुझे एक नौकरी दिलवा देंगे।

मैं संध्या के समय सेदाँ मे पहुँचा। ड्यूक शहर से कुछ दूर पर अपने भवन मे रहते थे, इसलिये उस समय उनके पास जाने का समय नहीं था। दूसरे दिन उनसे मिलने का निश्चय करके मैं शहर के सबसे अच्छे होटल में जा टिका।

भोजन आदि करके ड्यूक के भवन मे जाने का रास्ता पूछा।

मेरे निकट ही एक युवक सैनिक बैठा था। उसने कहा—"यह तो आपको कोई भी बता सकता है। सब लोग उस मकान को जानते

दुःखित और मौन थे । उनकी नीरवता ही मानो कह रही थी—"मालिक, हम लोगों को छोड़ कर न जाइये।"

मेरी बहिन हर्टेंस ने मुझे हृदय से लगा कर प्यार किया। छोटी बहिन एमेली कमरे के कोने मे बैठ कर तस्वीरो की एक पुस्तक पढ़ रही थी। वह भी पास आकर पुस्तक को मेरे हाथ मे देकर बोली—"भैया, इसे पढ़ो।"

पर मैंने सबको हल्के धक्के से हटा कर कहा—"मैं बीस साल का हो चुका हूँ। मै एक सज्जन का लड़का हूँ। यश और प्रसिद्धि कमाने के लिये मुझे जाना ही है। तुम लोग मुझे मत रोको।"

और मै झटपट नीचे उतर कर बग्घी पर जा बैठा। ठीक उसी समय जीने पर एक युवती दीख पड़ी। वह मेरी प्रेमिका थी—उससे मेरी सगाई हो गई थी। वह रोई नहीं, एक भी बात नहीं बोली; पर मैं साफ देख पाया कि उसकी देह कॉप रही थी और चेहरा पीला था। उसने मुझे अपना सफेद रूमाल हिला करके विदा दी, पर एक क्षण के बाद वह बेहोश होकर गिर पडी। मैं बग्घी से उतर कर—दौड़ कर उसके पास गया। मैंने उसे गोद मे लेकर, हृदय से लगा कर सदा के लिये उसके प्रेम का दास बने रहने की प्रतिज्ञा की। जब उसका होश लौट आया, तो उसे माता की गोद में देकर दौड कर बग्घी में जा बैठा। और एक बार भी पीछे की ओर न देख कर मैं बग्घी बढ़ाता हुआ चला ही गया।

पीछे की तरफ मुड़ कर उस किशोरी का वह विषाद भरा चेहरा देखने पर मुझे शायद जाने की इच्छा छोड़नी पड़ती। कुछ क्षणों के बाद ही हम लोग बड़ी सड़क पर आ गये और उसी पर से चलने लगे।

मैं बहुत देर तक माता, बहिनों और किशोरी प्रेमिका की बात

दूसरे दिन सुबह उठ कर मैं ड्यूक से मिलने के लिये उनके किले की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँच कर देखा कि वह 'गॉथिक' ढग का विशाल भवन है, पर विशेषता उसमे कही कुछ भी नही है। दूसरे किसी समय उसे देखने पर मैं अधिक ध्यान नहीं देता, पर पिछली रात्रि को ही इस भवन के विषय मे इतने किस्से सुन चुकने पर मैं कौतूहल के साथ इस किले को देखने लगा।

एक बूढ़े नौकर ने दरवाजा खोल दिया। मैंने कहा—"मैं ड्यूक से मिलने के लिये आया हूँ।"

बूढ़े ने कहा कि उसके मालिक इस समय मिलने को राजी होगे या नही, यह वह नहीं कह सकता। मैंने उसे अपना नाम छपा हुआ 'कार्ड' दिया और उसे ड्यूक के पास ले जाने के लिये कहा। बूढा मुझे एक विशाल, आधे अँधेरे कमरे मे बैठा कर चला गया। वह कमरा पुराने तैल-चित्रो और शिकार के चिह्नों से शोभित था। मैं बहुत देर तक बैठा रहा, पर वह नौकर आता नही दीखा। चारों तरफ की अटूट नीरवता मुझे पीड़ित करने लगी, मेरा जी ऊबने लगा। जब बैठे-बैठे कमरे की सब तस्वीरें देख डाली, छत की कड़ियाँ दो-तीन बार गिन डाली, तब दरवाजे के पास एक आवाज सुनाई दी।

देखा—वह दरवाजा हवा के धक्के से खुल गया था। उसकी दूसरी तरफ एक सजा हुआ कमरा था, उसमे दो बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थी, और एक शीशा लगा दरवाजा। उस दरवाजे के बाहर एक विशाल फुलवारी थी। मैं उस कमरे के भीतर कई कदम जाकर, सहसा एक दृश्य देख कर रुक गया। मेरी ओर पीठ करके एक सज्जन एक आराम-कुर्सी पर लेटे हुये थे। वे उठ कर बैठ गये और मेरी ओर न देखकर दरवाजे की ओर भागते हुये गये। उनकी आँखों से लगातार आँसू वह रहे थे, उनका चेहरा गहरी निराशा से अँधेरा था। वे कुछ क्षणो तक दरवाजे के सामने हाथो से मुँह ढँक कर खडे रहे; फिर लम्बे-लम्बे कदम

हैं। उसी मकान में हमारे प्रसिद्ध वीर, प्रधान सेनापति फ़बेयर की मृत्यु हुई थी।"

दो सैनिकों में साक्षात् होने पर युद्ध की बातें होना अनिवार्य है। हम लोगो ने भी सेनापति फबेयर की बातें शुरू कर दीं। उनके युद्ध के क़िस्से, उनकी अमर कीर्तियाँ, उनकी विनयशीलता—सब विषयो पर बातें होती रहीं। राजा चौदहवें लुई ने उनको सर्वोच्च ख़िताब देना चाहा था, पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उनका भाग्य सबसे अधिक विस्मयजनक था। वे साधारण सैनिक थे, बहुत ग़रीब घर के लड़के थे, उनके पिता एक छापेख़ाने में नौकरी करते थे। पर नियति ने उनको फ़्रांस के प्रधान सेनापति के पद पर प्रतिष्ठित किया। इतनी सफलता किसी ने भी नहीं पाई, इसीलिये मूर्ख लोग कहते कि उनकी उन्नति की जड़ मे किसी अलौकिक शक्ति ने कार्य किया है। उनके विषय मे नाना प्रकार के क़िस्से सुने जाते। कहावत है कि वे बचपन से जादू-टोना सीखते थे, शैतान से उन्होंने मित्रता की थी। हम लोगो के होटल का मालिक एक मूर्ख ग्रामीण था। उसने कहा कि ड्यूक के जिस भवन मे प्रधान सेनापति की मृत्यु हुई थी, वहाँ अक्सर एक काले रंग का आदमी दीखता था। उसे कोई भी नही जानता था। ड्यूक के नौकरों ने उसे प्रधान सेनापति के कमरे में प्रवेश करके उनकी आत्मा को लेकर अदृश्य होते देखा है। अभी तक प्रधान सेनापति की मृत्यु के दिन भवन के भीतर वह काले रंग का आदमी दीख पड़ता है। वह हाथ मे एक जलती हुई मशाल लेकर घूमता है। वह मशाल ही प्रधान सेनापति की आत्मा है। बूढ़े का क़िस्सा हम लोगो को अच्छा लगा। एक बोतल कीमती शराब मँगा कर हम लोगों ने फबेयर के उस काले रंग के मित्र को चढ़ा कर पी। उनकी तरह युद्ध मे विजय और पद की उन्नति पाने के लिये उस आदमी की सहायता के लिये प्रार्थना भी की।

था, जो इसके पहिले मैंने और किसी के चेहरे पर नहीं देखा था। उनके ललाट पर मानो दुर्भाग्य का टीका अंकित था। उनके चेहरे का रंग बिल्कुल पीला था, आँखे उज्ज्वल और तीक्ष्ण, ओठो पर बीच-बीच में दानवीय मुस्कान खिल उठती थी।

उन्होने कहना शुरू किया—"मैं तुमसे जो कुछ कहने जा रहा हूँ, उस पर शायद तुम विश्वास नहीं करोगे, मै स्वय ही कभी-कभी विश्वास नहीं करता। अपने को समझाने की कोशिश करता हूँ कि इस तरह की घटना हो नहीं सकती, पर विश्वास किये बिना कोई चारा ही नही। हम लोगो के चारो तरफ़ ऐसी बहुत-सी चीजे हैं, जिनका अर्थ समझने की सामर्थ्य हम लोगो मे नहीं है, पर उन सब पर विश्वास करने को हम मजबूर हैं।"

एक बार अपने माथे पर हाथ फेर कर उन्होने फिर कहना शुरू किया—"मैं इसी किले मे पैदा हुआ हूँ। मेरे और दो बड़े भाई थे, उनके ही भाग्य मे परिवार का धन, सम्पत्ति मान और इज्जत—सब की सब बदी थी। पुजारी का काम पाने के सिवाय, मुझे और कोई आशा नहीं थी। पर मेरा दिमाग सदा यश, प्रसिद्धि और धन की चिन्ता से भरा रहता था, आशा और आकाक्षा से मेरा हृदय कम्पित रहता था। वह मानहीन जीवन मुझे बहुत ही दुःखद प्रतीत होता था। मैं दिन-रात केवल सोचता रहता था कि कैसे यश और प्रसिद्धि मिल सकती है। इसके लिये मैं कोई भी कीमत देने के लिये तैयार था। और इसी की चिन्ता मे मैंने अपना सब सुख और प्रमोद खो दिया था। मेरे निकट वर्त्तमान का कोई मूल्य नहीं था, मै केवल भविष्य की चिन्ता में दिन काट रहा था। पर भविष्य बहुत ही अँधेरा लगता था, क्योंकि मेरी उम्र तीस साल की हो गई थी; और उस समय तक मैं कुछ भी नहीं कर पाया था। इसी समय हमारी राजधानी मे कई प्रसिद्ध साहित्यिको का उदय हुआ, उनकी प्रसिद्धि हमारे इस

फेंक कर, कमरे की एक ओर से दूसरी तरफ चहल-कदमी करने लगे। मुझे देख कर वे सहसा चौंक कर रुक गये। उनका सारा शरीर काँपने लगा। मैं भी इस तरह बिना कहे-सुने एकाएक कमरे मे आ जाने से घबरा गया था। चले जाने का विचार करके मैंने किसी तरह क्षमा माँगी।

तब उन्होंने मेरे निकट आकर, झट मेरा एक हाथ पकड़ कर भारी स्वर से पूछा—"तुम कौन हो? क्या चाहते हो?"

मैं बहुत डर गया था, फिर भी अपना परिचय देकर कहा—"मैं अभी-अभी ब्रिटैनी से यहाँ आ पहुँचा हूँ।"

"हाँ, हाँ, मुझे मालूम है,"—कह कर उन्होंने आलिंगन किया और सोफे पर अपने पास बिठा कर मेरे पिता, मेरे परिवार, सबकी बातें कहने लगे। वे सबको अच्छी तरह जानते हैं, यह देख कर मैंने सोचा कि यही शायद किले के मालिक हैं।

मैंने पूछा—"क्या आप ही श्रीयुत—हैं?"

उन्होंने मेरी ओर अद्भुत दृष्टि से देख कर कहा—"किसी समय था तो, पर इस समय मैं कोई भी नहीं।" मुझे बहुत चकित देख कर बोले—"युवक, तुम मुझसे कुछ भी न पूछो।"

मैंने लज्जित-भाव से कहा—"इच्छा न रहने पर भी मैंने आपका कष्ट और दुःख देख पाया है। क्या मेरी मित्रता और सेवा आपके कष्ट को कुछ कम नही कर सकती है?"

उन्होंने कहा—"हाँ, तुम्हारी बात सही है। यद्यपि तुम मेरी हालत मे कोई भी परिवर्त्तन नहीं कर सकोगे, फिर भी मैं अपना अन्तिम संकल्प और इच्छा तुमसे कह सकूँगा। इसके सिवाय मैं तुमसे और कुछ भी नही चाहता।"

वे उठ कर दरवाजा बन्द कर आये। मैं काँपती देह से उनकी बातों की प्रतीक्षा कर रहा था। उनके चेहरे पर एक ऐसा भाव

प्रेरणा मिली। फिर मैंने कई पुस्तके प्रकाशित की, और उन सभी मे मुझे बहुत सफलता मिली। सब अखबारों मे मेरी प्रशसा होने लगी, सैकड़ों लोग मुझसे मिलने आने लगे। मैं जिस नये नाम से लिख रहा था, वह सारे देश मे फैल गया। तुम भी मेरी पुस्तके और लेख पढ कर बहुत आकर्षित हुये होगे।"

मैंने बहुत चकित होकर पूछा—"तब क्या आप इस किले के मालिक नहीं हैं?"

उन्होंने गम्भीर भाव से कहा—"नही।"

मैं सोचने लगा, क्या ये कोई प्रसिद्ध लेखक हैं—वलटेयर या मारमोएटेल?

अपरिचित सज्जन ने एक गहरी साँस लेकर घृणा-सूचक मुस्कान के साथ कहा—"पर साहित्यिक प्रसिद्धि मेरे चित्त को अधिक दिनो तक तृप्त नहीं रख सकी। मैं और ऊँचे यश का इच्छुक हो उठा। योगो मेरे साथ पेरिस मे आया था; वह सदा ही मुझ पर तीक्ष्ण दृष्टि रखता था। मैंने एक दिन उससे कहा—'यह वास्तव में यश नहीं है, युद्ध से जो नाम होता है उसके बराबर और कुछ नही है। लेखक या कवि होने से क्या फायदा? सेना के नेता होने पर कुछ काम बन सकता है। एक प्रसिद्ध सेनापति होने के लिये मैं अपने जीवन के और दस साल देने को तैयार हूँ।'

"योगो ने कहा—'अच्छी बात है। मैं तैयार हूँ। याद रखना।'"

मेरे चेहरे पर शायद गहरे अविश्वास और विस्मय का भाव प्रकट हुआ, क्योंकि सज्जन ने रुक कर कहा—"युवक, मैंने पहिले ही तुमसे कहा था कि तुम मेरी कहानी पर विश्वास नही करोगे। यह मुझे भी एक बुरे स्वप्न की तरह लगती है, पर मैने जो सफलता और यश प्राप्त किया वह स्वप्न नहीं है। मैंने भीषण युद्धो मे हजारो सैनिकों का नेतृत्व किया है। कितने ही दुश्मनों की सेना का नाश करके

गॉव में भी आ पहुँची । मैं सोचने लगा कि अगर मैं साहित्य के क्षेत्र मे प्रसिद्धि पा सकूँ, तो जीवन बहुत सुखमय हो । मेरे दुःखो का साथी था एक हब्शी नौकर, वह मेरे जन्म के पहिले से ही मेरे परिवार मे नौकरी कर रहा था । हमारे आस-पास उससे अधिक बूढा और कोई नही था । यह कब हमारे घर मे आया था, यह किसी को भी याद नहीं था । गॉव के लोग कहते थे कि वह सेनापति फबेयर को जानता था, उनकी मृत्यु के समय भी वह था । अनेक लोगों की तो यह धारणा थी कि वह मनुष्य नही, शैतान का अनुचर था ।"

सेनापति फबेयर का नाम सुन कर मैं चौक उठा । सज्जन ने रुक-कर मुझसे पूछा कि मैं क्यो इतना विचलित हुआ ।

"नहीं, मैं विचलित नही हुआ हूँ"—कह कर मैंने उनकी बात टाल दी । पर मन ही मन समझा कि इसी हबशी नौकर की बात होटल के बूढ़े मालिक ने कही होगी ।

किले के मालिक फिर कहने लगे—"मैं उससे अपने सारहीन जीवन की बातें कहकर ख़ूब रोया-पीटा । मैंने कहा, 'मैं अपनी आयु से दस साल दे देने के लिये तैयार हूँ, अगर कोई मुझे प्रथम कोटि के लेखको मे स्थान दिला सके ।'

"योगो ने कहा—'दस साल कम नही हैं । तुम कम कीमत की चीज के लिये अधिक कीमत दे रहे हो । खैर, मैंने तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । अपनी प्रतिज्ञा याद रखना, मैं अपनी बात याद रक्खूँगा ।'

"मैं उसे इस तरह बातें करते सुन कर बहुत चकित हुआ । पहिले सोचा कि बुढ़ापे के कारण उसकी बुद्धि लुप्त हो गई है । मैं उसकी बात पर ध्यान न दे कर मुस्करा कर चला गया । कुछ दिनो के बाद मैंने राजधानी की यात्रा की । वहाँ प्रख्यात साहित्यिको से घनिष्टता करने का अवसर पा गया । उनके उदाहरण से मुझे उत्साह और

आयु दी थी, आपकी तीस साल की उम्र मे मैंने आपसे कारोबार शुरू किया था।'

"मैंने बहुत भीत होकर कहा—'क्या तुम सच्ची बात कह रहे हो ?'

" 'हॉ मालिक, आपने पॉच सालो तक धन, मान और प्रसिद्धि के साथ जीवन बिताया है, इसका मूल्य आपने अपनी पच्चीस साल की आयु से चुकाया है। आपकी आयु को मैंने मोल ले लिया है। वे पच्चीस साल कट कर मेरे जीवन मे जुड जायँगे।'

"मैंने कहा—'अच्छा ? क्या यही तुम्हारी सहायता का मूल्य है ?'

"योगो ने जवाब दिया—'हॉ, केवल तुम्हीं को नहीं, और भी बहुत लोगो को, चिरकाल से, मैं इसी मूल्य पर सहायता करता आ रहा हूँ। फबेयर का नाम सुना है ? वे भी मेरे आश्रय मे थे।'

"मैंने चिल्ला कर कहा—'चुप ! चुप ! यह कभी नहीं हो सकता।'

"योगो बोला—'तुम जो कुछ चाहो सोच सकते हो। पर तैयार हो जाओ, तुम्हारी आयु केवल आध घटा और शेष है।'

" 'क्या मुझसे मजाक कर रहे हो ?'

" 'नहीं। तुम स्वय ही हिसाब करके देख लो। तुम्हारी आयु इस समय पैंतीस की है, और तुमने मुझको पच्चीस साले बेच दी हैं। कुल मिला कर साठ वर्ष हुये। यह प्रस्ताव तुम्हीं ने किया था, अपना प्राप्य तुम पा गये हो, अब जो मेरा है वह मैं लूँगा।' यह कह कर वह जाने लगा। मुझे लगा कि मेरी सारी शक्ति का अन्त हो रहा है, थोड़ी ही देर मे मेरा जीवन निःशेष हो जायगा।

" मैं दुर्बल स्वर से कह उठा—'योगो, योगो, मुझे और कुछ घटे बचने दो।'

"उसने कहा—'नही नहीं, तुम्हे समय देने पर उतना ही मेरी अपनी आयु मे से कम हो जायगा। जीवन का मूल्य क्या है, यह मैं

उनका झडा छीन लिया है। सारे फ्रास ने मेरी विजय की कथाये सुनी हैं।"

वे कमरे की एक ओर से दूसरी ओर तक चहल-कदमी करते हुये यह सब किस्से कहते जा रहे थे। भय और विस्मय से मै बिल्कुल घबरा गया था। मै सोचने लगा—ये कौन हैं? क्या ये कॉलिनी हैं? या रिशेल्यू?

वे मेरे निकट आकर बोले—"योगो ने अपना वचन पूरा किया। कुछ दिनो के बाद सूखी प्रसिद्धि मुझे अच्छी नही लगी। मैं किसी 'ठोस' वस्तु के लिये उत्सुक होने लगा। जीवन के पॉच-छः सालो के बदले मे मैंने अतुल धन-सम्पद् की प्रार्थना की। योगो खुशी से राजी हुआ।...युवक, तुम चकित हो रहे हो, पर किसी समय मैं बहुत धनी था। मेरे पास क्या नहीं था?—राजा का-सा भवन, बड़ी भारी जमींदारी—सब कुछ था। आज भी यह सब मेरा ही है। अगर तुम्हे मेरी बातों पर या योगो के अस्तित्व पर सन्देह है, तो थोड़ी देर प्रतीक्षा करो। योगो अभी आयेगा, और तुम भी वह सब देखोगे जो कल्पना से भी अतीत है, पर मेरे दुर्भाग्य से बहुत ही सच हो उठा है।"

सज्जन ने जाकर घडी देखी, और उनके मुँह पर भय के चिन्ह स्पष्ट हो उठे। वे फिर कहने लगे—"आज सुबह जब मेरी नींद टूटी तब मैने अनुभव किया कि मैं इतना दुर्बल हूँ कि उठ कर बैठने की शक्ति भी मुझ मे नही है। घटा बजाने पर योगो आया। मैंने पूछा—'मुझे ऐसा क्यों लग रहा है?'

"उसने कहा—'ऐसा होना स्वाभाविक है। आपका समय निकट आ रहा है।'

"मैंने कहा—'इसका मतलब?'

" 'मतलब नहीं समझ रहे हैं? परमात्मा ने आपको साठ वर्ष की

वे फुलवारी की ओर के दरवाजे के पास जाकर खडे हुये, फिर चिल्ला कर बोले—"हाय, मैं यह सुन्दर आसमान, यह घास से ढँका हरा मैदान, यह फौवारा—कुछ भी अधिक देर तक नहीं देख पाऊँगा। बसन्त की सुगन्धित हवा मैं और नहीं सूँघ पाऊँगा। मैं कितना निर्बोध हूँ! परमात्मा ने ये सब उपहार हमे दिये हैं, पर इनके मूल्य के बारे मे मैं बिल्कुल अधा था। अब समझ सका हूँ, पर अब समझने से लाभ ही क्या? मैं और पच्चीस सालों तक इनका उपभोग कर सकता था। पर मेरा जीवन समाप्त होने आया है। मैंने किसलिये अपना अमूल्य जीवन नष्ट किया? मिथ्या प्रसिद्धि और यश के लिये! ये सब भी मेरे जीवन के साथ ही साथ समाप्त हो जायँगे। इनसे मैंने कुछ भी सुख नही उठाया।"

बाग के उस पार की सड़क से कई किसान गाते हुये जा रहे थे, उनकी ओर अँगुली उठा कर सज्जन ने कहा—"उनके दरिद्रता-पूर्ण जीवन के एक टुकड़े के लिये मैं क्या नहीं दे सकता हूँ! पर अब मेरे पास देने को कुछ भी नही है। दुनिया में अब मेरे लिये कोई आशा नहीं है।"

सूर्य की एक किरण आकर उनके पीले चेहरे पर पड़ी। वे कह उठे—"देखो, देखो, कितनी सुन्दर है! हाय, मुझे यह सब छोड़ जाना पड़ेगा। फिर भी अभी तक मैं जीवित हूँ। आज दिन भर मैं जिन्दा रहूँगा! आज का दिन कितना सुन्दर है, कितना उज्ज्वल है! यही मेरा अन्तिम दिन है—और नही!"

वे झट जीने से बाग मे उतर गये और दौड़ने लगे, और कुछ ही क्षणों मे मेरी दृष्टि से ओझल हो गये। मुझ मे उनको लौटा लाने की इच्छा रहते हुये भी शक्ति नहीं थी। मैं विस्मित होकर तथा घबरा कर उस सोफे पर बैठ गया।

कुछ क्षण के बाद उठ कर मैं कमरे भर मे चहल-कदमी करने लगा।

तुमसे अधिक समझता हूँ। दो घटे की आयु के बराबर कौन-सी सम्पत्ति है ?'

"बाते करने की शक्ति भी मानो मुझ मे नहीं रही, आँखो की दृष्टि भी कम हो रही थी, नसो में रक्त का प्रवाह भी रुक रहा था। मैंने बहुत कठिनाई से कहा—'अच्छा तुम अपनी कीमत लौटा लो, इसी के कारण मेरा नाश हुआ। मुझे चार घटे की आयु दो, मैं अपनी सारी धन-सम्पत्ति दे रहा हूँ।'

"योगो बोला—'अच्छी बात है। तुमने सदा मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है, प्रतिदान मे मुझे भी कुछ करना चाहिये। मैं राजी हूँ।'

"मेरी देह मे फिर शक्ति लौट आई। मैंने कहा—'योगो! चार घंटे बहुत कम समय है। और चार घंटे मुझे दो, मैं अपनी साहित्यिक प्रसिद्धि और यश सब छोड़ता हूँ।'

"हब्शी नौकर ने अवज्ञा के स्वर मे कहा—'इसके लिये चार घटे की आयु? बहुत ज्यादा माँग रहे हो! खैर, मैं राजी हूँ। तुम्हारा अन्तिम अनुरोध मैं नहीं टाल सकता।'

"मैंने उसके सामने घुटने टेक कर कहा—'नहीं योगो, यह मेरा अन्तिम अनुरोध नहीं है; और भी है। मुझे सध्या तक समय दो। आज का पूरा दिन मुझे दो, उसके लिये मैं अपना सामरिक यश, प्रसिद्धि, सब दे रहा हूँ। इनकी स्मृति भी मनुष्य के मन से मिट जाय—मैं इसकी परवाह नही करता। योगो, यह अनुरोध तुम मान जाओ—मैं और कुछ भी नही चाहूँगा।'

"योगो ने कहा—'तुम मुझसे अन्याय से जिद कर रहे हो। खैर, मैंने आज का दिन तुम को दिया। सूर्य डूबते ही मैं आऊँगा।'

"यह कह कर वह चला गया।...युवक! आज का दिन ही मेरा अन्तिम दिन है।"

"पर क्या तुम नहीं जानते कि मेरी सहायता से तुम बहुत शीघ्र उन्नति कर सकोगे ? दस साल के भीतर तुम प्रसिद्ध हो सकोगे ।"

मैं कह उठा—"दस साल !"

ड्यूक चकित होकर बोले—"यह क्या ? यश, मान, प्रसिद्धि—इन सब के लिये दस साल खर्च करना क्या अधिक है ? चलो, चलो, मेरे साथ राजभवन मे चलो ।"

मैंने कहा—"नहीं महाशय, मैने अपने गॉव को लौट जाने का निश्चय कर लिया है । मैं अपनी और अपने परिवार की ओर से आप के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ ।"

ड्यूक ने कहा—"कितनी बेवकूफी है !"

मैंने योगो और उसके मालिक की बात का स्मरण करके मन ही मन कहा—"बेवकूफी नहीं, बुद्धिमानी है !"

दूसरे ही दिन मैं अपने गॉव को चल पड़ा । अपने घर, परिवार और स्वजनो को देख कर कितना आनन्द हुआ, यह कहा नहीं जा सकता । एक सप्ताह के बाद ही मैंने हेनरियेट से शादी कर ली ।

मैं अपने को समझाने की कोशिश करता रहा कि मैं स्वप्न देख रहा हूँ। उसी समय दूसरा एक दरवाजा खुला और नौकर ने आकर कहा—"मेरे मालिक, ड्यूक आ रहे हैं।"

एक गम्भीर चेहरे के वृद्ध ने कमरे मे प्रवेश किया। उन्होने मुझसे हाथ मिलाया, और मुझे इतनी देर तक प्रतीक्षा कराने के लिये क्षमा माँगी।

उन्होने कहा—"मैं किले मे नहीं था। मैं अपने बीमार, छोटे भाई-सी—के काउण्ट को ढूँढने के लिये बाहर गया था।"

मैंने पूछा—"क्या वे बहुत बीमार हैं?"

ड्यूक ने कहा—"नहीं, ईश्वर की कृपा से उसे कोई शारीरिक रोग तो नहीं है। पर यौवन में यश और प्रसिद्धि के स्वप्नों मे उसका दिमाग बहुत उत्तेजित रहा करता था। हाल ही मे वह बीमार पड़ा, तब से उसका दिमाग खराब हो गया है। उसे यह धारणा हो गई है कि वह केवल एक दिन जीवित रहेगा। यह पागलपन के सिवाय और कुछ नही है।"

अब मैं सब बात समझा। ड्यूक बोले—"अच्छा, अब तुम्हारे लिये क्या किया जा सकता है, यह सोचना है—साथ-साथ कोशिश भी करनी है। इसी महीने के अन्त मे राजधानी मे जाकर राज-सभा मे तुम्हारा परिचय करा देना होगा।"

मैंने अपना चेहरा लाल बना कर कहा—"आपकी कृपा के लिये हजारो धन्यवाद। पर मैं राज-सभा मे जाना नहीं चाहता।"

ड्यूक बोले—"क्या? राजसभा मे नहीं जाना चाहते? क्या तुम नही जानते कि राजसभा मे न जाने पर तुम किसी तरह की उन्नति नहीं कर सकोगे?"

मैंने कहा—"जी हाँ, सब जान कर ही कहता हूँ।"

कह देता तो फिर किसी प्रकार भी उससे "हाँ" कहलाना सम्भव नहीं था। अनेक चेष्टा करके भी जब वैसिलियो इस पुत्र को शिक्षित नहीं कर सका, तब निराश होकर अपनी हाल ही मे खरीदी जमींदारी की देख-भाल करने को उसे भेज दिया।

युवक लेजारो वहीं रह गया।

करीब दस साल के बाद, एकाएक पीसा-नगर में एक भयानक महामारी फैली। महामारी से रोज़ सैकड़ो आदमी मरने लगे। डाक्टर वैसिलियो निडरता से नागरिकों की रक्षा करने मे लगा रहा, अपने लिये उसने कोई सावधानी नहीं की। फलतः वह भी इस भयानक रोग से ग्रस्त हो गया। पर इतने से ही उन लोगों के दुर्भाग्य का अन्त नहीं हुआ, वह अपने परिवार को भी रोग से सक्रामित करता गया। एक-एक करके पत्नी, दोनों पुत्र और कन्या मृत्यु के पजे मे चले गये। विशाल भवन मे केवल एक बूढी नौकरानी जीवित रही।

पीसा के लोग नगर छोड़ कर भाग गये थे। मौसम के बदलने के साथ ही साथ जब रोग मन्द पड़ गया, तो वे फिर लौट आने लगे।

लेजारो अब पिता की सारी सम्पत्ति का मालिक हुआ। वह पीसा मे आकर पैतृक घर मे रहने तो लगा, लेकिन पहिले जैसा ठाठ-बाट अब इस मकान मे नही रहा। लेजारो ने केवल एक नौकर को रक्खा। वह और बुढिया नौकरानी घर का सब काम करने लगे। जमींदारी और खेती आदि कामो का भार उसने एक कारिन्दा को सौप दिया। वह मालगुजारी अदा करके, पीसा में मालिक के पास भेज देता था।

यद्यपि लेजारो मूर्ख और गॅवार होने के लिये बदनाम था, पर अब इतनी धन-सपत्ति का मालिक होने से लोग वह बात भूल ही गये। अनेक लोग लेजारो से अपनी कन्या की शादी करने के लिये कोशिश करने लगे। पर उसने सभी को एक जवाब दिया। उसने अभी चार वर्ष तक विवाह न करने का निश्चय किया है, बाद में उसका विचार

भाग्य चक्र

लेखक—एण्टन फ्रेन्सिसको ग्रेज़िनी

बहुत दिन पहिले की बात है; वैसिलियो नाम का एक डाक्टर इटली के पीसा नगर में आकर रहने लगा था। कुछ ही दिनों में उसकी प्रसिद्धि चारों तरफ फैल गई। क्रमशः पीसा नगर के शरीफ घराने के लोग भी उससे अपनी लड़की की शादी करने की इच्छा करने लगे और वे इस बात को वैसिलियो से तरह-तरह से प्रकट करने लगे।

वैसिलियो विवाह करने को इच्छुक था ही, उसने कुछ ही दिनों में एक युवती का पत्नी-रूप में निर्वाचन किया। इस युवती के माँ-बाप जीवित नहीं थे, धन-सम्पदा भी विशेष नहीं थी, पर वह ऊँचे वंश की थी। दहेज के रूप में एक पुराने मकान के सिवाय वह अपने साथ और कुछ नहीं ला सकी; पर शादी के बाद ही वैसिलियो के निकट आशातीत धन आने लगा और वे अनेक बच्चों के माँ-बाप होकर सुख से रहने लगे। उनके तीन पुत्र हुए और एक कन्या। उन्होंने यथा समय कन्या और बड़े पुत्र की योग्य वर और दुलहिन से शादी भी कर दी। कनिष्ठ पुत्र का विद्या में बहुत अनुराग दीखा; माँ-बाप को आशंका होने लगी कि मँझला पुत्र शायद बिल्कुल ही नालायक रह जायगा। उसका व्यवहार और बात-चीत बिल्कुल ही बेवकूफों जैसी थी, वह बहुत ही जिद्दी और मूर्ख था। वह पढ़ाई से दूर भागता था,—उसका मिजाज भी बड़ा रूखा था, एक बार अगर वह किसी विषय में "ना"

शुरू कर दिया । उनकी दोस्ती ख़ूब बढने लगी, क्योंकि गेब्रियेलो का शिकार के क़िस्सो और काल्पनिक कथाओ का भडार अनन्त था। लेजारो को ये सब क़िस्से बहुत अच्छे लगते थे। गेब्रियेलो बहुत ही चालाक था, उसने कुछ ही दिनो में लेजारो को इस तरह वश मे कर लिया कि वह अब इस मछुये-मित्र के बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता था ।

एक दिन लेजारो ने घर मे एक भारी दावत की । भोजन के बाद बैठ कर वह गेब्रियेलो से गप-शप करने लगा । मछलियाँ किस-किस तरह से पकडी जा सकती हैं, यह बात उठने पर गेब्रियेलो अनेक प्रकार के मछली पकड़ने के तरीके बताने लगा । एक तरीका लेजारो को बहुत पसन्द आया । इसमे मछुआ अपने गले मे जाल लटका कर नदी के जल मे उतरता है, और हाथ और मुँह की सहायता से बडी-बडी मछलियाँ पकड़ता है । लेजारो इस तरह मछली पकडने के लिये आकुल हो उठा । उसे एक क्षण भी देर सहन नहीं हो रही थी ।

लेजारो अपने मछुये-मित्र से लगातार तकाजा करने लगा, "चलो, चलो, अभी हम लोग चले !" गेब्रियेलो भी तैयार था, धनी मित्र को खुश रखना अब उसके जीवन का ध्येय हो उठा था ।

उस समय गर्मी का मौसम था, मछली के शिकार के लिये यह मौसम आदर्श था, इसलिये और देर न करके वे दोनो मछली पकड़ने का सामान लेकर निकल पडे । शहर से कुछ दूर बड़ी नदी है, उसके दोनो किनारे सुन्दर वृक्षों की पक्तियो से पथिको को छाया देते हैं । गेब्रियेलो लेजारो को एक पेड के नीचे बैठा कर, गले में जाल लटका कर जल मे उतरा । पहिले देख कर सीख लेने पर फिर वह स्वय जल मे उतरेगा, यही लेजारो की इच्छा थी ।

गेब्रियेलो बहुत चतुर शिकारी था, कुछ देर के बाद ही वह जल से ऊपर उठ आया,—उसके जाल में आठ-नौ बड़ी-बड़ी मछलियाँ

बदल भी सकता है। उसके एक बार "ना" कहने पर उससे "हाँ" कहलाना असाध्य था, इसलिये किसी ने उससे कुछ नहीं कहा। लेजारो की आमोद-प्रमोद मे अरुचि नही थी, और वह लोगो से मिलना-जुलना बिल्कुल ही पसन्द नहीं करता था। किसी का निमन्त्रण-पत्र देखने पर वह घबरा जाता था।

लेजारो के मकान के सामने एक मछुये की कुटिया थी। उसका नाम था गेब्रियेलो। वह उस कुटी मे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता था। मछली और चिडियों का शिकार करके वह किसी प्रकार उनका पालन करता था। वह बहुत ही चतुर शिकारी था, उसका जाल और पिजड़ा आदि बहुत ही मजबूत थे। पत्नी सान्ता की सहायता से उसकी गृहस्थी अच्छी तरह चलती थी। सान्ता सिलाई का काम करके भी कुछ कमा लेती थी।

आश्चर्य की बात यही थी कि इस गेब्रियेलो की शक्ल, चेहरा, बाल और स्वर—सभी बिल्कुल लेजारो जैसे थे। उन दोनों की देह का रग, मूछे और दाढ़ी तक एक ही तरह की थीं। उन्हे तो जुड़वाँ भाई होकर जन्म लेना उचित था, क्योंकि केवल शक्ल और चेहरा मे ही मेल नहीं था, उनकी उम्र और हाव-भाव भी एक से थे। लेजारो अगर गेब्रियेलो की पोशाक पहिन कर जाता, तो मछुये की पत्नी भी उसे शायद दूसरा आदमी नहीं समझती। एक धनी सज्जन की पोशाक पहिनता था, और दूसरा गरीब मछुये की—बस, इतना ही फर्क था।

लेजारो यह मेल देख कर एकाएक बहुत खुश हो उठा। उसे गेब्रियेलो बहुत पसन्द आ गया, और वह उस मछुये से परिचित होने की कोशिश करने लगा। वह अक्सर मछुये के घर मे तरह-तरह की बढ़िया-बढिया खाने की चीजे और कीमती शराबे भेजने लगा। इसके लिये गेब्रियेलो इतनी कृतज्ञता प्रकट करने लगा कि लेजारो ने और भी खुश होकर, उसे अपने घर मे भोजन करने के लिये निमन्त्रित करना

और विस्मय से वह विह्वल हो गया। तट पर चला गया होग, इस आशा से वह जल से उठ कर चारो तरफ खोज करने लगा, लेकिन लेजारो के छोडे हुये कपड़ो के अलावा वह और कुछ भी नहीं ढूँढ़ पाया। भय से पागल होकर वह फिर जल में उतर पडा, और बहुत देर तक खोज करने के पश्चात् उसने मित्र की मृत-देह पाई। लाश बहाव से दूसरे किनारे के पास पहुँच गई थी और पानी के ऊपर से दीख रही थी।

गेब्रियेलो वज्र से घायल-सा खडा रहा। ऐसी भयानक परिस्थिति में उसे क्या करना चाहिये, यह वह नहीं समझ सका। उसे बार-बार आशका होने लगी कि अगर वह यह समाचार नगर में जाकर सबसे कहे, तो सभी उस पर सन्देह करेंगे, सोचेंगे कि मित्र का धन चोरी करने के इरादे से ही उसने उसकी हत्या की है। वह बहुत देर तक मृत-देह के सामने चुपचाप बैठा सोचता रहा।

अन्त मे उसके दिमाग मे एक बात आई—"बचा दिया, परमात्मा!" कह कर वह उछल कर उठ पड़ा। "मेरे सिवाय उसे डूबते किसी ने नहीं देखा है, यही ग़नीमत है। क्या करना होगा, यह अच्छी तरह समझ मे आ रहा है। इधर सध्या के बाद लोग भी नहीं आते है—कोई कुछ भी नहीं जान सकेगा।"

मछली के शिकार का सारा साज-सामान उसने टोकरी के भीतर भरा, फिर लेजारो की मृत-देह कधे पर ले जाकर नदी के पास के वन में रख आया। फिर एक जाल लेकर इस तरह मृत-देह के हाथो और पैरों मे लपेट दिया कि देखते ही लोग समझ जायँ कि इस तरह की आकस्मिक घटना से वह जल में डूब कर मर गया है।

वह फिर लेजारो के छोडे हुये कपड़े और जूते पहिन कर तट पर बैठ कर शोक करने लगा। मृत लेजारो की शक्ल और चेहरे से उसका जो आश्चर्य-जनक मेल था, उससे ही वह खतरे से बच जायगा, और

थी। लेजारो को यह वहुत आश्चर्यजनक घटना लगी; मनुष्य कैसे जल के भीतर देख पाता है, या मछली पकड़ सकता है, यह वह नहीं समझ सका। स्वयं जल मे उतरने का निश्चय करके वह गेब्रियेलो की सहायता से अपने कपड़े उतार कर, गले मे जाल लटका कर, नदी के उस भाग मे उतर पड़ा जहाँ पानी कम था। गेब्रियेलो उसे ज़्यादा दूर न वढने की सलाह देकर, अपना काम करने लगा।

अकेला अपने को नदी के जल मे पाकर लेजारो एक बच्चे की तरह बड़ी ख़ुशी से उछल-कूद करने लगा। गेब्रियेलो कुछ दूर पर गहरे जल में मछली पकड़ रहा था, और बीच-बीच मे वड़ी-वड़ी मछली मुँह मे दबाये हुए निकल कर मित्र को और भी चकित कर रहा था।

लेजारो ने चिल्ला कर कहा, "जल के नीचे जरूर रोशनी है, नहीं तो वह कैसे इतनी वड़ी-वड़ी मछली पकड़ पाता है? ठहरो, मैं भी डूब कर देखता हूँ।"

उसने गेब्रियेलो की तरह सिर झुका कर डुबकी लगाई। नदी में उतरने की उसे आदत नहीं थी, उसी क्षण पैर फिसलने से वह पानी के नीचे चला गया और बहाव के जोर से गहरे जल मे जा पड़ा। पहले वह, जल के नीचे दीखता है या नहीं, यह देखने मे व्यस्त था, पर साँस अटकती देख कर उसने घवरा कर जल के ऊपर उठने की चेष्टा की। वह जितना ही छटपटाने लगा, उतना ही उसकी नाक और मुँह में पानी घुस-घुस कर उसे मृत्यु की ओर ले जाने लगा। उसने दो-तीन बार पानी के ऊपर सिर उठाया और अन्त मे सदा के लिये पानी मे उसकी समाधि हो गई।

गेब्रियेलो अब तक मछली का शिकार करने मे इतना व्यस्त था कि अभागे मित्र की क्या दशा हुई, यह नहीं जान सका। एक वहुत बड़ी-सी मछली पकड़ कर बड़ी ख़ुशी से मित्र को दिखाने के लिये उसने घूम कर देखा, लेकिन मित्र कही भी नहीं था! देख कर भय

वह जब माथा पटक कर, बाल खीच-खींच कर, जमीन पर पड़ी-पडी रोने लगी, तब वहाँ कोई भी अपने आँसू नही रोक सका। जो असली गेब्रियेलो था, उसकी भी आँखो मे आँसू आ गये।

अपनी टोपी को भवो तक खीच कर, उसने टूटे स्वर से सान्ता को ढाढ़स देते हुये कहा, "ओ भलेमानस की बेटी, अब इतना रोने-धोने से लाभ क्या है ? फिक्र न करो। मैं तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों का भार ले रहा हूँ। बेचारे गेब्रियेलो ने मुझे आनन्दित करने के लिये अपनी जान खो दी, यह मै कभी भी नही भूल सकता। तुम घर जाओ, मैं जब तक जिन्दा हूँ, तुम्हे किसी बात की कमी नहीं होगी। अगर मैं तुम से पहिले मर जाऊँ, तो वसीयतनामा लिख कर तुम लोगो के लिये रुपये छोड़ जाऊँगा।"

उसकी बात सुन कर चारो तरफ से लोग प्रशसा करने लगे। आत्मीयो ने सान्ता को उसके घर पहुँचा दिया। गेब्रियेलो ने भी अब सीधे जाकर लेजारो के घर-द्वार पर दखल कर लिया। उसने लेजारो को बहुत दिनो से इतने निकट से देखा था कि उसकी चाल-ढाल की नकल करने मे कोई विशेष कठिनाई नही हुई। लेजारो की कुंजियो का गुच्छा उसकी जेब मे ही रहता था, गेब्रयेलो कोट की जेब मे हाथ डालते ही उसे पा गया। कुंजियो से वह सब बक्स, सन्दूक, आलमारियाँ खोल-खोल कर देखने लगा। घर रुपयो, अशर्फियो, गहनों और जवाहिरातो से भरा था। गेब्रियेलो की आँखे लोभ से जलने लगीं! अब वही इन सबका मालिक है।

आनन्द से उसे नाचने की इच्छा हो रही थी, लेकिन किसी तरह अपने को सम्हाल कर वह, किस तरह लोगो की आँखो में और अच्छी तरह धूल झोंक सकता है, यह सोचने लगा। लेजारो का अद्भुत स्वभाव उसे अच्छी तरह मालूम था। रात को भोजन के लिये बुलावा आने पर उसने चिल्ला कर शोक प्रकट करते हुये भोजन के कमरे मे

उसका भविष्य जीवन सुख का होगा, इसमे उसे सन्देह नहीं था। इसके लिये साहस और चालाकी की आवश्यकता होगी, यह उसने मान लिया, और जोर से सहायता के लिये चिल्लाने लगा, "अरे बचाओ, बचाओ—जल्दी आकर बचाओ, बेचारा मछुआ डूब कर मर रहा है! हाय, हाय, डूब गया!"

उसकी चिल्लाहट से मछुये, मल्लाह आदि अनेक लोग दौडे हुये आ गये। सब आकर गेब्रियेलो से पूछने लगे कि क्या हुआ है। वह उस समय भी लेजारो के ढग की नकल करके चिल्लाने लगा, "बेचारा गेब्रियेलो मेरे साथ मछली का शिकार करने आया था, कई बार उसने बड़ी-बड़ी मछलियाँ पकड़ कर मुझे दिखाईं, लेकिन आखिरी बार—एक घटा हुआ—पानी मे डुबकी लगाई, तब से वह दिखाई नहीं पड़ रहा है!"

सबने गेब्रियेलो को वह जगह दिखा देने के लिये कहा, जहाँ उसने डुबकी लगाई थी। उसके दिखाने पर कई आदमी नदी मे उतर पडे और थोडी देर तक खोज करते ही जाल मे लिपटी हुई मृत-देह मिल गई। सबको विश्वास हो गया कि इस तरह जाल मे हाथ-पैर फँस जाने के कारण ही अभागे मछुये की मृत्यु हुई है।

सभी गेब्रियेलो के लिये "हाय-हाय" करने लगे! सब मिल कर मृत-देह को जल से खींच कर ले आये। जब गेब्रियेलो का गुण गाते हुये उसके आत्मीय और मित्र लोग शोक करने लगे, तब गेब्रियेलो अपनी हँसी नही रोक पा रहा था। वह शोक का छल करके मुँह ढाँक कर बैठा रहा।

मछुये की मृत्यु का समाचार शहर भर मे फैल गया। एक पादरी आ पहुँचे और शव को निकट के गिर्जाघर में लाया गया। वहाँ गेब्रियेलो के सभी आत्मीय और मित्रगण आये। सान्ता भी अपने बच्चों को साथ लिये असह्य शोक और दुःख से रोती हुई आ पहुँची।

उससे इतना प्रेम करती है, जान कर वह जैसा सुखी हुआ, वैसा ही स्वय सुखभोग करने के लोभ से वह उस बेचारी को दु.खी कर रहा है, यह सोच कर उसे पश्चात्ताप भी होने लगा। किस तरह वह उसे सान्त्वना दे सकता है और फिर पत्नी के रूप मे पा सकता है, गेब्रियेलो अब यही सोचने लगा। अन्त मे कुछ भी न सोच पाकर, वह एक दिन सान्ता की कुटिया मे जा पहुँचा। उस समय सान्ता अपने एक ममेरे भाई से बैठ कर बातें कर रही थी।

गेब्रियेलो ने जाकर कहा कि सान्ता से उसको कुछ जरूरी बातें करनी हैं। यह सुनते ही वह ममेरा भाई बाहर चला गया, क्योंकि धनी मित्र दुःखी विधवा के लिये जो करुणा प्रकट कर रहा था, वह किसी से भी छिपी नही थी। उसके बाहर चले जाते ही गेब्रियेलो ने उठकर कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया। सान्ता कुछ घबरा गई। गेब्रियेलो जब अपने छोटे बच्चे का हाथ पकड़ कर सान्ता की ओर बढा, तो वह डर के मारे पीछे हट गई! पत्नी का ऐसा गहरा प्रेम देख कर गेब्रियेलो अपने को सम्हाल नहीं सका, दाँत निकाल कर हँस दिया।

फिर सान्ता का हाथ पकड़ कर पहिले जैसे स्वर और बोली मे बातें करनी शुरू कर दी। तब भी सान्ता उसकी ओर सन्देहभरी दृष्टि से देखती रही। गेब्रियेलो अपने बच्चे को गोदी में उठा कर उससे कहने लगा, "बच्चे, हम लोगो की तकदीर पलट गई है, पर देख रहा हूँ कि यह तुम्हारी माँ को पसन्द नही है।" यह कह कर उसने जेब से एक मुट्ठी भर रुपये निकाल कर बच्चे के हाथ मे दे दिये।

पत्नी नाना प्रकार के भावों के आधिक्य से बिल्कुल विह्वल हो रही है, यह देख कर गेब्रियेलो सत्य को और नहीं छिपा सका। वह सदर दरवाजा बन्द करके पत्नी को मकान के भीतर खीच ले गया और धीमे स्वर से सब बातें कह सुनाईं। सब कुछ सुन कर उसकी पत्नी उसे आलिंगन करके आनन्द से रोने लगी। गेब्रियेलो मीठी बातों से

प्रवेश किया। बुढ़िया नौकरानी और नौकर उसे सान्त्वना देने के लिये दौड़े हुये आये। पर गेब्रियलो ने उनकी बातों पर ध्यान न देकर, टेबिल से अच्छी-अच्छी सब खाने की चीजें उठा कर, उसी क्षण सान्ता की कुटिया में ले जाने की आज्ञा दी।

नौकर ने खाने की चीजे पहुँचाने के बाद आकर कहा कि सान्ता ने कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद जताया है। तब गेब्रियेलो भोजन करने बैठा, और थोड़ा खाकर शयन-कक्ष में जाकर पड़ रहा। दूसरे दिन सुबह नौ बजे तक वह कमरे से नही निकला, कमरे में बैठ कर सोचने लगा और लेजारो की असमय की मृत्यु के लिये बीच-बीच मे शोक भी करने लगा। दो मनुष्यों मे चाहे जितनी समानता हो, उनमे कुछ न कुछ भेद रहेगा ही, पर सौभाग्य से लेजारो का कोई आत्मीय नहीं था और नौकर-चाकर भी गेब्रियेलो के स्वर और बातचीत के ढग मे जो थोड़ा-सा भेद प्रकट हुआ था, उसे एकाएक शोक आ पड़ने का नतीजा समझे। जब गेब्रियेलो की पत्नी ने देखा कि उसके पति का मित्र दोनों वक्त काफी खाने-पीने की चीजे भेज रहा है, तब उसने कुछ निश्चिन्त होकर अपने रिश्तेदारो को बिदा कर दिया और पहिले की तरह बच्चों को लेकर अपनी कुटी मे रहने लगी।

गेब्रियेलो उसी समय सो कर उठने लगा जिस समय लेजारो उठा करता था। यद्यपि अब उस पर अनेक सम्पत्तियों का भार आ पड़ा, फिर भी सान्ता को किसी बात की कमी न रहे, इस पर उसने सदा निगाह रक्खी। लेजारो की प्रत्येक बात की हूबहू नक़ल करने लगा। यद्यपि उसने अब तक मेहनत से भरा मछुये का जीवन व्यतीत किया था, फिर भी अब लेजारो की धन-सम्पदा के साथ ही साथ, उसके आलस्य ने भी गेब्रियेलो में घर कर लिया। पर लोगों से वह जितना ही सान्ता के असह्य-शोक के किस्से सुनने लगा, उतना ही उसका मन दुःखी होने लगा। उसकी पत्नी

"मैं स्वय उससे विवाह करने के लिये तैयार हूँ।"—गेब्रियेलो ने कह डाला,। "मैं अगर उसका और उसके बच्चों का यत्न से पालन करूँ, तब परमात्मा मेरा सब अपराध क्षमा कर देंगे। मैं ही बेचारे गेब्रियेलो को मछलियो का शिकार करने के लिये ले गया था!"

पादरी साहब ने किसी तरह हँसी रोक कर कहा कि उसका प्रस्ताव बहुत ही उत्तम है, और इसके लिये परमात्मा आशीर्वाद देंगे। गेब्रियेलो सुन कर ख़ुश हुआ, और जेब से एक मुट्ठी भर रुपये निकाल कर मृत मित्र की आत्मा की भलाई के लिये दान दिया। पादरी साहब इससे खुश होकर बोले कि मृत-आत्मा की शान्ति के लिये उसी दिन गिर्जे में प्रार्थना की जायगी। धनी और ऊँचे खानदान का होने पर भी वह सान्ता से शादी करना चाहता है, इसके लिये फ्रा आनसेलमो ने उसकी बहुत प्रशंसा की। गेब्रियेलो कब शादी करना चाहता है, यह पूछने पर उसने कहा कि वह उसी दिन शादी करना चाहता है।

पादरी ने कहा, "जैसी तुम्हारी इच्छा। अच्छा, तो शादी के कपडे खरीद कर तैयार रहना।"

गेब्रियेलो घर जाकर शादी का इन्तजाम करने लगा, सान्ता को भी खबर भेज दी।

फिर सेण्टा कैथेरिना के गिर्जा मे बहुत धूम-धाम के साथ गेब्रियेलो ने अपनी पत्नी से फिर एक बार विवाह किया।

इसके बाद लेजारो-नामधारी गेब्रियेलो की शान-शौकत बढ गई। पुराने नौकर और नौकरानी दोनों को पेंशन देकर उसने विदा कर दिया और बहुत से नौकर-चाकर रख कर ठाट-बाट से रहने लगा। मूर्ख लेजारो की सब ओर से इतनी उन्नति देख कर लोग चकित हो गये।

दूसरी बार विवाहित होने के बाद सान्ता के जो बच्चे हुये, उन्होंने लेजारो का कुल नाम लिया और इनके बहुत से बच्चे होने के कारण यह खानदान इटली में फिर प्रसिद्ध हो उठा।

प्यार करते हुये उसे ढाढ़स देने लगा। पत्नी के लिये उसके हृदय में इतना प्रेम था, यह उसने कभी भी अनुभव नहीं किया था।

लेकिन सौभाग्य स जो दौलत उनको मिली है, वह अपने हाथों में रखने के लिये बहुत चालाकी और बुद्धि की जरूरत है, यह गेब्रियेलो ने अपनी पत्नी को समझा दिया और सभी बातें गुप्त रखने के लिये कई वार सलाह देकर अपने नये घर मे चला गया। सान्ता भी दिखाऊ शोक करती गई। उस रात को गेब्रियेलो को नीद नही आई। रात भर जग कर वह सोचने लगा कि कैसे सान्ता से फिर उसका मिलन हो सकता है। अन्त मे एक बात निश्चय करके, वह तड़के ही बिस्तर से उठ पड़ा। पीसा शहर में 'सेण्टा कैथेरिना का गिर्जा' नाम का एक प्रसिद्ध गिर्जा था। इसके आचार्य थे, फ्रा अनसेलमो। उनके निकट जाकर उसने कहा कि वह उनसे एक बहुत आवश्यकीय वात करना चाहता है। फ्रा अनसेलमो उसे एक निर्जन कमरे मे ले गये। गेब्रियेलो ने अपना परिचय लेजारो कह कर दिया, और किस तरह दैवी दुर्घटना से वह वश का एकमात्र प्रतिनिधि होकर जीवित है, यह भी बताया।

फिर आया अपने मछुये मित्र के नदी मे डूबने का किस्सा। वेचारा मछुआ केवल उसे आनन्दित करने के लिये ही नदी किनारे गया था, पर भाग्य-चक्र से उसकी मौत हुई, यह उसने कई वार दुहराया। गेब्रियेलो की पत्नी और वच्चो की दुर्दशा के लिये उसने वहुत दु.ख प्रकट किया, और धार्मिक विचार से वही उनकी दुर्दशा के लिये उत्तरादायी है, यह भी उसने कहा। अपनी शक्ति भर सान्ता की सहायता करना उसका कर्त्तव्य है।

पर धन देने पर तो सब दुःखों की समाप्ति नहीं होती है! सान्ता ने जो इतना प्रेममय पति खोया है इसका क्या प्रतिकार है? हाँ एक उपाय है—अगर उसके नारी-हृदय के प्रबल प्रेम को नये रास्ते मे ले जाय तभी वह सुखी हो सकती है।

"आज आपका जन्म-दिन है।"

गायदो का चेहरा विषाद से गम्भीर हो गया; उसने कहा—"अच्छा! मुझे यह बिल्कुल याद नहीं था।"

जुसेप्पे बोला—"पिछली सालों मे फूलो से सारा मकान सजाया जाता था—"

उसके मालिक ने बात काट कर कहा—"उस जमाने की बात छोड़ो। अब वह दुनिया और वे फूल नही हैं।"

नौकर बोला—"जी नहीं, सो नहीं हो सकता।" उसने टेबिल पर रक्खे एक बड़े से गुलदस्ते का आवरण उठा कर दिखाया।

गायदो ने कहा—"धन्यवाद! तुम्हारा यह उपहार पाकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई।"

गायदो ने जबान से खुशी होने की बात तो कही, पर उसका चित्त और भी दुःखित हो उठा। पहिले आज के दिन घर में कितना आनन्द मनाया जाता था, और अब पुराने नौकर के सिवाय किसी ने भी आज के दिन का स्मरण नहीं किया। पर वह मन मे चाहे कुछ भी सोचता रहा हो, चेहरे के भाव मे उसने कोई दुःख का चिह्न प्रकट नहीं होने दिया। अपने कमरे की ओर बढते हुये कहा—"मुझे आठ बजे जगा देना—मैं थोड़ी देर सोने के लिये जा रहा हूँ।"

जुसेप्पे ने शीघ्रता से कहा—"अभी न सोना ही ठीक होगा। देखिये—"

उसके मालिक ने चकित होकर कहा—"क्या?"

जुसेप्पे बोला—"शाम को हम लोग घर में नहीं थे, केवल जिरोलेमो था। उस समय एक महिला आपसे मिलने के लिये आई थीं। आप घर पर नहीं हैं, यह सुन कर कह गई हैं कि वे सात बजे फिर आयेंगी; उनको आपसे जरूरी काम है, इसीलिये वे आपको इन्तजार करने के लिये कह गई हैं।"

इटली

पति-पत्नी

लेखिका—मैटिल्डा सेराओ

गायदो बहुत सुखी दीख रहा था। उसे देख कर कोई यह नहीं कह सकता था कि दुनिया में उसे कोई चिन्ता है। वह एक राजनैतिक दावत खाकर, एक व्याख्यान देकर, लौट रहा था। भोजन की चीजें बहुत अच्छी बनी थीं और उसने अपने व्याख्यान की प्रशंसा भी सुनी थी। इसीलिये वह बहुत प्रसन्न था। अगले प्रतिनिधि-निर्वाचन में उसकी विजय होगी, इसमें उसे सन्देह नहीं था। रात को एक नाच के उत्सव मे उसका निमंत्रण था। वहाँ बैरोनेस स्टिफेनिया के साथ एकान्त में गप-शप होने की भी बहुत कुछ आशा थी, इसलिये घंटे भर आराम कर लेने के लिये वह घर लौट रहा था।

बग्घी से उतर कर भोजन-गृह से गुजरता हुआ वह अपने कमरे की ओर जा रहा था कि पुराने नौकर जुसेप्पे ने आगे बढ़ कर अदब से सलाम किया। गायदो ने पूछा—

"क्या है जुसेप्पे?"

जुसेप्पे ने कहा—"अगर आप कृपा कर के सुने—मुझे एक बात कहनी है।"

मालिक ने कहा—"झटपट कह डालो, मुझे समय नहीं है।"

नौकर ने कहा—"आज कौन-सा दिन है, क्या आपको याद नहीं है?"

गायदो बोला—"क्या आज कोई खास दिन है?"

वह अखबार लेकर पढने लगा। थोड़ी ही देर के बाद जुसेप्पे ने आकर सूचना दी—"वे आई हैं, बाहर के कमरे मे बैठी हैं।"

गायदो ने मुँह उठा कर कहा—"क्या तुम उन्हे पहचानते हो?"

नौकर ने कुछ घबरा कर कहा—"जी—नहीं।"

गायदो ने तेज कदमों से जाकर बाहर के कमरे में प्रवेश किया। महिला घूम कर खड़ी हुई तस्वीरों के एक 'अलबम' के पन्ने उलट रही थी। गायदो ने एक बार तेज निगाह से उसकी ओर देखा, पीछे से ही समझ गया कि रमणी लम्बी और बहुत सुन्दरी है। उसकी पोशाक भी बहुत सुन्दर और भडकीली थी।

उसकी ओर बढते हुये गायदो ने कहा—"नमस्ते!"

महिला तेजी से घूमी। गायदो चकित-सा उसकी ओर देखते हुये खड़ा रहा। पर महिला नमस्ते करके एक कुर्सी पर बैठती हुई बोली—"शाम के वक़्त आकर मैंने तुम्हारा कोई हर्ज तो नहीं कर डाला?"

गायदो ने कहा—"कुछ भी नही। कहो, तुम्हारे लिये मैं क्या कर सकता हूँ?"

महिला बोली—"तुम शायद यह बात सभ्याचार से कह रहे हो, पर सचमुच ही तुम्हे मेरे लिये ढेर सारे काम करने हैं। इसलिये तुम्हारी बात को मैं हृदय की बात ही मानूँगी।"

गायदो ने मुस्करा कर कहा—"हाँ सोच लो—मुझे एतराज नहीं है। पर तुम मुझ से क्या कराना चाहती हो, यह जानने पर मैं सुखी होऊँगा।"

महिला पसोपेश करने लगी, मानो किस तरह अपनी बात को कहेगी यह समझ नहीं पा रही हो। गायदो ने इस मौके पर उसे अच्छी तरह देख लिया। हाँ, वह पहिले की तरह ही सुन्दर है, कदाचित् उसकी सुन्दरता और भी बढ गई है। गायदो ने जब पहिले उसे देखा

गायदो ने कहा—"उनका नाम क्या है ?"

"उन्होंने अपना नाम नही बताया है ।"

गायदो बोला—"बहुत रहस्य की बात है ! क्या जिरोलेमो ने उनकी शक्ल-सूरत के बारे मे कुछ कहा है ?"

"हॉ, उसने कहा है कि वे लम्बे कद की हैं, उनके बाल और ऑखे काली हैं और पोशाक बहुत सुन्दर है ।"

गायदो ने कहा—"रहस्य और गहरा हो रहा है, मुझे कौतूहल भी हो रहा है ! क्या तुम्हारी राय मे उस महिला के लिये मुझे जागते रहना चाहिये ?"

जुसेप्पे ने कहा—"जी हॉ, न सोना ही ठीक है । सात बजना ही चाहता है । वे अगर अपने वायदे के अनुसार आ जाये तो आपको लेटते न लेटते उठना पड़ेगा ।"

गायदो बोला—"अच्छा, तो फिर नही सोऊँगा । अखबार लेते आओ— महिला के न आने तक अखबार पढ़ कर समय काटूँगा ।"

नौकर के बाहर जाते ही उसने अपने मन में कहा—"बाल और ऑखे काली ? स्टिफेनिया के बाल तो सुनहले हैं और ऑखे नीली हैं । खैर, कुछ फर्क होना ही अच्छा है ।"

गायदो की बात पढ़ कर पाठक सोच सकते हैं कि वह प्रेम-लीला मे उस्ताद है, पर वास्तव में ऐसा नही है । उसे जीवन मे गहरा दुःख और निराशा सहनी पड़ी है । उसने केवल एक ही नारी को सारे हृदय से प्रेम किया था, पर बहुत ही आकस्मिक रूप से उसे अपनी प्रेम-पात्री को खोना पड़ा । यह प्रेम राख मे ढकी आग की तरह अब भी उसके हृदय को निरन्तर जला रहा था । पिछले दो वर्षों से गायदो उसे भूल जाने का बहुत प्रयत्न कर रहा है, उसने नाना प्रकार के विलास और प्रमोद मे अपने को बह जाने दिया है ।

एमा ने एक मखमल के स्टूल पर पैर रख कर कहा—"हम दोनों के लिये यह परिस्थिति बहुत ही सुन्दर है।"

गायदो ने पूछा—"यह परिस्थिति तुम्हे सुन्दर लग रही है?"

एमा बोली—"इस विषय मे बहस करने से कोई लाभ नही है! अब इस मुसीबत से बचने का कोई उपाय तो सोचो।"

"मैं तो कोई भी उपाय नहीं सोच पा रहा हूँ।"

एमा ने दिक होकर कहा—"अगर इतना भी नहीं कर सकते, तो इतनी अक्ल और दिमाग से क्या फायदा? इतनी बड़ी-बड़ी राज-नीति की चाले चल सकते हो, इतनी बाते कर सकते हो, और एक मामूली उपाय नहीं सोच सकते?"

गायदो ने कहा—"अगर इस तरह कहना शुरू करोगी तो मुझ मे जो थोड़ी-बहुत अक्ल है, वह भी गायब हो जायगी।"

एमा बोली—"मैंने एक उपाय सोचा है।"

गायदो ने कहा—"यह मैं समझ ही गया था।"

एमा ने कुछ व्यग्य के भाव से कहा—"तुम्हारी अक्ल तारीफ़ के काबिल है। खैर मैं पिता को किसी तरह भी सच्ची बात का पता लगने देना नही चाहती।"

गायदो ने कहा—"सत्य बहुत ही भयानक है।"

एमा ने कहा—"विशेषण जोड़ने से कोई लाभ नहीं है। मेरे पिता सत्य को जान लेने पर बहुत ही दु:खित होंगे, मुझे भी बहुत बुरा लगेगा। बच्चो के अपराध से माँ-बाप को सजा मिलना उचित नहीं है। हम लोग उन्हे इतने दिनों तक दुःख से बचा सके हैं, क्योंकि वे बहुत दूर रहते थे और इस काम मे तुमने भी मेरी सहायता की है। पर कल तो हम लोगो के सब झूठे व्यवहार प्रकट हो जायँगे—तब क्या होगा? चाहे जैसे हो, उनसे सत्य को छिपाना पड़ेगा। मैं तुम्हारी सहा-यता चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि वे आकर हम दोनों को एक साथ ही

था तब एमा कैसी मनोहर थी! पर अब एमा की दृष्टि से लगता है कि दुःख और कष्ट क्या चीज है, यह वह समझ सकी है, इससे उसका सौन्दर्य और भी गम्भीर दीख रहा है।

क्षण भर के बाद एमा ने पूछा—"तुमने कभी अभिनय किया है?"

गायदो बोला—"अवश्य, मेरा सारा जीवन ही तो अभिनय है!"

एमा बोली—"अच्छा! तब तो तुम्हे अधिक असुविधा नहीं होगी, जैसा अभिनय कर रहे हो वैसा ही करते रहना। पर कुछ कठिन भेष लेना है, पता नही सफल होगे या नहीं।"

गायदो ने कहा—"मेरे साथ कौन अभिनय करेगा और दर्शक कौन होगा, इस पर बहुत कुछ निर्भर है।"

एमा बोली—"मैं साथ रहूँगी।"

गायदो ने कहा—"अच्छा! तुम एक अच्छी अभिनेत्री हो, यह मुझे मालूम है।"

एमा ने इस बात को पलट कर पूछा—"क्या अभी तक तुम मेरे पिता को नियमित भाव से चिट्ठियाँ लिखते हो?"

"हाँ, पर तीन हफ़्ते बीत गये, उन्होने मेरी चिट्ठी का कोई जवाब नहीं दिया है।"

एमा बोली—"कल उनकी एक चिट्ठी आई है। वे कल सुबह मिलान मे आ रहे हैं।"

गायदो विस्मित भाव से एमा की ओर देखता रहा, फिर कहा—"पर तुम्हारे पिता तो कभी भी घर से बाहर नही जाते हैं।"

"उन्हे मजबूरन एक जगह जाना पड़ा था, अब नेपल्स लौटे जा रहे हैं। हम लोगो को देखते जाने के लिये इस रास्ते से आ रहे हैं।"

गायदो ने कहा—"तब?"

गायदो ने कहा—"कुछ भी नही,—तुम जैसे छोड़ गई थी, सब उसी तरह हैं।"

एमा बोली—"धन्यवाद ! तुम्हे और कोई एतराज तो नहीं है ?"

गायदो ने कहा—"एतराज किस बात का हो सकता है ? पर अन्त तक तुम्हारे पिता से प्रतारणा कर सकूँगा या नही, यही मुझे खटक रहा है।"

एमा कुछ व्यग्य के भाव से बोली—"क्यो, क्या हम लोग प्रेमी-जोड़ी का अभिनय अच्छी तरह नही कर सकेंगे ? अपने नव-विवाहित दिनो की याद करके उसी तरह अभिनय करने पर काम बन जायगा।"

गायदो ने झट उत्तर दिया—"वह सब तो मैं करीब-करीब भूल ही गया हूँ।"

दोनों ने एक बार एक-दूसरे की ओर गहरी दृष्टि से देख लिया, मानो एक दूसरे की शक्ति की परीक्षा करना चाहते हैं।

एमा बोली—"आज तुम्हे कहीं जाना तो नही था ? इस तरह तुम्हारा समय नष्ट कर देना मेरा बहुतही स्वार्थी का-सा काम हुआ है।"

"किसी विशेप काम से तो जाना नहीं था,—और जाना होता भी तो मैं नहीं जाता।"

एमा बोली—"मैं फिर तुम्हे धन्यवाद देती हूँ। खैर, तो आज की रात काम मे लगाई जा सकेगी।"

"क्या काम ?"

एमा बोली—"सब चीजे लाकर मकान ठीक कर लेना है न ? तुम्हे घर में रहने की कोई जरूरत नहीं है। कल दस बजे के पहिले तुम्हे कुछ भी नहीं करना है। इसलिये कहीं जाने की इच्छा होने पर तुम बिना-हिचक के जा सकते हो।"

देख पायें; बात या व्यवहार में असली परिस्थिति क्या है, यह किसी तरह भी प्रकट न हो। यह हम लोगों को करना ही है।"

गायदो चुप-चाप एमा की बात सुनता रहा। एमा के रुकने पर भी उसने कुछ नहीं कहा। तब वह अधीरता से बोली—"यह केवल अभिनय ही है, सो भी थोड़ी देर के लिये। इसमें इतना चिन्तित होने की बात क्या है?"

गायदो ने कहा—"मैं तो राजी हूँ। पर मुझे डर लग रहा है कि कहीं कुछ गड़बड़ होकर सब बात खुल न जाय!"

एमा बोली—"कैसे गड़बड़ होगी?"

गायदो ने कहा—"नौकर-चाकर तो हैं न?"

एमा बोली—"अपने नये नौकर को कल के लिये छुट्टी दे दो, मैं जुसेप्पो से बातें करके सब ठीक कर लूँगी।"

"अगर एकाएक कोई यार-दोस्त आ जाय?"

एमा बोली—"जुसेप्पो से कह देना—सबसे कह देगा कि हम लोग घर मे नहीं हैं।"

गायदो ने कहा—"हम लोगों को उनको स्टेशन से लाने के लिये जाना पडेगा न? हम लोगों को एक साथ देखने पर लोग क्या कहेंगे?"

एमा बोली—"हम लोग अगर अपने को न दिखायें तो कैसे देख पायेंगे? हम लोग एक बन्द गाड़ी मे जायँगे।"

गायदो ने देखा कि एमा दृढ है। फिर भी उसने कहा—"वे दिन भर यहाँ रहेंगे,—घर एक अविवाहित पुरुष के कमरे की तरह अस्त-व्यस्त हो गया है, यह क्या वे नही देख सकेंगे?"

एमा ने मुस्कराकर कहा—"अभिनय के लिये उसका साज-सामान भी तो चाहिये। मेरा बाजा, सिलाई की मशीन, दो-चार पोशाकें—यह सब मैं ले आऊँगी। क्या कमरों मे कोई परिवर्त्तन हुआ है?"

गायदो ने कमरे के भीतर से जाते हुये कहा—"गुड नाइट्!"

एमा ने मुँह न फेर कर ही जवाब दिया—"गुड नाइट्!"

(२)

पर विवाह के पहिले यह दोनो एक दूसरे से पागल की तरह प्रेम करते थे। गायदो ने एमा का पीछा करके सारी इटली मे चक्कर काटा था। कितनी ही रातें उसने बिना-सोये एमा की खिडकी के नीचे बिताई थी। एमा भी खिड़की पर खडी-खडी नहीं थकती थी और आठ-दस पृष्ठो का पत्र लिखना तो उसका रोज का काम हो गया था। विवाह के बाद भी तीन साल तक वे बहुत सुख से रहे। हाँ, कभी-कभी जरा खट-पट हो जाती थी, क्योंकि एमा बहुत दुलारी कन्या थी, और पति के सम्बन्ध मे वह कुछ ईर्षालु थी। गायदो बहुतही नर्म स्वभाव का आदमी था; पत्नी के झगडे के लिये उतारू होने पर वह जरा हँस भर देता था। पर इससे उल्टा नतीजा हो जाता था, एमा के क्रोध की आग मे घी पड़ जाता था। पर मेल होने मे भी देर नही लगती थी।

विवाह के बहुत पहिले गायदो एक किशोरी से प्रेम करता था, एकाएक इससे एक दिन भेंट हो गई। यह बात जानकर एमा बहुत नाराज हुई, और, "तुमने सत्य छिपाया है," यह कहकर गायदो का तिरस्कार करने लगी। गायदो भी पत्नी मे विश्वास की कमी देखकर नाराज हो उठा, और इस मामले को मामूली कह कर टाल दिया।

पर इसका नतीजा बहुत बुरा हुआ। एमा का सब प्रेम घृणा और द्वेष में बदल गया। वह बहुत ही गर्वित स्वाभाव की थी और पति के एक दूसरी युवती से प्रेम करने की बात सोच कर उसका अभिमान घायल हो उठा। उसने समझ लिया कि गायदो अभी तक उस युवती से प्रेम करता है।

उसने पति के पास जाकर कहा कि अब उनका एक साथ रहना असम्भव है। कोई शोर-गुल न करके अलग हो जाना ही बेहतर है।

गायदो बोला—"एक नाच मे मेरा निमन्त्रण था, पर तुम्हे आवश्यकता हो तो मैं नहीं जाऊँगा !"

एमा ने कुछ घबराहट से कहा—"नहीं-नहीं, मुझे कोई आवश्यकता नही है। यहाँ रहने पर हम लोगों को एक-दूसरे से बाते करनी पड़ेगी, पर हम लोगों के पास एक दूसरे से कहने लायक कोई बात नहीं है।"

गायदो बोला—"कोई बात नहीं है ! बहुत बाते हैं। खैर, मेरी आवश्यकता तो नहीं है न ? तो मैं जाकर कपड़े पहनूँ ?"

"हाँ।"

गायदो कमरे के बाहर चला गया। उसके चेहरे पर मानसिक संग्राम का कोई चिन्ह नहीं था, पर वह मन मे बहुत अशान्ति का अनुभव कर रहा था।

नाच मे जाकर भी वह बहुत अनमना रहा। बैरोनेस स्टिफेनिया समझ ही नही सकी कि उसे क्या हो गया है। कुछ समय के बाद ही गायदो लोगों के अनजान मे खिसक पड़ा और सीधा घर लौट आया। उसने चकित होकर देखा कि सारे मकान की शक्ल बदल गई है ! बड़ी बैठक अब तक बन्द रहती थी, आज खुली है और उसकी सब बत्तियाँ जल रही हैं। कपड़े रखने की आलमारियाँ, खाने की चीजे रखने की आलमारियाँ—सब खोली गई हैं, और फूलों की गंध से सारा मकान महक उठा है। एमा का पियानो आ गया है, उस पर गानों की किताब खुली धरी है। असबाबो को खिसका कर जरा दूसरे प्रकार से रक्खा गया है, फूलदानियो में गुलदस्ते रख दिये गये हैं। एमा स्वय एक सुन्दर पोशाक पहिन कर सारे मकान मे घूम-फिर रही है।

गायदो को लगा मानो वह स्वप्न देख रहा है। क्या एमा अपने घर लौट आई है ? दो वर्षों का भयानक वियोग, पति पत्नी का झगड़ा—यह सब क्या उसकी कल्पना मात्र थी ?

गायदो की कठोर सज्जनता ने उसे शक्ति दी। उनकी बात-चीत सन्तोष-जनक ही हुई। पिछली बातों का किसी ने उल्लेख नही किया, भविष्य की भी कोई चर्चा नहीं हुई। दोनो ने ही नम्र, स्थिर और विज्ञ व्यक्तियों का-सा व्यवहार किया। पर अगला दिन कैसा बीतेगा? बूढ़े को स्टेशन से लाने के बाद न जाने कितनी झूठी बातें उससे कहनी पड़ेगी—कितना मिथ्याचार करना पड़ेगा! फिर? फिर दोनों अभिनेता एक दूसरे को बहुत फासले से अभिवादन करेंगे और अपनी-अपनी राह पर चले जायँगे। किसी को भी अपने झगडे का फैसला करने की इच्छा नहीं थी। गायदो कभी भी पहिले नहीं बढ़ेगा और एमा भी कभी क्षमा नही करेगी। पति-पत्नी दोनो ने मन ही मन सोचा कि वर्त्तमान हालत में ही वे सुख से हैं, परिवर्त्तन की आवश्यकता नहीं है।

(३)

सध्या का भोजन अभी समाप्त हुआ था। एमा के पिता कुर्सी के पीछे टेक देकर आनन्द की हँसी हँस रहे थे। उस समय उनका चित्त सुख से भरपूर था। लड़की और दामाद ने उनकी बहुत आग्रह से अभ्यर्थना की है, सत्कार मे कहीं भी कोई त्रुटि नही हुई।

दोनों अभिनेता भी उनकी हँसी मे भाग लेकर हँस रहे थे, पर वे मन ही मन बहुत मुसीबत का अनुभव कर रहे थे। कल जो सब बहुत सहज लग रहा था, आज वह सब वैसा नही लग रहा था। स्टेशन से ही मुसीबत शुरू हो गई थी। एमा के पिता ने ट्रेन से उतरते ही एक हाथ से कन्या को और दूसरे से दामाद को आलिङ्गन करके चुम्बन किया। गायदो और एमा को मजबूरन एक दूसरे को नाम से सम्बोधन करना ही पड़ा और बहुत ही प्रेम मे डूबे पति-पत्नी का-सा व्यवहार करना पडा। गायदो का चेहरा रह-रह कर हृदय के आवेग के आधिक्य से लाल हो उठता था, एमा के मुख पर भी लाली दौड़ रही थी। वे अभिनय तो कर रहे थे, पर पिछले सुख के दिन उन्हे बहुत याद आ रहे

गायदो पर जैसे वज्रपात हुआ। पहिले उसने एतराज किया, सब मामले को मजाक से उड़ा देना चाहा, और पत्नी को समझाने की चेष्टा की! पर एमा ने ऐसे कठोर और ढिठाई के भाव से उत्तर दिया कि गायदो को चुप हो जाना पड़ा। पत्नी से और कुछ कहना उसने आत्म-सम्मान के विरुद्ध समझा, और गम्भीर भाव से एमा की सब शर्तों पर राजी होकर उसे जाने दिया। उसे पूरा विश्वास हो गया कि एमा हृदयहीन और बहुत घमडी है। इसके बाद वह राजनीति मे कूद पड़ा और सामाजिक आमोद-प्रमोद में भाग लेने लगा। वह अपने को ऐसा प्रकट करता था, जैसे इस दूसरी बार के कुँवारे जीवन मे वह बहुत सुख से है। पर जब वह अकेला रहता था, तब अपने निकट यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता था कि उसके जीवन का सुख और शान्ति सदा के लिये चली गई है। सामाजिक उत्सवों मे कभी-कभी उसकी एमा से भेंट होती थी। वे बिना बोले-चाले एक दूसरे को अभिवादन करके हट जाते थे। एमा शायद ही कभी बाहर निकली थी, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि गायदो से उसकी अधिक भेंट हो। पर अलग होने के पहिले उन्होंने एक शर्त्त की थी कि एमा के बूढ़े पिता को कुछ भी मालूम नही होने देंगे, दोनो पहिले की तरह उनको पत्र लिखगे।

फलतः एमा के पिता सेनर जर्जो से कुछ भी नहीं कहा गया। उनकी शान्ति नहीं टूटी। पर अब उनके मिलान में आने की बात से मुसीबत आ पड़ी।

अपने गर्वित स्वभाव की बाधा को अतिक्रम करके एमा को फिर पति के पास आना ही पड़ा। वह जिस घर को ऊँचा सिर करके छोड़ गई थी, वहाँ फिर प्रवेश करने मे उसे संकोच हो रहा था। पर वह बार-बार मन मे कहने लगी—"यह मैं पिता के लिये ही कर रही हूँ।"

एमा ने शान्त स्वर से कहा—"हॉ, ये वास्तव में आदर्श पति हैं।"

इन बातों के पश्चात् तीनों ही कुछ देर तक चुप रहे। गायदो सिर झुका कर जाने क्या सोचता रहा। फिर बूढ़े ने कहा—"तुम्हारी मौसेरी बहिन रोजेलिया ने तुमको प्रेम कहा है। उस बेचारी को अनेक दुःख सहने पडे हैं।"

एमा ने व्यग्य के भाव से कहा—"उसने तो अपने पियारो से शादी की थी!"

एमा के पिता ने कहा—"हॉ, शादी की तो थी, उनका एक-दूसरे के प्रति प्रेम भी था, पर एक-दूसरे से पटी नही। लड़ाई-झगड़ा करके आखिर रोजेलिया घर लौट आई।"

एमा कह उठी—"उसने ठीक किया है।"

बूढे ने कहा—"नहीं बेटी, ऐसा न कहो। पति को छोड़ कर चला जाना पत्नी को कभी उन्नित नहीं है। खैर, मेरे समझाने पर अब सुलह हो गई है,—अब रोजेलिया पति के घर लौट गई है।"

एमा बोली—"तुमने आखिर सुलह करा दी, पापा?"

बूढ़े ने कहा—"हॉ बेटी, इसके लिये मुझे बहुत गर्व है। तुम्हारी स्वर्गीय माता की भी यही राय थी, वे बहुत ही क्षमाशील थीं। वे सदा कहती थीं—'जो अधिक प्रेम करते हैं, वे क्षमा भी अधिक करते हैं।'"

कुछ देर तक सब चुप रहे। फिर बूढ़े ने कहा—"चलो बेटी, तुम्हारा घर-द्वार सब घूम कर देख आयें। चारों तरफ रेशम और मखमल की भरमार देख रहा हूँ,—चलो देखे तो सही!"

गायदो ने कहा—"चलिये, बड़े कमरे से पहिले शुरू करे।"

बूढे ने उस कमरे मे प्रवेश करके कहा—"बहुत सुन्दर कमरा है! बड़ी दावत के लिये बिल्कुल उपयुक्त है। क्या तुम लोग बहुत अधिक दावतें देते हो?"

थे। उन दिनों दोनों के प्रति एक-दूसरे का जो मनोभाव था, वह बार-बार मन मे जाग्रत हो रहा था। इसके सिवाय उनको सदा शकित रहना पड़ रहा था कि किसी असावधानी से बूढ़े को सब बातों का पता न लग जाय। वे दोनों ही बहुत विचलित हो उठे थे; जाने क्यों उनको बार-बार ऐसा लग रहा था कि इस अभिनय से उनके 'जीवन मे एक भारी परिवर्त्तन आ पड़ेगा।

भोजन के बाद वृद्ध ऊपर चले। एमा और गायदो उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। एमा ने मतलब-भरी दृष्टि से गायदो की ओर देखा। गायदो ने उसके मन की बात समझ ली कि एमा सोच रही है—"कैसे हम लोग आज दिन भर यह अभिनय करते रहेंगे?"

गायदो ने भी मतलब-भरी दृष्टि से उत्तर दिया—उसके हृदय का भाव था—"हम लोग शक्ति भर करते जायें, फिर सब परमात्मा की इच्छा है।"

इसके बाद अभिनय करना और भी कठिन हो गया, क्योंकि एमा के पिता बैठने के कमरे में जाकर आराम कुर्सी पर बैठ गये और भाँति-भाँति के प्रश्न पूछने लगे, उनका उत्तर देते-देते पति-पत्नी दोनों ही बहुत परेशान हो गये।

बूढ़े ने कॉफी पीते-पीते कहा—"आज तुम लोगों के साथ एक दिन बिता कर मैं कितना सुखी हुआ हूँ, यह कह नहीं सकता। बेटी, तुम लोगों की चिट्ठियाँ तो मैं सदा पाता रहता हूँ, लेकिन आँखों से देखने से जो आनन्द होता है, उसकी तुलना नहीं है। तुम पहिले से भी अधिक सुन्दर हो गई हो—है न गायदो?"

गायदो ने मुस्करा कर कहा—"हाँ, मैं भी यही कहा करता हूँ।"

बूढ़े ने कहा—"बिल्कुल सही है। एमा, तुमने एक आदर्श पति पाया है। गायदो अपनी चिट्ठियों में तुम्हारी बात के सिवाय और कुछ भी नहीं लिखता है। तुमने इस पर बिल्कुल जादू कर दिया है!"

गायदो ने मुस्करा कहा—"हाँ, यही समझा गया था।"

एमा के पिता ने कहा—"तुम दोनो का प्रेम वैसा ही गहरा रहे, यही मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।"

गायदो ने कहा—"वही आशा मैं भी करता हूँ।"

वृद्ध चलते-चलते एक कमरे के सामने जाकर बोले—"इस कमरे मे क्या है ? यह बन्द क्यों हैं ?"

इस कमरे मे आज-कल गायदो सोता था, एमा ने इसमे प्रवेश नही किया था। उन्होने यह नही सोचा था कि वे सब कमरे देखना चाहेगे।

गायदो क्या कहे, यह नही सोच पा रहा था। एमा ने झट कह दिया—"यह एक फालतू सोने का कमरा है।"

बूढ़े ने कहा—"अच्छा, मैं अगर रात को रहता तो मुझे यही कमरा देते ? दुःख की बात है कि मैं किसी तरह भी नही रह सकूँगा।"

गायदो बोला—"आप एक दिन भी यहाँ नहीं रह सके, इसके लिये हम लोग बहुत दुःखित हुये हैं।"

"अच्छा, अच्छा, फिर कभी आकर रहूँगा। अब कमरे को देख कर मन का दुःख मिटा लूँ। द्वार खोल दो।"

एमा बोली—"पर पापा—"

उसके पिता ने कहा—"कमरा सजाया नहीं है, यही कहना चाहती हो न ? तो हर्ज ही क्या है ?"

गायदो ने देखा कि बूढ़े को रोकना व्यर्थ है, उसने साहस करके दरवाजा खोल दिया।

बूढ़े ने कमरे मे प्रवेश करके कहा—"बहुत सुन्दर कमरा है। क्यों, कमरा सजाया तो है ? अच्छा ! एमा की तस्वीर टँगी है ! गायदो ने अवश्य ही मुझे खुश करने के लिये यही टाँग दी है। धन्यवाद ! तुमने इस बात की भी याद रक्खी, इसमे मैं बहुत खुश हुआ हूँ।"

गायदो ने झट कहा—"पहिले और भी अधिक दिया करते थे।"

उसके ससुर ने कहा—"हाँ, सो तो होगा ही, अब राजनीति में बहुत समय बीत जाता होगा। और क्या यह स्त्रियों के बैठने का कमरा है? कितना सुन्दर है! क्या एमा यह सब असबाब अपनी पसन्द से लाई है?"

एमा बोली—"नहीं, गायदो ही यह सब लाये हैं।"

बूढ़े ने हँस कर कहा—"तुम्हारी पसन्द की तारीफ करनी चाहिये। एमा, क्या तुम अपना समय यहीं काटती हो?"

फिर शयन-कक्ष मे प्रवेश करके उन्होंने कहा—"इस कमरे का रंग बहुत सुन्दर है। पर एमा, मैं एक चीज नहीं देख रहा हूँ?"

एमा ने घबरा कर पूछा—"क्या पापा?"

"तुम्हारी अम्माँ की तस्वीर क्या हो गई? वह तो इसी कमरे मे रहनी चाहिये।"

एमा को बहुत परेशान देख कर गायदो बोला—"हम लोग बहुत दिनों तक बाहर थे—अभी तक सब सामान आया नहीं है।"

बूढ़े ने कहा—"उस तस्वीर को छोड़ आना उचित नही हुआ। खैर, एमा अपनी माँ को कभी नही भूल सकती। गायदो, तुम उनको नही जान सके, मुझे इसका बहुत अफसोस है। उन्होंने मरते समय मुझसे प्रतिज्ञा करा ली थी कि एमा के सुख के लिये मैं सब कुछ करने को तैयार रहूँ। इसलिये जब एमा ने तुमसे प्रेम किया, तब उनकी बाते स्मरण करके कोई बाधा नहीं दी। एमा, अग्रेजी राजदूत के घर मे नाच की बात तुम्हे याद है? जहाँ हम लोग गायदो के साथ गये थे?"

एमा ने यन्त्र-चालित की तरह कहा—"हाँ।"

बूढ़े ने मुस्करा कर कहा—"तुम लोगों की सगाई हुई है, यह वहाँ कहने की आवश्यकता नही हुई थी, तुम लोगों के मुख देख कर ही सब लोग समझ गये थे।"

इकट्ठा करके ले आना है। नौकरानी अकेली नहीं कर सकेगी। सामान इकट्ठा करके चली आऊँगी।"

गायदो ने कहा—"अच्छी बात है।"

घर पहुँचते ही एमा अपनी छोटी कोठरी में चली गई। गायदो बैठक मे जाकर अखबार पढ़ने लगा। वह पढ़ने का छल कर रहा था —उसका ध्यान था बगल की कोठरी मे। इसी बीच मे एमा द्वार के सामने से आने-जाने लगी थी—गायदो यही देख रहा था।

एक बार उसने एमा को बुला कर कहा—"तुम्हे थकावट नहीं लग रही है?"

एमा बोली—"नही, मेरा काम भी खतम हो आया।"

थोड़ी देर के बाद एमा ने कमरे में आकर प्रवेश किया। एक कुर्सी पर बैठ कर बोली—"क्या अभी तक पानी बरस रहा है?"

वह क्लान्त दीख रही थी।

गायदो ने अखबार झुका कर कहा—"हाँ, बरस रहा है।"

एमा ने पूछा—"क्या मेरी बग्धी अभी तक नहीं आई?"

गायदो ने कहा—"पता नही, अच्छा मैं जाकर देख आता हूँ।"

एमा बोली—"रहने दो, क्यों तकलीफ करोगे। अभी आ जायेगी।"

गायदो ने पूछा—"तुम्हे घर छोड़ आऊँ?"

"नहीं, कोई जरूरत नहीं।"

समय मानो कटना नही चाहता था। नौकर ने आकर जब खबर दी कि बग्धी आ गई है, तब एमा झटपट टोपी पहिनने लगी। टोपी मे कॉटी लगाने मे उसकी ॲगुलियाँ कॉप रही थी।

टोपी पहिनने के बाद दस्ताने पहिन कर वह तैयार हुई। दर्पण के सामने खडे होकर पोशाक को भी दुरुस्त कर लिया। फिर विदा लेने के लिये गायदो की ओर घूम कर खडी हो गई। गायदो पीले चेहरे से उठ कर खड़ा हुआ।

वे फिर बैठने के कमरे मे जा कर बैठे। दोनों पति-पत्नी बहुत ही अनमने दीख रहे थे। अगर एमा के पिता बहुत सरल न होते, तो वे अवश्य ही कुछ सन्देह करते। पर इस ओर उनकी दृष्टि ही नहीं थी। बैठ कर उन्होंने कहा—"ऐसा सुन्दर मकान छोड़ कर बार-बार तुम लोगो को बाहर जाना पड़ेगा—यह बहुत दुःख की बात है।"

एमा ने चकित होकर कहा—"क्या पापा ?"

उसके पिता ने कहा—"गायदो अगर प्रतिनिधि निर्वाचित हो जायँ, तो इनको साल में छः महीने रोम मे जाकर रहना पड़ेगा। तब क्या वे तुमको मिलान अकेला छोड़ जायँगे ? तुम लोगो को दो जगह दो मकान रखने पड़ेंगे। तुम लोगों को बहुत परेशान होना पड़ेगा, पर मुझे कुछ सुविधा होगी। जब तुम रोम मे रहोगे, तब मैं तुम लोगो को सदा देख पाऊँगा, क्योंकि नेपल्स रोम के बहुत पास है।"

(४)

पिता को ट्रेन मे बिठा कर पति-पत्नी फिर बग्घी में आ बैठे। दोनों को मानो चैन मिला।

अभिनय समाप्त हो गया है; अब वे अपने साधारण जीवन-पथ में लौट जा सकेंगे। एमा खिड़की से बाहर की ओर देखती रही, और गायदो का हाथ पत्नी की देह से छू गया।

गायदो ने कहा—"कुछ बुरा न मानो।"

एमा ने गम्भीर भाव से कहा—"नहीं, बुरा क्यों मानूँगी ?"

वे मानो बहुत दूर के आदमी हैं ! पर दोनों के ही हृदयों में दिन भर की घटनाये चक्कर काट रही थीं। उन्होंने एक दूसरे से क्या कहा था, आदि।

सड़क के चौराहे पर बग्घी के आते ही गायदो ने पूछा—"क्या तुम सीधी अपने घर चली जाना चाहती हो ?"

एमा बोली—"नहीं। मुझे तुम्हारे मकान मे जाकर सब समान

नार्वे

प्रलोभन

लेखिका—योहाना बूडे

"आज सुबह मिस्टर चाल्र्स राबर्ट से मेरा परिचय हुआ; उसने तुम्हे नमस्ते कहा है . "

जब इवाना अपने पति को चाय का प्याला आगे बढा कर दे रही थी तब पति ने अखबार से मुँह उठा कर इतनी बात कही।

इवाना ने उदास ऑखो को उठा कर एक बार मकान के सामने की फुलवारी की ओर देखा—विचित्र रंगों के फूलों पर अस्तमान सूर्य की गुलाबी किरणो ने फैल कर एक अपूर्व इन्द्रजाल की सृष्टि कर डाली थी ..

"अच्छा ! क्या वह इस समय इसी शहर मे है ?" वह बोली।

"वह तो यहॉ बहुत दिनों से है; पर वह शहर के पूरब की तरफ रहता है और वह बहुत व्यस्त रहता है। कचहरी की 'बार-लाइब्रेरी' में उससे अक्सर भेंट होती है। सिर्फ आज बात-चीत से पता लगा कि उसका घर फ्रीजलैंड मे है, और बचपन मे तुम दोनों मे जान-पहिचान भी थी।"

"हॉ...थी.. हम लोगों का घर एक ही गॉव मे था। उसका बाप गॉव का पुरोहित था। क्या राबर्ट ने शादी की है ?"

"नही, अभी तक नहीं की है, पर उसकी शादी करने की उम्र अभी बीती नही है...। इस उम्र मे ही वकालत में उसे काफी सफलता मिल गई है।"

एमा ने धीमे स्वर से कहा—"विदा !"

गायदो ने उत्तर नही दिया। एमा कमरे से बाहर निकल गई। उसके क़दमों मे दृढता थी—वह बिल्कुल ही कातर नहीं हुई है, यह वह प्रकट करना चाहती थी। उसने पीछे घूम कर एक बार भी नहीं देखा, पर गायदो उसके पीछे आ रहा है, यह वह अच्छी तरह समझ रही थी।

द्वार के सामने एक भारी मखमल का पर्दा लटक रहा था। उसे उठाने के लिये एमा के हाथ बढाते ही गायदो ने तेजी से पर्दे को खींच लिया। उसका हाथ एमा के हाथ से छू गया।

गायदो ने कहा—"एमा, तुमने मुझे क्षमा कर दिया है, यह बात कहना तुम भूल गई हो।" उसका स्वर गम्भीर और वेदनापूर्ण था।

एमा ने उसकी ओर तेजी से देख कर उसी क्षण उसकी छाती में मुँह छिपा लिया। पुराने प्रेम की बाढ फिर नई होकर उसे बहा ले गई।

गायदो ने पत्नी को प्रगाढ आलिङ्गन मे बाँध कर पूछा—"तुम और कभी मुझे छोड़ कर चली तो नही जाओगी ?"

एमा उसके कधे मे मुँह छिपा कर बोली—"नहीं गायदो। अपनी माँ की तस्वीर यहीं ले आऊँगी।"

इसीलिये उसके भावुक उच्छ्वास के जवाब मे वह तीखी व्यग्य भरी हँसी से उसे अप्रतिभ कर देती थी।...

फिर सहसा उनके जीवन मे आया—एक भारी परिवर्त्तन...

राबर्ट यूनिवर्सिटी में पढने के लिये चला गया; इवाना की शादी हो गई; किशोर-जीवन के हँसी-मजाक से भरे दिन स्मृति के कक्ष मे सचित होकर रह गये।...

× × ×

उसकी शादी हुये दस साल हो गये हैं, किन्तु इस लम्बी दस वर्ष की अवधि मे उसने यथार्थ प्रेम का स्वाद एक दिन के लिये भी नही पाया...

बचपन के अनोखे, चचल दिन . उनके बीच खेलो के साथी राबर्ट की आज उसे बार-बार याद आ रही है!

राबर्ट खेल मे इवाना के निकट अपनी इच्छा से पराजय स्वीकार करके विषाद भरी आँखो से उसकी ओर देखता रहता था,—उन आँखों मे व्यर्थ प्रेम की गूढ वेदना का अँधेरा मँडरा उठता था।।

... गर्वित, विजयी इवाना व्यग्य भरी तीखी हँसी से उसका उत्तर देती थी!

आज इवाना ने अपनी उस हृदय-हीनता का स्मरण करके सहसा हृदय मे एक कोमल, आर्द्र वेदना अनुभव की।

बच्चों के शोर-गुल से उसकी चिन्ता के मायाजाल टुकडे-टुकडे हो जाते हैं

कलरव करते हुये वे कमरे में प्रवेश करते हैं—

टेडी और एमा।

कोई माँ की गोद मे चढ़ बैठता है; कोई पीठ पर चढ़ कर नन्हे नन्हे हाथ माँ की गरदन मे डाल देता है...

"वह मुझसे दो साल बड़ा है", इवाना यन्त्रचालित सी कहती गई—"उसकी उम्र इस समय तीस से कम नहीं होगी।"

"हाँ, ऐसी ही होगी। अच्छा—अब मैं जा रहा हूँ,—आज रात को शायद लौट कर नहीं आ सकूँगा..."

× × ×

"अब मैं जा रहा हूँ—रात को लौट नहीं सकूँगा..." इवाना इसी तरह की प्रेमहीन, रूखी बातें विवाहित जीवन के लम्बे दस वर्षों से सदा सुनती आ रही है...

उसके प्रति पति की यह उदासीनता अब उसे सह्य हो गई थी... वह अब पति को प्रेम के झूठे अभिनय से आकर्षित करना नहीं चाहती...

एक रिक्त, नग्न और उदार क्लान्ति ने उसके हृदय को घेर लिया है...

× × ×

वह धीरे-धीरे बच्चो के लिये खाने की चीज़ें सजा कर रखती है—अनमने भाव से...

चंचल, तेज गति से उसकी स्मृति भागती जाती है—दूर, अतीत की ओर...

कर सम्मान के साथ अभिवादन किया तब इवाना ने उसकी ओर एक बार देख कर सिर झुका कर उत्तर दिया।

पथिक की गहरी दृष्टि इवाना के हृदय के भीतर तक चली गई।...

वे विषादभरी, वेदना से घायल, शान्त आँखें,—इवाना उन्हे अच्छी तरह जानती है!

उसके पति से दो-चार बाते करके पथिक ने फिर एक बार इवाना की ओर देख कर पैर बढाये।

उसके पति ने कहा, "राबर्ट बहुत ही सज्जन है! उसका व्यवहार बहुत अच्छा है।"

अनमने भाव से इवाना ने न जाने क्या उत्तर दिया, कुछ समझ में नहीं आया।

"मैंने अखबार मे पढ़ा है, राबर्ट एक भारी मुकदमा लेने के लिये एम्स्टर्डम जा रहा है...बड़ा भाग्यवान् है...अच्छा तो जा रहा हूँ .." कहता-कहता उसका पति सड़क की एक मोड पर अदृश्य हो जाता है।

इवाना अनमनी होकर चलती है—उसका सारा तन-मन किसी अनजान स्वप्न मे मग्न हो गया था ..

.. अगर उससे भेंट होती तो इवाना उससे न जाने कितनी बाते करती! अपने गॉव की बाते...बचपन की बाते...उस समय के मित्र और साथियों की बाते - और भी कितनी ही बाते!

इवाना के तेज कदम सुस्त पड़ते गये...

क्रमशः गली के चौराहे पर अपने मकान की फुलवारी का छोटा फाटक दीखता है ..

उसके पीछे खडे अध खिले 'क्राइसेन्थिमम्' फूल सिर हिला रहे थे...

एकाएक परिचित स्वर सुन कर इवाना चौक उठती है—स्वप्न टूट जाता है!

इवाना के आनन्दहीन, रूखे जीवन में स्वर्ग की कमनीयता लाते हैं ये बच्चे...

वे माँ के पास अपनी पुस्तकें लेकर बैठते हैं—कोई पाठ सुनाता है; कोई अर्थ पूछता है ।

इवाना के मानस-चक्षु मे अतीत का चित्र धीरे-धीरे मलीन होकर अन्त मे विलुप्त हो जाता है !

× × ×

जाड़े का सुबह—

शहर की चौड़ी सड़क पर प्रभात-सूर्य का मीठा प्रकाश बिखरा पड़ा है...

उस धूप की ओर पीठ करके भिखारी कातर स्वर से भीख माँग रहा है ।

अखबार बेचने वाला चिल्ला कर विदेशी खबरो की घोषणा कर रहा है ।

सड़क की दोनों तरफ की पटरियों पर लोगों की भीड क्रमशः बढ़ रही है...

एक रिश्तेदार के घर से इवाना अपने पति के साथ लौट रही है...

थोड़ी दूर आकर पति ने कहा, "यहाँ एक मुवक्किल से मुझे एक जरूरी काम है ! क्या अकेली घर जाने में तुम्हे कोई असुविधा होगी—?"

"बिल्कुल नहीं ।"

ठीक उसी क्षण सड़क के उस पार भीड़ में बढ़ते हुये एक पथिक पर इवाना की दृष्टि पड़ी ।

साथ ही साथ पथिक की दृष्टि से उसकी दृष्टि टकराई और दूसरे ही क्षण शरमा कर इवाना ने आँखे नीची कर लीं ।...

फिर जब पथिक ने सड़क पार करके इधर आने पर टोपी उतार

उसका समस्त हृदय जाने कैसे एक अस्पष्ट आनन्द मे ढँक जाता है !—विजय का आनन्द !

"आज-कल शाम को कहीं टहलने-वहलने जाती हो ?"

"हाँ, बच्चों को साथ लेकर..."

"ओह ! अच्छा ! अच्छा ! कितने बच्चे हैं तुम्हारे ?"—राबर्ट के स्वर मे मानो विस्मय का भाव है !

"एक लड़का और एक लड़की..." नीचे की ओर देखती हुई इवाना उत्तर देती है ।

फिर दोनों चुप रह जाते हैं...

बग्धियाँ दौड़ती चली जाती हैं । फेरी वाले अपने माल की पुकार लगाते चले जाते हैं । झुंड पर झुंड बच्चे स्कूल की ओर दौड़ते हैं...

लेकिन ये दो स्त्री और पुरुष काँपते हृदयों से चुपचाप खड़ रहते हैं—उनकी दृष्टि पैर के नीचे की बर्फ से ढँकी भूमि की ओर लगी हुई है !

अन्त मे इवाना कहती है, "सुना है, तुम विदेश जा रहे हो ?"

"अभी तक निश्चित नहीं हुआ है । पहिले सोचा था—जाऊँगा । लेकिन अब...जाने का उत्साह वैसा नही है, इवा ।"

कोई उत्तर नहीं मिलता...

"तुम आजकल 'स्केटिङ्ग' करने नहीं जाती हो, इवा ?"

"कभी-कभी जाती हूँ ।"

स्वर में अनुरोध भर कर, राबर्ट ने कहा, "आज शाम को आओगी ? आज वहाँ भारी मेला है ! आज वहाँ आतिशबाजियाँ छूटेंगी; रोशनी होगी; नाच होगा ।...आओगी ?"

इवाना आँखे उठाकर देख नही सकती ।

पुरुष की आँखों की आह्वान-भरी उज्ज्वल दृष्टि की नारी अपने दुर्बल हृदय से उपेक्षा नहीं कर सकती...

आँखें उठा कर देखा—सामने राबर्ट खड़ा है !

इवाना के पैर से सिर तक सारी देह में एक कम्पन होता है—चेहरा लाल हो उठता है—हृदय का रक्त जम जाता है !

अपने को किसी तरह सम्हाल कर कहती है, "नमस्ते ! अच्छे हो न 'राब्' ?"

इवाना उसे और किसी दूसरे नाम से सम्बोधन कर ही नहीं सकती ।

इवाना का दाहिना हाथ राबर्ट के दाहिने हाथ की मुट्ठी मे जा मिलता है—वह गर्म, शक्तिमान् हाथ इवाना के निकट कितना परिचित है !

"क्या आज भी तुम्हे 'इवा' कह कर सम्बोधन कर सकता हूँ ?" राबर्ट ने कहा ।

"हाँ.. कर सकते हो ।" इवाना ने हृदय में एक क्षीण वेदना अनुभव की !

मुस्कान की आड़ मे हृदय का भाव छिपा कर राबर्ट बोला, "एक साल से इस शहर मे हूँ; इतने दिनो के बाद तुम से भेंट हुई ।"

इवाना ने मुस्करा कर उत्तर दिया, "सो ठीक है ! पर तुम मुकदमों और मुवक्किलो के कारण पूरब की तरफ रहते हो; और मैं अपनी गृहस्थी के साथ पश्चिम मे रहती हूँ; इसलिये..."

हँसी-मजाक के साथ वार्त्तालाप सहज भाव से बढ़ने लगा ।

इवाना बोली, "जानते हो 'राब्' ? पहिले मैं तुम्हे पहिचान ही नहीं सकी थी, तुम इतने बदल गये हो !"

राबर्ट ने इवाना के मुख पर दृष्टि जमा कर कहा, "मेरे बाहर चाहे जितना भारी परिवर्त्तन हुआ हो, हृदय मे आज भी कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ है इवा !"

इवाना भूमि की ओर देखती रही...

उसका समस्त हृदय जाने कैसे एक अस्पष्ट आनन्द मे ढँक जाता है !—विजय का आनन्द !

"आज-कल शाम को कहीं टहलने-वहलने जाती हो ?"

"हॉ, बच्चों को साथ लेकर..."

"ओह ! अच्छा ! अच्छा ! कितने बच्चे हैं तुम्हारे ?"—राबर्ट के स्वर मे मानो विस्मय का भाव है !

"एक लड़का और एक लड़की..." नीचे की ओर देखती हुई इवाना उत्तर देती है ।

फिर दोनों चुप रह जाते हैं ..

बग्घियॉ दौड़ती चली जाती हैं । फेरी वाले अपने माल की पुकार लगाते चले जाते हैं । झु ड पर झु ड बच्चे स्कूल की ओर दौड़ते हैं...

लेकिन ये दो स्त्री और पुरुष कॉपते हृदयों से चुपचाप खड़ रहते हैं—उनकी दृष्टि पैर के नीचे की बर्फ़ से ढँकी भूमि की ओर लगी हुई है !

अन्त मे इवाना कहती है, "सुना है, तुम विदेश जा रहे हो ?"

"अभी तक निश्चित नहीं हुआ है । पहिले सोचा था—जाऊँगा । लेकिन अब...जाने का उत्साह वैसा नही है, इवा ।"

कोई उत्तर नहीं मिलता...

"तुम आजकल 'स्केटिङ्ग' करने नहीं जाती हो, इवा ?"

"कभी-कभी जाती हूँ ।"

स्वर मे अनुरोध भर कर, राबर्ट ने कहा, "आज शाम को आओगी ? आज वहॉ भारी मेला है ! आज वहॉ आतिशबाजियॉ छूटेंगी; रोशनी होगी; नाच होगा ।...आओगी ?"

इवाना ऑखें उठाकर देख नहीं सकती ।

पुरुष की ऑखों की आह्वान-भरी उज्ज्वल दृष्टि की नारी अपने दुर्बल हृदय से उपेक्षा नहीं कर सकती...

आँखे उठा कर देखा—सामने रावर्ट खड़ा है !

इवाना के पैर से सिर तक सारी देह मे एक कम्पन होता है—चेहरा लाल हो उठता है—हृदय का रक्त जम जाता है !

अपने को किसी तरह सम्हाल कर कहती है, "नमस्ते ! अच्छे हो न 'राव्' ?"

इवाना उसे और किसी दूसरे नाम से सम्बोधन कर ही नहीं सकती ।

इवाना का दाहिना हाथ रावर्ट के दाहिने हाथ की मुट्ठी मे जा मिलता है—वह गर्म, शक्तिमान् हाथ इवाना के निकट कितना परिचित है !

"क्या आज भी तुम्हे 'इवा' कह कर सम्बोधन कर सकता हूँ ?" रावर्ट ने कहा ।

"हाँ...कर सकते हो ।" इवाना ने हृदय में एक क्षीण वेदना अनुभव की !

मुस्कान की आड़ मे हृदय का भाव छिपा कर रावर्ट बोला, "एक साल से इस शहर मे हूँ; इतने दिनों के बाद तुम से भेंट हुई ।"

इवाना ने मुस्करा कर उत्तर दिया, "सो ठीक है ! पर तुम मुकदमों और मुवक्किलों के कारण पूरब की तरफ रहते हो; और मैं अपनी गृहस्थी के साथ पश्चिम मे रहती हूँ; इसलिये..."

हँसी-मजाक के साथ वार्त्तालाप सहज भाव से बढ़ने लगा ।

इवाना बोली, "जानते हो 'राव्' ? पहिले मैं तुम्हे पहिचान ही नहीं सकी थी, तुम इतने बदल गये हो !"

रावर्ट ने इवाना के मुख पर दृष्टि जमा कर कहा, "मेरे बाहर चाहे जितना भारी परिवर्त्तन हुआ हो, हृदय मे आज भी कोई परिवर्त्तन नही हुआ है इवा !"

इवाना भूमि की ओर देखती रही...

वह आज जीवन का उपभोग करेगी...! इसमें पाप या दोष क्या है...? दोनों एकान्त में बैठ कर दो बातें करेंगे; कुछ समय तक नाचेंगे...इसमें पाप या दोष क्या है ? अपराध ही क्या है ?

वह अपने इस आनन्दहीन रूखे जीवन मे कविता का थोड़ा सा रस सींच लेना चाहती है...

अपने क्लिष्ट अस्तित्व के बीच वह क्षण भर की आनन्द-सिहरन लाना चाहती है...

ओवर-कोट पहिन कर पीठ पर पशमीने का 'स्कार्फ' डाल कर इवाना फिर एक बार बालो को ठीक कर लेती है...

पाउडर के 'पफ्' को फिर एक बार कपोलों पर फेर लेती है...

रूमाल पर फिर एक बार सुगध डालती है।

सहसा, आवाज के साथ द्वार खुल जाते हैं और चचल कदमों से टेडी कमरे मे प्रवेश करता है—इवाना के जीवन की प्रथम स्वर्णिम किरण!

"अम्माँ, तुम यहाँ हो! ओ, तुम कहीं जा रही हो?"

"हाँ, टेडी!"

इवाना एकटक उसे देखती है—कितना सरल, उज्ज्वल सौन्दर्य बालक के चेहरे पर है!

"क्या तुम अब तक खेल रहे थे?"

"हाँ अम्माँ!—जानती हो अम्माँ—आज फिर सब लडके हैरी को बना रहे थे;—हैरी को तो तुम जानती हो? अरे उस मुहल्ले में रहता है..."

हाँ, इवाना उसे जानती है। उसकी माँ को भी वह जानती थी—साल भर हुआ वह अपने पति और पुत्र को छोड़ कर एक अपरिचित के साथ जाने कहाँ चली गई है!

पसोपेश के साथ उत्तर देती है, "पक्का वायदा नहीं कर सकती, मैं..."

"क्यो नहीं इवा ?" राबर्ट ने उसके कोमल हाथ को अपने हाथ मे ले लिया, "तुम क्या मुझ से डरती हो ? मुझ पर अविश्वास करती हो ?"

इवाना चुप रहती है—उसके सारे मुख पर लाली फैल जाती है...

राबर्ट ने उसके कम्पित कोमल हाथ को धीरे से दबाते हुये कहा, "आ जाना, अच्छा ! आ जाना, आज शाम को मुझे निराश न करना इवा..."

और राबर्ट चला जाता है—

इवाना के हृदय पर एक दुर्लंध्य प्रभाव छोड़ जाता है...उसका आकर्षण अदम्य है !

× × ×

कमरे के बड़े दर्पण के सामने खड़ी होकर इवाना शृगार कर रही है।

उसका उद्वेलित हृदय उत्तेजना से भर उठा है ..

उसे लग रहा है—मानो उसके सामने एक नये जीवन का द्वार खुल गया है...

इतनी अवधि तक जीवन मे उसने क्या पाया है ?—अनादर, अवहेलना, और कदाचित् घृणा !

वह अपने पति की गृहस्थी मे एक विश्वास-पात्र नौकरानी भर है—उसने जीवन मे इससे अधिक प्रतिष्ठा कब पाई है...? उसके जीवन मे भोग नहीं है, आनन्द नही है, चचलता नहीं है—है केवल नीरस और कठोर कर्त्तव्य...

इवाना दर्पण मे अन्तिम यौवन के भार से अवनत अपनी सुन्दर देह की ओर एकटक देखती रहती है...

आज की शाम के लिये उसका सारा चित्त प्यासा हो उठा है...

टेडी कहता है, "आज फिर वे हैरी को, उसकी माँ को बदनाम कर के, बना रहे थे..."

"वे सब लड़के नटखट हैं, तुम उनके साथ मत खेला करो !"—इवाना का स्वर काँप जाता है !

"पर वे तो मुझ से कुछ भी नहीं कहते हैं, अम्माँ । तुम उनको खाने के लिये चटनी देती हो इसलिये वे तुमको प्यार करते हैं !"

सहसा इवाना पुत्र को हृदय से लगा लेती है—चुम्बनो से उसका मुख भर देती है ।

क्षण भर के बाद टेडी बोला, "तुम कहाँ जाओगी अम्माँ ?"

"कही नही जाऊँगी, बेटा,"—इवाना अपनी देह से ओवर-कोट उतार देती है । उसका चेहरा सफ़ेद हो गया है; दोनो पतले ओंठ एक दूसरे से आबद्ध होकर जाने क्या, एक पक्का विचार, प्रकट कर रहे हैं ।

हृदय में एक दारुण सग्राम समाप्त होकर धीरे-धीरे उसकी सारी देह मे एक स्निग्ध क्रान्ति फैल जाती है !

टेडी प्रफुल्लित होकर कहता है, "कहीं नही जाओगी ? ओह, तब तो बड़ा अच्छा है ! तो अम्माँ, कल की उस राजकुमारी का क़िस्सा आज रात को खतम करना ही पड़ेगा ! मैं एमा को बुला लाता हूँ; अभी सुनाओगी ? बहुत बड़ा क़िस्सा है न !"

इवाना सोफ़ा पर बैठ कर कहती है, "जाओ बेटा, एमा को बुला लाओ..."

चन्चल बालक क्षण भर मे कमरे से बाहर निकल जाता है...

इवाना उसके तेज, चंचल क़दमों की ओर मुग्ध नयनों से देखती है...

एक अकथनीय आत्म-तृप्ति की चमक से उसका सारा चेहरा उज्ज्वल हो उठता है ।

और सावधानी से पोंछ देता है—जैसे वह बादशाह का ही बेटा हो; फिर बाज के गले पर हाथ फेर कर, ओठों से चुमकारी दे-दे कर, दिलासा देता रहता है और बाज सुख के आवेश मे आँखे बन्द करके बाज-बरदार के कन्धे पर सिर टेक कर शिकार करने का सुख-स्वप्न देखता रहता है।

रहीम अगर अपनी आयु के दस सालों या अपने हाथ की दस अँगुलियों मे से एक के बदले मे उस गर्व से गम्भीर बाज को हाथ में लेकर एक बार भी दुलार कर पाता! पर वह उस बाज़ को छू भी नही सकता था—वह ठहरी बादशाही चिड़िया! बादशाह का हुक्म है कि बादशाह के खानदान और अमीर-उमरावों के सिवाय और किसी को भी बाज पालने की या बाज का शिकार खेलने की सख्त मुमानियत है—बाज बादशाही चिड़िया है। उनके तेज नाखून कमख्वाब के दस्तानों के भीतर बन्द रहते, उनकी आँखे कोमल रेशमी धागे से मख-मल की पट्टी मे बँधी रहती, वे ताजे गोश्त का कबाब खाते और विशेष खिदमतगार लोग विचित्र शब्दों के द्वारा सभ्याचार के साथ उनसे बाते करते! जब रहीम बाजो की आलस्य से मिचती हुई बड़ी-बड़ी आँखों की ओर देखता तो जाने कैसी लज्जा से उसका चित्त भर जाता, विशेष कर शाहजादे के इस तातारी बाज को देखने पर,—उसकी आँखों पर लाल कमख्वाब की पट्टी बँधी रहती, उसके पंजे लाल कमख्वाब के दस्तानो मे ढँके रहते, उसके पैरों मे चाँदी के घुँघरू बँधे रहते, उनमे रेशमी डोरी लिपटी रहती, उसकी दृष्टि मे गर्वित अवहेलना रहती, और उसके साथ रहती उसके वीरत्व की कहानियों की आभा।

पकड़े हुए बच्चे-बाजों को वश मे किया जाता—अँधेरी कोठरी मे भूखा रख कर। वे बन्दी-दशा के विरुद्ध विद्रोह के क्रोध से फूलते रहते; आँखों पर बँधी पट्टी की आवरण-रात्रि मे ढँके हुए, पख फैला कर शिकार पकड़ने के सुख-स्वप्न देखते-देखते काँप उठते, पुकार उठने के

उसके तीष्णा और व्यग्र-दृष्टि उच्चाकाँक्षा से चमती रहती थी—जैसे म्यान मे बन्द तेज तलवार चमकती है। उसके नगे पैरों की गति में शाहजादे के अरबी घोडे की दुलकी चाल थी। उसकी देह के सारे पुट्ठो मे आनन्द और उत्साह था—वह तब भी प्रकट होता था जब वह अपनी हाथी के दाँत-सी गोरी-गोरी बाँहों पर बड़े-बडे, काले बालों से भरा सिर रख कर, दूर पर बाज के शिकारियों की एक विशेष ढग की चिल्लाहट और उनके व्यस्त पैरो के दौड़-धूप सुनता। एक क्षण के बाद सब चुप हो जाता—एक आश्चर्यजनक गभीर स्तब्धता चारो ओर छा जाती। फिर? फिर एक सफेद और एक काली लकीर एक दूसरे पर गिरती, चक्कर खा-खा कर स्वच्छ, नीले आकाश की सीमा की ओर उठती रहती—यह देखते ही रहीम कुहनियो के बल उठ बैठता-; उसकी आँखे फैल जातीं, दृष्टि स्थिर रहती, और ओंठ उत्सुकता और उत्साह से जरा खुल जाते। फिर? फिर जब वह सफेद और काली बिन्दियाँ सहसा एक-दूसरे से मिल कर तत्क्षण अलग होकर नीचे गिरने लगती—सफेद बिन्दी टेढ़ी-मेढ़ी शिथिल गात से और काली लकीर सदा उसके ऊपर बनी रह कर सीधे नीचे की ओर बल्लम की तरह, तीर की तरह—,तब नीला आस्मान शिकारियों की चिल्लाहट से गूँज उठता, सवार घोड़े भगा कर बाज के नाखूनो से विदीर्ण हृदय वाले बगुले का गिरना और विजयी बाज का उतरना देखने जाते। और साथ ही साथ बालक रहीम भी दौड़ता। जब विजयी बाज की आँखे बाँध कर उसका मालिक उसे अपने हाथ पर बैठा कर जय के उल्लास से विकम्पित और युद्ध से क्लान्त, शिथिल पखों पर हाथ फेरता रहता, तब रहीम आनन्द से तालियाँ पीट कर चिल्ला उठता।

वह अक्सर ही शिकारियों के साथ शाहजादे बाज़बहादुर के अस्तबल मे जाकर देखता कि बाज-बरदार सोने के प्याले मे गुलाब-जल से बाज के पैरों को धोकर सुन्दर, रेशमी रुमाल से बड़े ही यत्न

वापस आने के ऐसे अभ्यस्त हो जाते कि उनके पैरों की डोरी मे भागने की कोशिश का खिंचाव नहीं रहता। अब किस शिकार के पीछे दौड़ना पड़ेगा इस हुक्म की प्रतीक्षा मे वे शान्त-भाव से झूमते, और हुक्म पाने पर अभ्यास के अनुसार उड कर धनुष के आकार के टेढ़े पथ मे शिकार पर चक्कर काटते रहते—अलस भाव से खेलते हुये वार करने के इरादे से। अब पैरों का बधन खोल देने पर भी वे मुक्ति का आनन्द अनुभव नहीं करते—स्वतंत्रता की ख़ुशी से अब उनमे सिहरन पैदा नही होती।

तब उनका मालिक उनमे से प्रत्येक की योग्यता का फैसला करता—कौन हारिल का शिकार करने मे दक्ष है, कौन तीतर का शिकार करने मे पटु है, और किस मे एक गौरैया से बड़ी चिड़िया का शिकार करने की भी योग्यता नहीं है। बडे बाजों को खरगोशो, बगुलो और चीलों के शिकार मे लगाया जाता। चील का शिकारी बाज, जो कौवे से भी अधिक घृणित होता, किसी तरह भी वश मे नही आना चाहता। उसके तेज नाख़ून और चोंच बड़ी ही भयानक होती।

पहले-पहल उनके मारने की चिड़िया के आकार के नक़ली पक्षी उडा कर उन्हे शिक्षा दी जाती—उन नकली पक्षियो की छाती मे उनके प्रिय खाद्य भर दिये, जाते वे उन नकली चिड़ियो की छाती फाड़ कर अपना पुरस्कार ढूँढ़ लेते। फिर उनके सामने घायल चिड़िया फेंक कर उनको शिक्षा दी जाती—घायल चिड़िया की छाती फाड़ कर वे सहज ही कलेजा उखाड़ ले सकते थे, और साथ ही साथ जीवित चिड़िया को बध करने का क्रूर आनन्द उनको उत्तेजित कर देता। वे क्रमशः कठिन शिकार करने का अभ्यास करते और शिकार के नशे मे मस्त होकर उसकी प्रतीक्षा मे तैयार रहते। इस तरह फिर उनमे बनैली क्रूरता जाग्रत हो उठती, पर वह सयम मे ढ़की रहती—वे घायल शिकार की छाती फाड़ कर ख़ून के नशे के पागलपन मे एक घूँट ख़ून पीकर ही

लिये तैयार होकर गले को लम्बा करके फुलाने लगते।—रहीम ने कभी-कभी इनको पिंजड़े से निकाल कर अपने हाथों पर बिठाया है। उसने इन बाजों की आँखों की पट्टी खोल कर इनको प्रकाश दिखाया है, और प्रकाश से चकाचौंध होकर इन्होंने नाखूनों से उसके हाथ दबा लिये हैं। पर कुछ ही क्षणों मे उनकी आँखे प्रकाश की अभ्यस्त होकर शान्त हो जातीं, और उसी तरह शान्त रहतीं जब वह उनको ताजे, गरम ख़ून से सने गोश्त के टुकड़े प्यार से खिलाता। पर इन बाजों से खेल कर उसे तृप्ति नहीं होती। इन्हे हाथ पर बिठा लेने का उसका शौक़ पूरा हो गया था—इनमे से किसी की भी छाती तातारी बाज की तरह पुष्ट नहीं थी, वैसे लम्बे पख नहीं थे, वैसी संयत और शान्त शक्ति नहीं थी। लेकिन नये बाजो को उचित रीति से शिकार करना सीखते हुए देख कर उसे कम आनन्द नहीं मिलता था। उनकी स्वतन्त्रता की स्मृति क्रमशः जितनी ही मिटती जाती उतने ही वे गम्भीर और हुक्म के गुलाम होकर अपने डडों पर बैठे रह कर झूमते रहते।

पहिले बन्दी-हालत मे अकड़े हुये उनके पंखों को फैला कर फिर उन्हे स्वच्छन्दता से उड़ना सिखाया जाता, पर उस समय भी पतग की तरह वे धागे से बँधे रहते। क्रमशः जब वे बाज-बरदार की पुकार पर बगुले के पखों और लाल कपड़े की बनी नक़ली चिड़ियों पर वार करना सीख जाते तब उनके पैरों की डोरी खोल दी जाती। बाज-बरदार लोग नक़ली चिड़ियो को डोरी में बाँध कर शून्य मे चक्राकार घुमा-घुमा कर बाजों को प्रलोभित करते—वह दृश्य कितना मनोहर होता! उन नकली चिड़ियों की छाती मे मुर्ग़ का ताजा निकाला हुआ कलेजा बँधा रहता—बाज झपट कर उस नक़ली चिड़िया की छाती फाड़ कर वह क़लेजा इनाम में लेते। रक्त की लालसा से दूसरे के हुक्म का ग़ुलाम होना उन्हे सहन हो जाता—बन्दी-दशा का क्षोभ क्षीण होता जाता। क्रमशः वे अपने मालिक के हुक्म से उड़ने और

गेरा, शिकारी लोग जाकर छटपटाते बगुले को जिबह करके उठा लाये, पर बाज का कोई पता नहीं चला—वह शायद किसी दूसरे शिकार के पीछे दौड गया, या काले जल मे अपनी छाया देख कर डर गया, या आनन्द से हवा मे तैरता हुआ भाग निकला। व्यर्थ ही उन्होंने उसे ढूँढा, व्यर्थ ही उन्होंने चुने हुये प्यार के नामो से उसे पुकारा, व्यर्थ ही उन्होंने सीटी बजा कर जगल को कॅपा दिया। शाहज़ादे ने-सरदार बाज़-बरदार के मुँह पर घोडे का कोड़ा मार कर उसे खून से नहला दिया और नाली, पानी और जगल का बिना खयाल किये घोड़ा भगा कर सीधा महल को लौट चला—उसके ओंठ मिले हुये थे और अलस आँखों की पुतलियाँ झुक कर दृष्टि को धुँधला बना रही थीं। बाज कही भी नहीं मिला।

पर रहीम उसे पा गया। एक झाडी के कॉटों में उसके रेशमी डोरे मे बॅधे घुँघरू अटक गये थे—वह नाखूनों से डाल को दबा कर, पख फैला कर, गरदन बढा कर, चोंच जरा खोल कर, इस बन्दी-हालत मे शत्रुओ के वार का सामना करने के लिये एकदम तैयार था—उसके सर्वांग से निराशा टपक रही थी—वह भूखा मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। हरे पेड़ पर लाल-लाल बेर लटक रहे थे और उस पर बैठा था शाही तातारी बाज—मानो लालमणि जडे पन्ने के मसनद पर बैठ कर बादशाह युद्ध की घोषणा कर रहा है। रहीम जल्दी से उस तातारी बाज को मुक्त करने लगा—कॉटो मे अटके बाज के पैरों के घुँघरू छुडाने के लिये जाते हुये आनन्द और उत्तेजना से उसके हाथ कॉपने लगे। शाहजादे का नाम जड़े हुये घुँघरू उसकी अँगुलियों से हिल कर बज उठे और साथ ही साथ उसका हृदय भी आनन्द से बजने लगा। फिर जब बाज को मुक्त करके उसने उसे अपने हाथ पर बिठा लिया और बाज ने अपने तेज नाखून गाड कर रहीम का हाथ पकड़ लिया, तब वह आनन्द से चिल्ला उठा—यह

शिकार को छोड़ देते,—जब उनका शिकार खून मे लथ-पथ भूमि पर लोट जाता, तब वे बाज बरदार के हाथ पर बैठ कर कामदार चाँदी की रकेबी मे मसालेदार कबाब शाही ढँग से चखते—वे शाही बाज शाही सभ्याचार मे शिक्षित होते !

उनकी आँखे आलस्य से भरी, पर गर्वित रहतीं । जब उनकी आँखो की पट्टी खुलतीं तब दृष्टि काली रहती; जब शिकार के पीछे भागते तब वह तरल सोने की तरह चमकती; और जब वे भयार्त्त शिकार के कातर आक्रन्दन का पीछा करके उस पर वार करते तब उनकी आँखे आग की लपटो जैसी हो जातीं ।

वे सब बाज रहीम के धूप से जले, गोरे हाथ पर खुशी से बैठ जाते, लेकिन इनमे से कोई भी उस तातारी बाज का मुकाबला नहीं कर सकता था—उसकी आँखो से कैसा शाही आलस्य और अवहेलना टपकती रहती ! रहीम इन सब साधारण बाजो से विरक्त हो उठा था—उनके खेलने की चेष्टा करने पर वह खेल में उनकी खुली चोंचों को पकड़ कर ताकत से दबा कर बन्द कर देता, गफलत से उनको हाथ पर से गिरा देता, और चील की पुकार की नकल कर के उनको बेचैनी से कँपा देता—वे झूठी चील की पुकार से प्रलोभित होकर पिंजड़े से भागते हुये निकल पड़ते—उनके सामने खाली मैदान होता और पीछे उनके रखवालों की गालियाँ !

शाहजादा प्रतिदिन अरबी घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलता—जरी के कामदार लाल कमख्वाब की पोशाक पहिन कर ! जब तातारी बाज चाँदी के घुँघरू बजा कर उड़ता तब शाहजादे के हृदय मे मानो संगीत बजता, वह तेजी से लम्बी-लम्बी साँसे लेकर, प्रभात की हल्की हवा को शराब की तरह पीकर उत्तेजित हो उठता ।

एक दिन शाहजादे के प्यारे तातारी बाज ने एक दूध से सफेद बगुले की छाती फाड़ कर खून से रँग दी । बगुला एक दलदल मे

इशारा होता, उसके पश्चात् ही वे दोनों कोमल प्रकाश में क्रमशः प्रकाशित होने वाले मैदान की ओर भागते हुये चले जाते।

उनकी आँखें गुलाबी आस्मान में शिकार की खोज करती रहती। दूर का पर्वत ठोस अन्धकार-सा दीखता, उसकी गोद मे काले परदे सा जंगल—सब पेड़ निद्रित और स्तब्ध, उनकी शाखायें निद्रित पक्षियों के भार से अभिभूत। क्रमशः आस्मान मे सोना और सिन्दूर फैलता जाता, काली रेखायें नीली हो उठतीं, उल्लू शीघ्रता से उड़-उड़ कर अपने-अपने घोंसलों मे जा छिपते, दिवाचर पक्षी पंख फड़फड़ा कर जग उठने पर पहिले मृदु स्वर मे और फिर क्रमशः कलरव के साथ घोंसले छोड कर प्रकाश से दीप्त शीतल हवा चीरते हुये तीर की तरह भाग उठते। पर रहीम और बाज इन सब का परित्याग करके चलते रहते—बुलबुल, गौरैया और तोता—वे सब छोटी चिड़ियाँ हैं—उनके शिकार के योग्य नही। दलदल की ओर से बगुले और सुर्खाब की पुकार और पखो का फड़फड़ाना सुनाई देता—वे ही तो उनके योग्य शिकार हैं! तब रहीम चौड़ी छाती वाले बाज को ऊपर फेंक देता, उसके पंख बाल-रवि की किरणो से चमकने लगते, रहीम अधी-सी आँखो से, बेहोश चित्त से बाज की ओर देखता रहता—वह ओस से धुले हुये निर्मल आकाश की गोद मे सिकुड़ कर उड़ता चला जाता, उसके पैरों के घुँघरू पक्षियों के प्राभातिक कलरव का मानो उपहास करके बजते रहते!

बगुले बाज के डर से चर्खी की तरह फिरकी खाते, पानी मे कूद पड़ते, अपने लम्बे गलों और बेवकूफो के से छोटे सिरों पर पीठ की ओर लटकती पीली चुटैयाँ घुमा कर असभव-सी जगहों मे छिप जाने की कोशिश करते, बाज के वार से छुटकारा पाने के लिये चक्कर काटते हुये ऊपर को उड़ते रहते और लम्बे सफेद पख फैला कर दुश्मन की पहुँच के बाहर जी-जान से भागने की चेष्टा मे उनके रक्त-शून्य हृदय प्रभात-वायु मे घास की तरह थर-थर काँपते रहते।

खोया बाज उसने ढूँढ़ पाया है, अब यह उसका ही है—यह चौड़ी छाती वाला, लम्बे पखो वाला और लाल आँखों वाला शाही बाज़ उसका है! यह उसका है—वह और किसी को भी इसे नहीं दिखा सकेगा—यह सिर्फ उसी का है। गहरे जगल की गुप्त छाती में इसके लिये एक पिजड़ा बनाना पडेगा, भोर के समय इसकी नींद टूटने के पहिले ही वह छिपा-छिपा जंगल मे जायेगा, वे दोनों निर्जन मैदान में गुलाबी आस्मान की ओर तीक्ष्ण-दृष्टि डाल कर शिकार ढूँढते फिरेंगे, वे एक-दूसरे से परिचित हो जायँगे—बाज़ उससे प्रेम करेगा, वह तो उससे प्रेम करता ही है। उनके सिर पर प्रभात की सुनहली रोशनी पड़ेगी, उन दोनो की गुप्त बातचीत प्रभात की शीतल वायु मे विलीन हो जायगी। रहीम अपने हृदय के यत्न -के बाज़ के कमख़्वाब के दस्तानों और मोतियों-जड़ी आँखों की पट्टी-की कमी को भुला देगा।

रहीम बाज़ को एक पेड़ मे बॉध कर निकट के एक तालाब के किनारे दौड़ गया। तालाब के जल मे किसी के कई हस तैर रहे थे, पत्थर से एक को जख्मी करके उसने तैर कर उसे पकड़ा और फिर उसकी चोरी करके भाग कर जगल मे छिप गया। बाज ने जख्मी हस की छाती फाड़ कर गरम खून पी लिया। यह देख कर रहीम आनन्द से नाच उठा, उसने सोचा—तब तो बाज़ ने उससे घृणा नहीं की है, तब बाज उसका हो जाने को तैयार है।

सचमुच वह उसका हो गया। जब रहीम उषा के अन्धकार मे मे ओस से भीगे पत्तों को कुचलता हुआ उसके निकट आता तब बाज़ गरदन बढ़ा कर स्थिर, फैली हुई दृष्टि से उसके पैरों की आहट सुनता और उसके आने की प्रतीक्षा करता। रहीम के हाथ बढ़ाते ही वह पिंजड़े से निकल कर उसके हाथ पर जा बैठता, उड़ने के ढग से पंखों को फैलाता, पर उड़ता नहीं—वह केवल स्मरण करा देने का मूक

रहीम ने उस बाज़ से इतना प्रेम किया कि वैसा प्रेम उसने और किसी से भी नहीं किया था; वह मानो उसका जीवन था, उसकी कामना थी, उसकी प्यास थी। --उसके पख कितने फैले हुये हैं, उसकी दृष्टि मे विजय का कितना अभिमान है! पर रहीम के इस गुप्त-प्रेम मे एक वेदना चुभी हुई थी, एक आने वाले दुर्भाग्य की आशका ने उसके आनन्द को ढँक रक्खा था। कभी-कभी रहीम को डर लगता कि शायद एक दिन बाज घोर अवहेलना से उसे त्याग कर उड़ जायगा—अपने पैरों के घुँघरू विद्रूप से बजा कर दृष्टि से ओझल हो जायगा, और उसका अस्तित्व उस बाज़ से शून्य होकर मृत्यु के बराबर हो जायगा। कभी-कभी रहीम को लगता कि वह बाज मानो मूर्त्तिमान् महानता है—वह नीली जमीन पर सूर्यालोक खिला कर उड़ता फिरता है, या उसके कन्धे पर बैठ कर नई-नई कीर्त्तियाँ उपार्जन करने की प्रतीक्षा करता है। इस सम्मान के आनन्द से रहीम अपनी तुच्छता का अनुभव करके कातर हो उठता, तब वह उस महान् बाज की ओर आँखे उठा कर देखने का साहस नहीं कर पाता। उसके हृदय मे यही दुःख था कि वह बाज उसके आनन्द की ओर नहीं देखता, उसकी आँखों की तीव्र दृष्टि उसकी आँखों से मिल कर स्नेह और प्रीति से गल कर कोमल नहीं होती।

रहीम खुले मैदान के बीच चित्त लेट जाता, लेटे-लेटे देखता कि आस्मान की छाती पर से मनुष्य के भाग्य की तरह बादल तैरते चले जा रहे हैं—कभी भारावनत-सी धीमी गति से, और कभी नीरव शीघ्रता से; कोई निर्दिष्ट सीमा की रेखाओं से सौन्दर्यशाली हैं, कोई विच्छिन्नता से रूपहीन हैं। वायु का अदृश्य हाथ बादलों की पीठ पर धक्का देता हुआ उन्हें निरुद्देश्य असीम की ओर लिये जा रहा है, पेड़-पौधों के डाल-पत्ते झर-झर काँप कर वायु के अस्तित्व की बात रहीम के कानों मे कह रही हैं—और रहीम अपने दिली दोस्त बाज़ को किस्से सुनाता।

पर बाज उस झुण्ड में से एक सब से बडे और ताक़तवर और ठीक अपने ऊपर उड़ने वाले बगुले को चुन कर अपना लक्ष्य बना लेता, क्योंकि वह सदा ही अपनी शक्ति प्रमाणित करने के लिये व्यस्त रहता, और सीधा ऊपर को उठ जाने के समय अपने पखों में प्रभात की स्निग्ध वायु का स्पर्श पाने का आनन्द सारी देह से अनुभव करना चाहता, इसी लिये मानो वह एक अरुण रश्मि पकड़ कर ऊपर को उठ जाता। बहुत जल्दी सब चिड़ियों को हरा कर सबके ऊपर पहुँच जाता। तब वह गौरैया से भी छोटा दीखता; पर उसके पखो के बाधाहीन विस्तार और उसके अगो के शक्तिमान् सचालन को देखने पर सहज ही में उसकी चोंच और नाखूनो की भयानकता का अनुमान किया जा सकता था। एकाएक अपने पख समेट कर वह तीर की तरह ऊपर से बगुले के भय से मुड़े हुये गले पर आ गिरता और एक पत्थर के टुकडे की तरह एकदम सीधा जमीन पर आ जाता—उसका एक भी पंख जरा भी टेढा नही होता। तब रहीम दौड़ कर, तैर कर, कीचड़ और जगल पार करके पतन के आघात से अभिभूत और डर से सिकुडे बगुले के निकट शीघ्रता से पहुँचता—जिससे वह निराशा के साहस से क्रूर होकर अपनी लम्बी चोच से बाज की देह पर चोट न कर दे। बाज शीघ्र ही अपने शिकार पर मृत्यु-आघात करके अपनी बड़ी-बड़ी गहरी आँखों की उज्ज्वल दृष्टि फेर कर अपने मालिक की ओर देखता, और शिकार का गरम कलेजा पुरस्कार मे पाने की प्रतीक्षा करता।

इसके बाद उस दिन फिर वह नहीं उडता। जब रहीम उसे हवा में फेंक कर उसे दिलासा देने की विशेष ध्वनि करता हुआ आगे बढ़ जाता, तब वह दो-तीन बार पख फडफड़ा कर रहीम के पास आकर उसके मुस्कान भरे मुख के पास कधे पर गम्भीर भाव से जा बैठता। मानो उसे यह बच्चों का-सा खेल पसन्द नही, और रहीम भी जैसे बाज की दूर तक फैली हुई दृष्टि की गभीरता मे ढॅक कर खेल से विरत हो जाता।

क़ानून की बात। एक भयकर आनन्द से उसका चित्त भर उठा। क्रूर आनन्द से उसकी भवें सिकुड़ गईं और माथे पर बल पड़ गये। क़ानून की बात याद आ गई। शाही शिकारी बाज की चोरी करने पर अपराधी को बारह रुपये जुरमाना देना है, या भूखे बाज की तेज चोंच के द्वारा विदीर्ण छाती से छः तोले ख़ून देना है!

शाहजादा रहीम की गरीबी की बात जानता था। उसने रहीम की स्वस्थ देह, और खुली, चौड़ी छाती की ओर देख कर अपना हाथ बढा कर, जिस तरह बाजार मे ख़रीदने के लिये जाने पर लोग निर्मम उदासीनता से बकरे या भेड़ की बदन दबा कर देखते हैं, उसी तरह रहीम की छाती दबा-दबा कर देखी। फिर उसने नदी के उस पार के नवाब साहब को निमत्रण भेजा :—अगर नवाब साहब अपनी दोनों पुत्रियों के साथ आ सकें, तो आज से तीन दिन के पश्चात् एक बहुत ही मनोहर शिकार का खेल उनकी उपस्थिति से और भी मनोरजक हो उठेगा...।

कारागार के अधकार मे रहीम की आँखे फैल उठीं; कारागार के काले अधकार से भी काली उसकी आँखे—स्थिर और अचंचल। उसकी आँखों की पुतलियाँ कारागार के बाहर दिन का आविर्भाव होने पर सूर्यालोक से दर्पण की भाँति जरा उज्ज्वल और सकुचित हो जातीं।

शाहजादा शिकार के मैदान की ओर जा रहा है, और उसके पीछे बाज-बरदार के हाथ पर बैठा वह जाति-च्युत तातारी बाज आ रहा है—तीन दिन के उपवास के कारण उसकी भयानक भूख से क्रूर दृष्टि पट्टी से ढँकी है और उसके उत्तेजित तेज नाख़ून दस्तानो मे कस कर बँधे हैं।

उनके पीछे आ रही है केवल एक रग की क़तार—आग की लपट की तरह जलती हुई। छः ताजे घोडे थे, उनके बदन मल-घिस कर चिकने और चमकते हुये थे, उनकी टेढ़ी गरदन तक जरी का

किस्से बादशाह हारूँ रशीद की रहस्यपूर्ण दौलत के बारे में होते ! रहीम भी जैसा उस युग मे वहाँ था—वजीर जाफर के रूप मे । जैसे, एक विशाल, सफेद अरबी घोड़ा उसे पीठ पर लिये गति के आवेग से नाचता रहता—और तन्द्रातुर बाज उसके ऊँचे हाथ पर बैठ कर आनद से उज्ज्वल दृष्टि से शिकार पर वार करने के इशारे की प्रतीक्षा करता ।

काले बादल अदृश्य वायु के धक्के खा-खा कर मनुष्य के भाग्य की तरह रहीम के सिर पर इकट्ठे हो रहे थे—वे मानो अरबी किस्सों की दैत्यपुरी की गुफा के मेहराब थे । ढलती धूप उनकी दरारो से बल्लम के सिर की तरह निकली आ रही थी । सिर झुका कर झपकियाँ लेता हुआ बाज सहसा दुःस्वप्न के निष्फल क्रोध से जागृत होकर पख फड़फड़ा कर जोर से चिल्ला उठा ।

कई लड़के घूमते-घामते वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने देखा कि शाहजादे का खोया हुआ बाज रहीम के हाथ पर बैठा है । कुछ ही देर मे शाहजादे के सिपाहियो ने आकर रहीम को गिरफ्तार कर लिया और उसे बाज सहित शहज़ादे के दरबार मे ले चले । जब उन्होंने उसके हाथ से उसे छीन लिया तब भी बाज सदा की भाँति निश्चिन्त और गर्व से ग़म्भीर रहा, उसने एक बार भी अपना ऊँचा सिर फेर कर अपनी गाफिल दृष्टि से रहीम को नही देखा—इससे रहीम के हृदय में गहरी चोट पहुँची !

वे बाज़ को अपने मालिक के निकट ले गये, पर उसने उसे वापस पाकर रत्ती भर भी आनन्द प्रकट नहीं किया, अपने खोये हुये प्रिय बाज से एक भी प्यार की बात नहीं कही—नीच आदमी की छूत लगने से उसका शाही गौरव मलिन हो गया था—वह अपनी जाति खो चुका था ।

शाहज़ादे ने गम्भीर भाव से एक बार रहीम की ओर देखा और उसकी ओर देखते ही उसे याद आ गया शाही हुक्म—शिकार के

आवाज से डर कर वह अभी चिल्लाता हुआ उड़ जायेगा। फेंके हुये पत्थर की तरह सींगो ने आवाज छोड़ी। सब चुप थे।

सीग के शब्द से चौंके हाथ ने बग्घी का पर्दा हटा दिया—रहीम ने देखा, दो युवतियाँ बैठी हैं, उनके ओठ छिलके निकाले हुये कागजी बादामों जैसे थे, उनकी आँखे स्वप्न के आवेश मे तद्रातुर थीं, उन आँखों की दृष्टि मानो बहुत दूर का कुछ अदृश्य देख रही थीं, उनके हाथ गोदी मे पड़े हुये थे—घोंसले मे निद्रित सफेद पत्ती की तरह, और उनकी भड़कीली पोशाक—सब मिला कर वे रहीम की आँखो मे बहिश्त की हूरों और परीदेश की परियो की-सी महानता से पूर्ण, अपूर्व सौंदर्य के रूप मे खिल उठी।

उसने सहसा अपनी दृष्टि दूर तक दौड़ाई—नवाव-जादियों के आगे, भय और विस्मय से स्तब्ध जनता के आगे, और उसे दौड़ा कर क्लान्त करने वाले मैदान के आगे।

रहीम जानता था कि उसके भाग्य मे कौन-सा दण्ड प्रतीक्षा कर रहा था। जब उसने देखा कि तातारी बाज की आँखों पर पट्टी बाँध-कर, उसके पजे ढँक कर लाया जा रहा है, तब उसने समझा कि इसी चिडिया पर उसे सजा देने का भार पड़ा है। तब आनन्द की मुस्कान से उसका सारा हृदय भर उठा—जब वह उस बाज का मालिक था और लम्बे दिवसो को हवा के गाने सुन कर और पेड़ों का नाच देख कर काटता था, बिल्कुल उन्हीं दिनों की तरह उसका हृदय गर्व से धुक-धुक करके कॉपने लगा।

ऑखों की पट्टी खुलने पर बाज ने तीन दिनों के बाद प्रकाश देख पाया, उसने व्यग्र-दृष्टि से एक बार चारों तरफ ताका, पख फड़फड़ा कर उड़ने की शक्ति सचय करके वह बाज-बरदार के हाथों द्वारा शून्य में फेके जाने की प्रतीक्षा मे उत्सुक रहा, उसकी दृष्टि आस्मान मे अपना शिकार ढूँढ़ती फिरी—वह दृष्टि तेज, क्षुधा से क्रूर—आग की

साज लगा था, कमखवाब की वर्दी पहिने साईस उनके आगे दौड़ रहे थे, छ, घोडे खींच कर ला रहे थे एक लाल, खूनी रग की बग्घी को, जिस पर सुनहली और रुपहली और कारचोबी का काम किया हुआ था; उसमे नवाब साहब की सोन, हीरे और मोतियों के ज़ेवरों से लदी दो कन्याये थी ! उस बग्घी के पीछे मखमल के पर्दे से ढॅकी हुई छः डोलियो मे नवाबजादियो की छः बाँदियाँ थी— उनके बालों मे मेहदी का गुलाबी रग था औ॰ आँखों मे काला सुरमा। उनके पीछे नवाब साहब एक विशाल हाथी पर, सोने की छतरी के नीचे, हाथी-दाँत के बने हौदे मे बैठे आ रहे थे। -

छः शिकारियो ने सींग बजा कर खेल के शुरू होने की घोषणा की,—वह शब्द टेढ़े सींगो से निकल कर ध्वनि के एक चक्र की भाँति फिरकी खाता हुआ मैदान के ऊपर से लुढकता चला गया। खुले मैदान की ऊँची, नीची और टेढी रेखाये उस शब्द से मानो नाचने लगीं। भोर के आस्मान मे शराब के रग की सी रोशनी बादलो पर फैली हुई थी और बादल तितली के पखों की भाँति चमक रहे थे।

सब आकर एक झाड़ी के निकट एक-दूसरे से सट कर खडे हो गये—शिकार वही बँधा था। घोडो की पीठो के आवरण/ हवा से 'पत्-पत्' करके उड़ने लगे—उन पर जहाँ-जहाँ छायाये गिर रही थी वहाँ के लाल रग अतृप्ताकाक्षा की भाँति अधिक गाढे दीख रहे थे, और जहाँ-जहाँ धूप गिर रही थी वहाँ विजय के उल्लास की तरह उज्ज्वलता खिल उठी थी। नवाबजादियो की कौतूहलपूर्ण, उत्सुक दृष्टि बग्घी के पर्दे की जाली से झाँक रही थी, और उनके श्वेत कोमल कण्ठों मे कंधों के एक हाथ पर से रेशमी, हरी ओढनी नीचे को लटक पडी थी। पर्दे के बाहर एकहाथ का एक अश निकला हुआ था, मानो एक बगुला हो। वन्दी रहीम देखता हुआ सोच रहा था—शायद सींग की

जल उठा, उसकी आँखों से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं, उसने दोनों पंख फैला दिये—मानो वह पंखों से रहीम को मारने के लिये तैयार हो गया हो।

नवाब-जादियों के कौतूहल-भरे सिर सामने की ओर और जरा झुक गये; उनकी स्वप्न से अलस, नशीली आँखों की अद्भुत दृष्टि मे विनोद की उज्ज्वलता चमक उठी; पर उनके ढीले हाथ जैसे गोद मे पडे हुये थे; वैसे ही रह गये, उनकी जरी की कामदार पोशाक की प्रत्येक तह जैसी थी वैसी ही रही। केवल खून की गध से घोड़े नाक के भीतर से फूँक मारने लगे और जमीन पर पैर पटक कर बेचैन हो उठे—उनकी पीठ पर की लाल चारजामे की झालरें नीले आस्मान के बदन पर 'फट-फट' आवाज करने लगी। व्यर्थ ही शिकारी लोग ओठों से सींग लगाये मुँह मे हवा भर कर, गाल फुला कर खड़े रहे—इसलिये कि रहीम के आर्त्तनाद कर उठने पर वे सींग की आवाज से उसका चीत्कार ढँक देंगे,—पर रहीम निर्वाक् और निस्पन्द जमीन पर पड़ा रहा।

आघात की प्रथम पीड़ा ने रहीम की सहनशक्ति पर प्रबल वेग से वार किया था, उसे लगा था कि शायद उसका हृदय उखड़ कर निकल आयेगा; पर बाद को उस व्यथा की तीव्रता मे उसकी अनुभूति ऐसी तन्द्रित हो गई कि वह अनुभव लगभग सुख के निकट पहुँच गया, और जब वह अपनी विदीर्ण छाती से गरम खून के बहने का अनुभव कर सका और समझ सका कि बाज की तेज चोंच लगातार उसकी छाती मे चोट कर रही है, तब वह आनन्द के स्वप्नलोक मे डूब गया। उसकी मृत्यु शाही बाज की चोंच और पजों के आघात से होगी, इस गौरव के उसका जीवन प्रकाशित हो उठा—एक दिव्य प्रभा-मडल ने उसके जीवन को आवृत्त करके, उसकी दृष्टि को चकाचौंध कर दिया।

चिनगारी की तरह ज्वालामयी थी, उसमे रत्ती भर भी अतीत का स्मरण नहीं था, ममता की छाया नही थी, उस दृष्टि ने किसी को भी अपना समझ कर नहीं पहिचाना।

रहीम एकटक बाज की ओर देख रहा था—एक बार भी अगर उससें आँखे मिल जॉय तो बाज अवश्य ही उसे पहिचान लेगा। लेकिन बाज की दृष्टि से उसकी दृष्टि नहीं मिली। रहीम की आँखों में आँसू भर आये। रहीम ने बाज की आँखों में अपने जीवन की एकमात्र आकाङ्क्षा, एकमात्र आनन्द, एकमात्र स्वप्न-सुख देखने की आशा की थी,—पर वहाँ देखा केवल शिकार का वध करने की क्षुधार्थ लोलुपता—शाहजादे के पतले ओठों के कोने की घृणा, व्यग्य और उत्सुकता के मानवीय भाव की तरह। रहीम का हृदय मानो बाज की अवहेलना से टुकड़े-टुकड़े हो गया—उसने मुँह फेर लिया, उसकी आँखे बन्द हो गईं, उसकी चिन्तायें, पिंजड़े का छोटा द्वार खुला पाकर अपने-अपने को सब से पहिले मुक्त करने की उत्सुक चिड़ियो की तरह, बाहर निकलने के लिये एक दूसरे से लड़ने लगी।

जब रहीम इस तरह अभिभूत हो रहा था तब नक़ीब चिल्ला उठा—"शाही कानून है कि शाही शिकार के ख़िलाफ़ काम करने पर बारह तोले चॉदी या छः तोले छाती का खून देना पड़ता है—यही कानून शाही शिकार की रक्षा करता है!"

रहीम ने आँखे नहीं खोली। चाकू से उसकी छाती चीर कर इस लिये खून बहाया गया कि खून की गध पाकर बाज उस पर झपटे और अपने तेज पजों से छाती फाड़ कर अपनी नुकीली चोच को हृदय में चुभो दे। फिर भी रहीम ने आँखे नहीं खोलीं। जब बाज खून से सनी छाती पर कूद पड़ा और उसमे अपनी चोच मारने लगा तब भी रहीम ने आँखे नही खोलीं, एक शब्द भी उसके मुँह से नहीं निकला, केवल एक बार उसका सर्वांग सिहर उठा और उस सिहरन से बाज का क्रोध

रूस

उसका प्रेमी

लेखक—मैक्सिम गोर्की

मेरे परिचित एक सज्जन ने एक बार मुझसे निम्नलिखित कहानी कही—

× × ×

" जब मैं मास्को में एक विद्यार्थी था, तब ऐसी स्त्रियों मे से एक के पड़ोस में रहता था जिनके चरित्र पर प्रायः सन्देह किया जाता है। वह पोलैंड की रहने वाली थी, और उसका नाम था टेरेसा। वह ऊँचे क़द की, मजबूत शरीर की और काले रङ्ग की थी; उसकी भौहे काली और घनी थीं, और उसका चेहरा चौड़ा और भद्दा था, मानो कुल्हाड़ी से काटा-छाँट कर बनाया गया हो। उसकी काली आँखों की भयानक चमक, मोटी आवाज, बग्घी हाँकने वालों की-सी चाल-ढाल और मछुवों की औरतों को-सी हाथ-पैरों की शक्ति—सबने मिल कर मेरे मन मे डर बैठा दिया था। मैं ऊपर की मजिल मे रहा करता था, और उसका कमरा मेरे कमरे के ठीक सामने था। जब वह अपने घर मे रहती तो मैं अपना दरवाजा कभी खुला हुआ छोड़ कर बाहर नहीं जाता था। लेकिन ऐसा अवसर तो कभी ही कभी पड़ता था। कभी-कभी वह मुझे जीने मे या आँगन मे मिल जाती और तब वह मेरी ओर देख कर एक ऐसी हँसी हँसती जिसमे मक्कारी और शैतानी कूट-कूट कर भरी रहती। प्रायः मैं देखता कि वह शराब पिये हुये है, उसकी आँखे धुँधली हैं, उसके बाल बिखरे हुये हैं और उसके मुँह पर एक अजीब-सी डरावनी

शाहजादे ने जब देखा कि कानून के अनुसार छः तोले खून वसूल हो गया है, तब उसने लोगों से इशारा किया। शिकारियों ने सींगों से विराम की ध्वनि की, तब बाज को उठा लिया—रक्त-पान से तृप्त होने पर उसकी दृष्टि में शान्त गर्व छा गया था। सिपाही लोग शाही खेल देखने की तृप्ति के बाद ताल पर कदम फेंकते हुए बाल-रवि की किरणों से सुनहले आकाश-वृत्त की ओर मुँह फेर कर शहर को चल दिये। पर रहीम को फिर नहीं जगाया जा सका—भावुक किशोर सुख-मयी मृत्यु के स्वप्न में बिलकुल डूब गया था। वे उसकी हथकड़ियाँ खोल कर उसे वहीं छोड़ कर चले आये।

वह तातारी बाज शाहजादे की पशु-शाला में फिर जगह नहीं पा सका—नीच की छूत लगने से वह पतित हो गया था!

"अच्छा, किसको लिखना है ?"

"बोलेस्लव काश्पुट को, वह स्विपजियाना मे वारसा रोड पर रहता है..."

"अच्छा, झटपट बोलती जाओ।"

"मेरे प्यारे बोल्स···मेरे प्रियतम. .मेरे सच्चे प्रेमी। प्रभु की माता तुम्हारी रक्षा करें! ओ सोने के हृदय, तुमने इतने दिन तक अपनी दुःखित, छोटी फाख्ता, टेरेसा को चिट्ठी क्यो नहीं लिखी ?"

मैं बड़ी कठिनाई से अपनी हँसी रोक सका। "दुःखित, छोटी फाख्ता!" पॉच फीट से ज्यादा ऊँचाई, सात सेर से भी ज्यादा भारी मुट्ठियॉ, चेहरा ऐसा काला मानो 'छोटी फाख्ता' जिन्दगी भर चिमनी में रही हो, और एक बार भी उसके जिस्म पर पानी न पड़ा हो!

किसी तरह हँसी रोक कर मैंने पूछा, "यह बोलेरट कौन है ?"

"मि० स्टूडेंट, बोल्स, वह बोल्स है—मेरा युवक," वह बोली, मानो नाम लेने मे मेरे गलती कर देने से वह बुरा मान गई हो।

"युवक!"

"आप को इतना ताज्जुब क्यो हुआ, जनाब ? क्या मेरा, एक लड़की का, कोई युवक प्रेमी नही हो सकता ?"

यह 'लड़की' है ? खैर . !

"ओह, क्यो नही !," मैंने कहा, "सब कुछ हो सकता है। क्या वह युवक बहुत दिनो से तुम्हारा है ?"

"छः साल से—"

मैंने सोचा "ओहो!" फिर उससे कहा, "अच्छा, आगे बोलो, क्या लिखूँ ?"

और मैं आपसे सच कहता हूँ कि अगर बोल्स को खत भेजने वाली सुन्दरी, टेरेसा न होकर, उससे कुछ कम होती, तो मै बोल्स की जगह से अदला-बदली करने को राजी हो जाता।

और घृणित मुस्कराहट है। ऐसे अवसरों पर वह मुझसे कहती, "कहिये, मिस्टर स्टूडेंट, क्या हाल-चाल है?" और उसकी मूढ़ हँसी उसके प्रति मेरी घृणा को और भी अधिक बढ़ा देती। उस औरत से मिलने-जुलने और उसकी बातचीत से अपना पीछा छुड़ाने के लिये मैं मकान बदल देना चाहता था, किन्तु मेरी छोटी-सी कोठरी बड़ी सुन्दर थी, खिड़की में से देखने पर बहुत दूर तक का दृश्य दिखाई देता था, और नीचे सडक पर सदा ही शान्ति रहती थी—मैं वहीं रहा।

एक दिन सवेरे के समय मैं अपने कोच पर पड़ा-पड़ा क्लास में ग़ैरहाजिर रहने के लिये कोई बहाना ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा था। एकाएक मेरा दरवाजा खुला और घृणित टेरेसा की भारी आवाज मेरी ड्योढ़ी पर से गूँज उठी, "मि० स्टूडेंट, आपकी तन्दुरुस्ती बनी रहे!"

मैंने कहा, "तुम क्या चाहती हो?"

मैंने देखा कि उसके मुँह पर घबराहट और विनय के भाव हैं उसके मुँह पर ऐसे भावों का होना एक असाधारण बात थी।

"महाशय! मैं आपसे एक अनुग्रह की भीख माँगना चाहती हूँ क्या आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे?"

मैं चुपचाप पड़ा रहा और मन ही मन कहा, "हे दयामय!.. हिम्मत बाँधो, भाई!"

उसने कहा, "मैं अपने घर को एक पत्र डालना चाहती हूँ। बस यही बात है।" उसके स्वर में विनय, मृदुता और कोमलता थी।

मैंने मन ही मन कहा, "भाड़ में जा!" लेकिन मैं झटपट उठ कर मेज़ के पास जा बैठा, एक कागज निकाला और उससे कहा "आओ, बैठ जाओ, जो लिखना हो बोलती जाओ।"

वह आई, बड़े सँभल कर एक कुर्सी पर बैठ गई और मेरी ओर इस तरह देखने लगी मानो उसने कोई अपराध किया हो।

"क्-क्-क्या ?"

"मैं बडी मूर्ख हूँ ! यह मेरे लिये नहीं हैं, मि० स्टूडेंट, मैं आपसे क्षमा माँगती हूँ। यह मेरे एक दोस्त के लिये—अर्थात् एक परिचित के लिये है। वह औरत नहीं—मर्द है। उसकी एक प्रेमपात्री ठीक मेरी—टेरेसा की तरह—यहाँ है। वह मामला है। जनाब, क्या आप इस दूसरी टेरेसा को मेरे मित्र की ओर से एक खत लिख देंगे ?"

मैंने उसकी ओर देखा—उसके मुँह पर घबराहट थी, उसकी अँगुलियाँ काँप रही थीं। मैं कुछ देर तक विमूढ-सा होकर बैठा रहा—फिर मेरी समझ मे सब कुछ आ गया।

"सुनिये श्रीमती जी," मैंने कहा, "न तो कोई बोल्स है, न दूसरी टेरेसा ही। तुम झूठ पर झूठ बोलती चली आ रही हो। इस प्रकार मुझसे चालाकियाँ चलने मत आया करो। तुमसे जान-पहचान बढाने की मुझे बिल्कुल इच्छा नहीं है। आया तुम्हारी समझ में ?"

वह एकाएक अजीब तरह से डर कर घबरा उठी—वह अपनी जगह से बिना हटे हुये ही कदमो को बदलने लगी। वह कुछ कहने की कोशिश कर रही थी, पर मुँह से बात नहीं निकलती थी। उसका हकलाना देख कर हँसी आती थी। मैंने कुछ देर तक इस बात का इन्तजार किया कि देखें क्या होता है...और मैंने देखा और अनुभव किया कि मुझे भले-मानसो के रास्ते मे खींच ले जाने की कोशिश करने का अपराध उस पर लगा कर मैंने निश्चय ही बडी भारी ग़लती की है। यह स्पष्ट ही था कि मामला कुछ और ही था।

"मि० स्टूडेंट !" उसने कहना शुरू किया, फिर एकाएक अपना हाथ हिला कर वह एकदम दरवाजे की ओर लौट पड़ी और बाहर चली गई। मुझे कुछ दुःख-सा हो रहा था। मै ध्यान से सुनने लगा। उसने जोर से दरवाजा खोला—बेचारी बड़े गुस्से मे थी......मैंने विचार कर देखा और उसके पास जाकर, उसे अपने कमरे में

टेरेसा ने नम्रतापूर्वक झुक कर मुझसे कहा, "महाशय! आपकी इस कृपा के लिये मैं आपको हृदय से धन्यवाद देती हूँ। शायद कभी मैं भी आपकी सेवा कर सकूँ। है न?"

"नहीं, अनेक धन्यवाद!"

"महाशय, शायद आपकी कमीजों या पतलूनों में थोड़ी-बहुत मरम्मत की आवश्यकता है?"

मुझे ऐसा अनुभव हुआ, मानो जनाने कपडे पहिनने वाली इस हथिनी ने मुझे लज्जा से अधमरा कर दिया। मैंने बडी तेजी से उससे कह दिया कि उसकी सेवाओं की मुझे जरा भी आवश्यकता नहीं है।

चिट्ठी लिखवा कर वह चली गई।

एक या दो सप्ताह बीत गये। शाम का वक्त था। मैं मुँह से सीटी बजाता हुआ अपनी खिड़की के पास बैठा था और अपने को अपने आप से अलग कर सकने की कोई तरकीब सोच रहा था। मैं उकताया हुआ था, मौसम बिल्कुल रद्दी था। मैं बाहर जाना नहीं चाहता था और बिल्कुल बेकार था, इसीलिये अपने विषय में विचार करने लगा। यह काम जरा भी दिल बहलाने वाला न था, लेकिन और कुछ करने को तबीयत ही नहीं चल रही थी। इतने में मेरा दरवाजा खुला। ईश्वर को धन्यवाद! कोई अन्दर आया।

"ओह, मि० स्टूडेंट, मुझे उम्मेद है कि इस समय आप किसी जरूरी काम में लगे हुये नहीं हैं?"

यह टेरेसा थी। हूँ . ..!

"नहीं। क्या बात है?"

"जनाब, मैं एक और खत लिख देने के लिये आपसे प्रार्थना करना चाहती थी।"

"बहुत अच्छा! बोल्स को न?"

"नहीं इस बार उसके पास से—"

मैंने टेरेसा की ओर देखा। उसके हाथ में वही ख़त था जो उसने मुझसे बोल्स के नाम लिखवाया था। कैसी अजीब औरत है यह!

"सुनो, टेरेसा! इस सबका क्या मतलब है? जब मैं तुम्हारा ख़त लिख ही चुका हूँ, तब फिर तुम किसी दूसरे से क्यों लिखाने जाओगी? और तुमने इसे भेजा क्यो नहीं?"

"भेजा नहीं? कहाँ भेजूँ?"

"क्यो? इसी बोल्स के पास।"

"बोल्स नाम का कोई आदमी है ही नहीं।"

मेरी समझ मे बिल्कुल ही नही आया। मैं चले जाने के सिवाय और कुछ कर ही नही सकता था। तब उसने मुझे समझाया।

और भी बिगड़ कर उसने कहा, "यह क्या है? मैं तुमसे कहती हूँ कि बोल्स नाम का कोई आदमी नही है," और उसने अपना हाथ इस ढंग से फैलाया, मानो ख़ुद उसी की समझ मे नहीं आ रहा हो कि इस तरह का आदमी क्यो नहीं है, "लेकिन मैं चाहती हूँ कि वह होता .. फिर क्या मैं और सबकी तरह मानव जाति का ही एक प्राणी नही हूँ? हाँ, हाँ, हाँ मैं जानती हूँ, सचमुच मैं जानती हूँ.. तब भी मैंने जो उसे पत्र लिखा उससे किसी की हानि तो हुई नहीं..."

"क्षमा करना—किसे?"

"बोल्स को। और किसे!"

"लेकिन बोल्स तो कोई है ही नहीं।"

"हाय! अफ़सोस! लेकिन उसके न होने से क्या हुआ? वह नही है, मगर वह हो तो सकता है। मैं उसे ख़त लिखती हूँ और मुझे ऐसा लगता है, मानो वह है। और टेरेसा—तो मैं ही हूँ, और वह मुझे जवाब देता है, और तब मैं फिर उसे लिखती हूँ..."

आखिरकार अब मेरी समझ में आया और न जाने क्यों, मैं बहुत दुःखित, बेचैन और लज्जित हो गया। पास ही, सिर्फ़ तीन गज की

बुला लाने का और जो कुछ वह चाहती थी, लिख देने का इरादा किया।

मैं उसके कमरे मे घुसा। मैंने चारों ओर देखा। वह मेज के पास कुहनियों के बल अपने मुँह को हाथो से ढॉके हुए बैठी थी।

मैंने कहा, "मेरी बात सुनो।"

वह अपनी जगह से कूद पड़ी, चमकती हुई आँखों से मेरी ओर आई, और मेरे कन्धे पर अपना हाथ रख कर बहुत धीमे स्वर मे कहने लगी। भारी आवाज मे उसका धीरे-धीरे बात करना मक्खियों की भिन्-भिन् की तरह सुनाई पडता था।

"अच्छा, देखिये, बात यह है कि न तो कोई बोल्स ही है, न टेरेसा। किन्तु इससे आपको क्या? क्या कलम को कागज पर चलाने में आपको बहुत तकलीफ मालूम होती है? न कहीं बोल्स है न दूसरी टेरेसा; सिर्फ मैं ही हूँ। अब आप जान गये न? आपको इससे बहुत लाभ होगा।"

इस तरह के स्वागत से अत्यन्त चकित होकर मैंने कहा, "क्षमा करना, पर यह सब क्या है? तुम कहती हो कि बोल्स कोई नही है?"

"नही।"

"और न कोई दूसरी टेरेसा ही है?"

"न टेरेसा। मैं ही टेरेसा हूँ।"

मेरी समझ में यह बात बिल्कुल नहीं आई। मैंने उस पर नजर जमा कर यह जानने की कोशिश की कि हम दोनों में से किसके होश-हवास गुम हो गये हैं। लेकिन वह फिर मेज के पास जाकर किसी चीज को इधर-उधर खोजती रही, उसके बाद मेरे पास लौट कर नाराजगी के स्वर मे कहने लगी, "अगर बोल्स को खत लिखना आपको इतना भारी काम जान पड़ता है, तो यह देखिये, आपका खत। इसे ले जाइये! मेरे लिये और कोई लिख देगा।"

मेरे परिचित सज्जन ने सिगरेट की राख झाड़ी और कुछ सोचते हुए आकाश की ओर देख कर इस तरह अपनी कहानी समाप्त की—

एक मनुष्य अपने जीवन मे जितनी ही अधिक कड़वी चीजे चख चुकता है, उतना ही अधिक वह मीठी चीजों का भूखा हो जाता है। पर हम लोग यह बात नही समझते, क्योंकि हम अपने पुण्य और पवित्रता के चिथड़ो को लपेटे हुये हैं, हम अपनी सर्वाङ्गपूर्णता के कुहरे में से दूसरो को देखते हैं, और हमे पूरा विश्वास है कि हम सदा और सब जगह पाप से बच सकते हैं।

ध्यान से देखने पर ये सब बाते कितनी मूर्खतापूर्ण और कठोर मालूम होती हैं। हम कहते हैं—पतित लोग। पर 'पतित लोग' कौन हैं, जरा मुझे बताइये तो! सबसे पहले ये लोग वैसे ही रक्त, मास और हड्डी वाले हैं जैसे हम सब। पर यही बात हम न जाने कितनी सदियों से रोज सुनते आये हैं और हम सचमुच बडे ध्यान से सुनते हैं।—ईश्वर जाने, यह सब बातें कैसी घृणित और डरावनी हैं! कहीं ऐसा तो नहीं है कि ऊँचे स्वर मे दिया गया मनुष्यता का उपदेश सुनकर हम अपनी सब अच्छाइयो को एकदम खो बैठे हो?

वास्तव मे हम लोग भी पतित ही हैं, और जहाँ तक मैं देखता हूँ, अपनी सर्वाङ्गपूर्णता के और अपने बड़प्पन के विश्वास की गहरी खाई मे हम लोग बहुत नीचे गिर गये हैं। लेकिन अब इन बातो को समाप्त करना चाहिये। यह सब पर्वतों के समान प्राचीन है—इतना प्राचीन है कि इसके बारे मे कुछ कहना लज्जाजनक है। सचमुच बहुत ही प्राचीन है—हाँ, प्राचीन ही तो है।

दूरी पर एक मानव व्यक्ति रहता है, जिसके साथ दया का या प्रेम का व्यवहार करने वाला ससार भर मे कोई नहीं है, और इस व्यक्ति ने अपने लिये एक मित्र का आविष्कार कर लिया है !

"अब सुनिये ! आपने मेरे कहने से बोल्स को एक खत लिख दिया, मैंने उस खत को ले जाकर किसी दूसरे आदमी से पढवा कर सुना, और जब वह पढ रहा था, मैं बडे ध्यान से सुन रही थी और मैंने कल्पना करके मान लिया कि उस समय बोल्स वहाँ पर मौजूद था। फिर मैंने आप से बोल्स के पास से टेरेसा के लिये—अर्थात् मेरे लिये—एक खत लिख देने की प्रार्थना की। ऐसा खत मेरे लिये लिख दिये जाने पर और पढ कर सुनाये जाने पर मुझे पूरा विश्वास हो जाता है कि बोल्स कहीं न कहीं अवश्य है। और इस तरह मेरा जीवन अधिक सुखमय हो जाता है।"

"तुम्हारे जैसे बेवकूफों की शैतान खबर ले," मैंने सब बातें सुन कर मन ही मन कहा।

और उसके बाद से, नियमित रूप से, सप्ताह में दो बार, मैं एक पत्र बोल्स को लिखता, और बोल्स की ओर से टेरेसा को उस पत्र का उत्तर भी लिखता। मैं इन उत्तरो को बडी अच्छी तरह लिखता था। वह उन उत्तरों को बड़े ध्यान से सुनती, बीच-बीच में जोर से रोने लगती—या मैं कह सकता हूँ, अपनी भारी आवाज मे गरजने लगती। और इस तरह काल्पनिक बोल्स के पास से आये हुए वास्तविक पत्रो के द्वारा रुलाई जाने के बदले मे वह मेरे मोजों, कमीजो और दूसरे कपडों की मरम्मत कर दिया करती। पीछे से, इस कहानी के शुरू होने के तीन महीने के बाद, किसी अपराध में उसको कैद हो गई। निश्चय ही अब तक वह मर गई होगी।

× × ×

में एक गढ़ा है—बहुत ही सुन्दर। उसके गाल पर एक छोटा-सा तिल है। सब मिला कर चित्रकार का बनाया हुआ एक आदर्श-सा उसका मुख है। रमणी ने फिर धीरे-धीरे कहा—"हॉ, एक चीज नही है, नारगी का फूल नही है।"

रमणी की बात का मतलब ठीक न समझ पाकर युवक ने उत्तर दिया—"नारगी का फूल ! हमारे प्रान्त मे नारगी का फूल तो होता ही नहीं है।"

"सच ? आह, तुमने यह बात मुझसे क्यो कही ? मेरे ख्याल में नारगी का फूल बहुत् सुन्दर है—कुछ कमल के सा—यौवन और पवित्रता का मानो मिश्रण हो।"

अभी तक युवक उसकी बात का अर्थ नहीं समझ सका। रमणी ने खेल में अपने हाथ के पखे को युवक के कधे पर मार कर कुछ गम्भीर स्वर से कहा—"अच्छा, तुम्हारे बाग़ मे हम लोग क्या करेंगे ?"

"रोज हम लोग वहॉ टहलेंगे।"

"और उस जिमींदारी मे ?"

"ओ ! हम लोग वहॉ स्थिर होकर, जम कर, सुख और शान्ति से जीवन काटेंगे।"

रमणी पीछे की ओर सिर झुका कर हॅस उठी। युवक उसकी खरादी हुई-सी सुन्दर गर्दन, उसका उन्नत वक्षस्थल, उसका कधा देख पाया,—हॅसी के उच्छ्वास से उसके कधे हिल रहे थे। चेहरे पर की हॅसी के ऑसू पोंछ कर वह बार-बार कहने लगी—"बाग़ में टहलना—जिमींदारी मे स्थिर होकर जमना !" फिर वह बोली—"देखो, तुमने मेरे चेहरे की सब बनावट बिगाड़ दी। अच्छा, तुम्हारी उम्र कितनी होगी ?"

"बाईस साल का हूॅ।"

"सुन्दर उम्र है। मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। तुम्हे मेरी उम्र कितनी

कोई उत्तर नहीं

लेखक—मैमिन सिविरियाक

"और तुम कह रहे हो कि हम लोगों का एक सेव का बाग भी रहेगा?"—बायीं आँख की पलक के नीचे कारीगरी से रंग की पेंसिल फेरती हुई रमणी ने यह बात कही।

अभिनय के लिये रमणी अपना मुख किस तरह झट-पट चित्रित कर रही है, यह देखते हुये युवक ने उत्तर दिया—"हाँ,—और सेव के पेड़ो मे जब फूल खिलते हैं, तब कैसा सुन्दर लगता है!"

"और नीचे से वोल्गा नदी बही जा रही है?"

"मेरा गाँव का मकान बिल्कुल पहाड के ढाल पर है। बरामदे से एक सुन्दर दृश्य दीखता है। और बसन्त काल मे नदी बहुत चौड़ी हो जाती है।"

"ओह खूब सुन्दर है—ढालू पहाड़, चौड़ी नदी, सेव के पेडों मे फूल खिलना—सभी बहुत सुन्दर है। पर तुम्हारे बाग मे एक चीज नहीं है!"—रमणी ने युवक की ओर मुख फेर कर मुस्कराती हुई आँखो से कहा। उसका मुख आकर्षक है—उसने युवक को चुम्बक की भाँति आकर्षित कर लिया था। उसकी आँखे कितनी सुन्दर हैं—काली और उज्ज्वल, उसके ओंठ गुलाब की पँखुड़ियों की तरह हैं—जरा मुस्कराने पर उनके भीतर से मोती की भाँति दाँतों की दो पंक्तियाँ दीखती हैं। उसके गुलाबी रग के छोटे-छोटे कान हैं। उसका ललाट छोटा है—मानो किसी भास्कर ने खोद कर बनाया है। उसकी ठोड़ी

न कुरूप; वह केवल प्रथम तारुण्य के सौन्दर्य से—निष्कलंक यौवन की सम्पदा से, भूषित था। छोटी, घनी दाढी रहने के कारण वह अपनी वास्तविक आयु की अपेक्षा अधिक स्थिर-बुद्धि और अनुभवी लगता। उसकी औत्सुक्यपूर्ण काली आँखो से प्रकट होता कि वह बहुत सीधा-सादा, विश्वासी और निर्भरशील है। उसकी ग्रीष्म-ऋतु की शानदार पोशाक और चमकता हुआ चेहरा देखने से जान पड़ता कि वह ऊँचे समाज का है। मारिया इवानोवना ग्रीष्म-नाट्यालय में आने-जाने वालो की आकृति का सदा से अनुशीलन करती आ रही है, उसने पहिले ही युवक के गुणो को लक्षित किया था। युवक का रग-ढंग उसे बहुत अच्छा लगा था, इसीलिये उसने युवक को सजने की कोठरी में आकर मिलने की अनुमति दी थी। किन्तु आज मारिया उसकी बात से इतनी चकित हो गई थी कि उस बात को परिहास के भाव में लेने की चेष्टा करने पर भी, वह अपने चित्त को वश मे नहीं ला पा रही थी।

युवक ने कुछ गद्गद् स्वर में कहा—"यह न भूलना मारिया, कि मैंने इस बात को खूब सोच-विचार कर गम्भीर भाव से ही कहा है।"—चित्त की उत्तेजना से उसका कण्ठ सूख गया था।

"अच्छा ? हाँ, मुझ से मजाक न करना। जल्द ही मेरी बारी आ रही है। कहो आज तुम्हे कौन-सा गाना सुनाऊँ ?"

"जो तुम्हारी मर्जी हो।"

"अच्छा। मैं जानती हूँ कि तुम कौन-सा गाना सुनना पसन्द करते हो।"

वह और भी कुछ कहने जा रही थी कि किसी ने दरवाजा खट-खटाया;—यह 'स्टेज-मैनेजर' की पुकार थी। वह अपनी कुरसी से उठ पडी, फिर अपनी पोशाक के पीछे का लटकता हुआ भाग हाथ मे उठा लिया और शीघ्रता से कोठरी से निकल गई। 'स्टेज' के सँकरे, गदे,

लगती है ?—नही, अन्दाज न करना ही अच्छा है। मैंने खुद अपनी उम्र भुलाना शुरू कर दिया है।"

वे सेण्टपीटर्सबर्ग के एक 'ग्रीष्म ऋतु के नाट्यालय' की सजने की कोठरी मे थे। दरवाजे के बाहर कागज का एक टुकड़ा चिपकाया हुआ था, जिस पर लिखा था—'मारिया इवानोवना'। किसी नये आगन्तुक के कोठरी में आने पर, कोठरी की भीतरी दीन-दशा सहज ही उसकी दृष्टि मे पड़ती। कमरे की दीवारे पुरानी नाव के ज्यों-त्यों करके लगाये गये तख्तों से बनी थीं; लकड़ी की कीले निकाल लेने से उनमे छेद भरे हुये थे, चिथडे, रुई और कागज ठूँस-ठूँस कर उन छेदों को बन्द करने की चेष्टा की गई थी। फिर भी बारिश में कोठरी पानी से भर जाती थी। असबाब मे था—एक टूटा सोफा, दो-तीन कुर्सियाँ, एक शृगार की मेज और एक मुँह-हाथ धोने की टेबिल। कोठरी के एक कोने मे अभिनय की पोशाके अस्त-व्यस्त टँगी हुई थीं। हवा रुकी हुई थी,—ओडिकोलोन, पाउडर और सस्ती कीमत के सेंट की गध से कोठरी भरी हुई थी। बाग की ओर एक खिड़की थी; पुराना, मैला और पीला एक मसलिन का पर्दा उस खिड़की में लगा हुआ था। अभिनय के समय, जब मारिया इवानोवना अपनी सजावट करती तो खिड़की बन्द रहती थी। दिन और रात के अवशिष्ट समय मे भी उसे खुली रखने की आवश्यकता नहीं होती। इस तरह की सजने की कोठरी का उपभोग केवल 'स्टार' पदवी से भूषित श्रेष्ठ अभिनेत्रियाँ ही कर सकती थीं, लेकिन मारिया अच्छी तरह समझ रही थी कि उसका राज अब अधिक दिन नहीं रहेगा; केवल पहिले की प्रसिद्धि के आधार पर ही वह अभी तक इन नाट्यालयो में रानी की भाँति राज कर रही है। जीवन के सभी व्यापारों में प्रसिद्धि का प्रभाव बहुत है।

जो युवक उसके सामने खड़ा था, वह देखने मे न सुन्दर था,

उस समय भी लोग बड़े जोरो से तालियाँ पीट रहे थे—मारिया को एक के बाद दूसरा गाना जबरन गाना पड रहा था।

फिर क्लान्त होकर वह सजने की कोठरी मे लौट आई—उसके चेहरे पर कई लाल धब्बे थे और उसकी आँखे उद्वेग से चचल थी। उसके हाथों मे कई "विजिटिङ्ग-कार्ड" (लोगों के नाम-पते छपे कार्ड) थे, मारिया ने उन्हे लापरवाही से प्रसाधन-टेबिल पर फेक दिया। युवक के मुख पर एक मौन प्रश्न का भाव देखकर उसने क्लान्त भाव से उत्तर दिया—"ये सब अलग 'एकान्त-कमरे' मे रात्रि-भोजन करने के निमन्त्रण-पत्र हैं! मेरे कदरदान लोग सोचते हैं कि मेरे भी ऊँट की तरह सात पेट हैं! और ये लोग हमारे श्रद्धेय, बडे घरों के मालिक हैं और उम्र मे भी बूढे है! घर मे एकान्त कमरे मे एक गायिका के साथ रात्रि-भोजन करने में ये शर्मायेंगे, लेकिन यहाँ—जहाँ उन्हे कोई पहिचानता नही है,—इस मौके पर छिपकर आनन्द करना चाहते है!" युवक की आँखो मे ईर्ष्या का भाव देख कर, उसने झट मुस्कराते हुये कहा—"डरो मत, तुम्हारा प्रतिद्वन्द्वी कोई नहीं है। आज की रात्रि को मैं अपनी मालिक स्वय हूँ—यह मेरे लिये एक दुर्लभ ऐश्वर्य है—"

फिर युवक के कधे पर अपना गोल, श्वेत हाथ रख कर, आँखों का भाव समझने के लिये उसकी आँखो की ओर एकटक देखती हुई फिसफिसा कर मारिया बोली—"इस तरह के प्रेम की स्वीकारोक्ति, विवाह का प्रस्ताव मुझे रोज-रोज थोडे ही सुनने को मिलते हैं।"

युवक ने आँखे नीची कर ली। युवती ने सोचा, यह सब कहना शायद ठीक नही हुआ।

(२)

अभिनय के पश्चात् वे टहलते हुये ग्रीष्म-उद्यान के एक कोने में चले गये। वहाँ एक पत्थर के मकान के भीतर कई 'एकान्त कमरे' हैं।

मन्द प्रकाश वाले बरामदे से जाती हुई मुस्कान भरे चेहरे से आप ही आप बार-बार कहने लगी—"कैसा मजेदार आदमी है ! कैसा निर्बोध है यह भला मानस !"

सजने की कोठरी का दरवाजा खुला था; युवक ने कानों को बहिरा कर देने वाली गर्जना की-सी प्रशसा-ध्वनि सुनी। मारिया उस समय 'फुट-लाइट' के पास आ गई थी, इसीलिये जिस तरह खून के प्यासे पशु के सामने एक ताजा गोश्त का टुकड़ा फेकने पर वह गर्ज उठता है, दर्शक उसी भॉति गर्जन कर उठे। पर शोर शीघ्र ही बद हो गया। फिर युवक नाटक के जिन प्रथम वाक्यों को सुनना पसन्द करता था, वही वाक्य उसके कानों में पहुँचे।

वह हृदय की उत्तेजना से बेहोश-सा होकर सुन रहा था; गाने के प्रत्येक स्वर मे वह एकदम तन्मय होता जा रहा था—आनन्द से विभोर हो रहा था। मारिया युवक के ही उद्देश्य से गा रही थी, दूसरे शब्दों में, अपना प्रेम प्रकट कर रही थी।

सब शोर रुक गया था। क्षण भर के विराम के पश्चात् फिर दर्शकों की मडली से प्रशंसा का एक तूफान बह गया। युवक उठ कर सजने की कोठरी मे एक ओर से दूसरी ओर चहल-कदमी करने लगा। उसका हृदय क्षुब्ध और चचल हो उठा—किन्तु तूफान आने के पहिले जिस तरह निस्तब्धता छाई रहती है—उसी भॉति क्षुब्ध होने पर भी वह निस्तब्ध था। अब इन वस्तुओं से उसे घृणा होने लगी—यह पागल शोर करने वाली जनता; यह नीच शराब-खाने की वायु, जो मानो बेरोक लम्पटता की विषैली भाप से मिली हुई है, मानो एक सड़ा दलदल है, जहॉ से विषैली दुर्गन्ध निकल कर निकट की सारी वस्तुओं को कलुषित कर रही है; और यह रमणी, यह श्वेत कमल, क्या इस विषैली दलदल में अकलुषित रह सकेगी ? एक नीच शराब-खाना—और ये प्रथम प्रेम की बाते ? कितनी विषमता है !

रहता, इसके सिवाय—" और भी वह जाने क्या-क्या कहने जा रही थी, "मुझे इतने लोगो से घनिष्टता करनी पड़ती है, और रोज़ इतने नये-नये लोग आते हैं—", पर वह ठीक समय पर अपनी भूल समझ सकी। युवक ने भोजन की सूची पढ़ी; वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि मारिया से क्या खाने के लिये कहे।

"पैवेल कन्सटैनटिन! आज रात को अपना भोजन मैं खुद चुन लूँगी—सस्ती कीमत का और सीधा-सादा। एक रकेबी चुकन्दर का शोरवा, कवाव और बन्द-गोभी या कलेजी मँगवाओ।"

"मैंने गरम-गरम कटलेट और झींगा मछली लाने के लिये कहा है।"

"अरे नहीं,—ये सब स्वादिष्ट चीजे खाते-खाते मैं थक गई हूँ—मैं सीधा-सादा भोजन चाहती हूँ।"

"और शराब ?"

"शराब बिल्कुल नही—एक बोतल सस्ती कीमत की 'वोडका' मँगाओ। आओ, हम लोग स्कूल के दो सहपाठियों की तरह भोजन करें। मैं कुछ गरम कबाब मँगाऊँगी—और एक टुकड़ा सस्ती कीमत का मामूली पनीर, जो छुरी के एक आघात से चूर-चूर हो जाय—क्या यह सब तुम्हे पसन्द नहीं ?"

युवक उसकी अद्भुत बातें सुन कर मुस्करा रहा था। इन चीजों का आर्डर देने पर खानसामा ने अवज्ञा से युवक की ओर देखा; मारिया इवानोवना उनके नाट्यालय की प्रधान अभिनेत्री है, और उसके लिये एक बोतल 'वोडका' मँगाई जा रही है!

मारिया आँखो को जरा सिकोड़ कर युवक को एकटक देख रही थी और बार-बार कह रही थी—"भोजन बहुत सुन्दर होगा—बहुत अच्छा होगा।"

वह अपनी 'लैस' की टोपी टेबिल पर रख कर खिड़की के पास आई। खिड़की से उसे जनता का कोलाहल—जो अब सारे बाग मे

रमणी युवक की बॉह अपनी बॉह में डाल कर बार-बार चारो तरफ देखने लगी—मानो इस डर से कि किसी परिचित आदमी से भेट न हो जाय। युवक भी उसकी आशंका का अनुभव करके, सब के चेहरो का अच्छी तरह निरीक्षण करने लगा। दो अभिनेताओं को वे देख पाये; एक मोटा-सा, लाल चेहरे का था और दूसरा सॉवला, बड़ी-बड़ी ऑखों का था। दोनों ने आपस मे इशारा किया, मोटे ने फिसफिसा कर न जाने क्या कहा—निश्चय ही वह मारिया के सम्बन्ध में कुछ कह रहा था। सुन्दर अभिनेता की ऑखो मे मुस्कान दीख पड़ी—'चारा ही क्या है?' इस भाव से, फ्रासीसी-ढॅग से, उसने अपने कधे सिकोड़े।

मारिया शीघ्रता से चलती हुई मन ही मन बोली—"पाजी! बदमाश!"

इन जगहों के 'एकान्त कमरे' जिस तरह के होते हैं, ये भी वैसे ही थे—शराब पीने के अड्डे। गन्दे, टूटे-फूटे असबाब का एक मिश्रित सग्रह कमरे मे था—एक पीला और गन्दा दर्पण, एक फटा और पुराना गलीचा, आदि। कमरे के द्वार के पास, नाट्यालय का एक नौकर तेजी से उनके पास आया—उसने मारिया के हाथ मे गुप्त भाव से और दो 'विजिटिङ्ग कार्ड' देने की कोशिश की पर मारिया ने नाराजी से उसको दूर ढकेल दिया—

"बस! बस! उन लोगों से कहना कि, मैं मर गई हूॅ—हॉ, मर गई हूॅ।"

उनके कमरे मे प्रवेश करने पर द्वार बन्द हुआ। मारिया एक कुरसी पर बैठ गई। उसने क्लान्त स्वर से कहा—"तुम्हे अगर पता होता कि मैं कितनी थक गई हूॅ! हॉ, क्षमा करना—मैं तुम्हारा नाम भूल गई।"

"पैवेल कन्सटेनटिन रुजिशेव।"

"ठीक है, ठीक है, मुझे क्षमा करना। मुझे कुछ भी याद नही

सोच सकते कि एक छोटी-सी बालिका के भीतर भी कितनी आसानी से 'नारी' जाग उठती है।—तुम उस कुर्सी पर क्यो बैठे हो, कन्सटैन्टीन पैवलोविच ?"

"मेरा नाम है पैवेल कन्सटैन्टिन।"

"मेरी गलती हुई, क्षमा करना—यही आकर बैठो, इस सोफा पर मेरे पास आकर बैठो; आओ, हम लोग एक दूसरे से गिलास छुआ कर 'वोडका' पिये। ठीक है। अब मैं अपने आपको देख सकती हूँ—एक छोटी-सी बालिका ! मेरी देह की बनावट बहुत सुन्दर थी—लम्बे, घने बाल थे—चेहरा बहुत सुन्दर था—और आँखें कितनी कोमल, कितनी सुन्दर थीं ! कितने वर्ष बीत गये हैं, इसीलिये मैं अब अपनी बात कह सकती हूँ—रास्ते मे एकदम अपरिचित एक सुन्दर बालिका को देखने पर, जिस तरह उसके बारे में बात की जा सकती है, उसी तरह अब मैं अपनी बात कह रही हूँ। आओ, मेरे और भी पास, सट कर बैठो। कैसे अद्भुत आदमी हो तुम ! अच्छा ठहरो, मैं ही तुम्हारे पास खिसकी आती हूँ—यह देखो !"

मारिया के कधे ने पैवेल के कधे को स्पर्श किया। युवक ने उसकी देह की गर्मी का, उसके 'पाउडर' की गध का अनुभव किया। वह आनन्द में विभोर हो गया। उसकी आँखे छलछला आई, वह गहरे हर्ष और विषाद में मग्न हो गया। मारिया गिलास से एक-एक घूँट 'वोडका, पीती हुई और अपने सर्वांग मे पनीर के टुकड़े बिखेरती हुई लगातार बकती जा रही थी—"कन्सटै—यानी पैवेल कन्सटैनटिन, तुमने मनुष्य की आँखों का भाव कभी लक्ष्य किया है ? बच्चों की यानी छोटे-छोटे बच्चों की आँखों का भाव कितना सुन्दर होता है ! बालकों के इस भाव की निर्मलता जल्द ही नष्ट हो जाती है, पर बालिकाये सोलह वर्ष तक यही भाव बनाये रखती हैं। हाँ बिल्कुल निर्मल ! वायु से अक्षुब्ध शान्त सागर की ओर देखने मे जैसा सुख होता है, उनकी आँखों की

फैल गया था—दूर से सागर के गर्जन की भाँति सुनाई पड़ने लगा।

रमणी चिन्ता के भाव से कहने लगी—"हम लोगो को यहाँ न आकर एक ऐसी छोटी-मोटी भोजन-शाला मे जाना चाहिये था, जहाँ की हवा में जले मक्खन, भूने प्याज और हेरिङ्ग मछली की गध होती। लेकिन मैं समझती हूँ कि बहुत मँहगी जगहो के सिवाय इतनी रात को और कोई भोजनशाला खुली नहीं रहती।"

रात्रि का भोजन बहुत ही सादा—घर का-सा—हुआ। मारिया प्रतिदिन रात को एक गिलास 'वोडका' शराब पीती है। कारण बताते हुये उसने कहा, "नसें स्वस्थ रखने के लिये मुझे यह पीनी पडती है।" यह शराब पीकर उसके चेहरे का रङ्ग कुछ उज्ज्वल हो उठा—वह और भी सुन्दर दीखने लगी, पर आँखो के पास उस समय भी जो बनावटी रङ्ग का चिन्ह था, उससे यह सौदर्य मानो कुछ कम हो गया था। पैवेल मुग्ध-दृष्टि से उसे देखने लगा और उसकी कभी न समाप्त होने वाली बाते ध्यान से सुनने लगा।

अपराधी की तरह जरा मुस्करा कर, उसने कई बार पैवेल से पूछा—"मेरी बाते सुनते-सुनते तुम थक तो नहीं गये? मैं सब बाते तुमसे कहना चाहती हूँ—सब नही—यानी जो सुनने मे अच्छी लगे। यहाँ से दूर दक्खिन मे मेरा जन्म हुआ था—वही मेरा पालन भी हुआ, मेरा परिवार गरीब भी नही, धनी भी नही, मध्यम श्रेणी का था। मेरा बचपन बहुत ही नीरस और आनन्द-हीन था, समय मानो कटता ही नही था। जब मैं स्कूल के चौथे दर्जे से पाँचवे मे गई, उस समय मेरी उम्र चौदह साल की थी। लेकिन मैं उससे बड़ी दीखती थी। और स्कूल के चुस्त कपड़ों मे मेरी देह मे जाने कैसी एक उग्रता खिल उठती थी। मैं बहुत शीघ्र ही अपने सौन्दर्य की कदर समझने लगी थी। बाद के ज़ीवन की सारी दुर्दशा का कारण यही था। तुम, पुरुष, यह नहीं

हुआ था, किन्तु अब उसने सारे हृदय से अनुभव किया कि सचमुच पैवेल के हृदय की यह सच्ची इच्छा है। उसकी दृष्टि से ही प्रकट होता है, वह अपने सारे शरीर से, सारे मन से उसकी ओर एकटक देखता रहता है।

वे कई क्षणो तक चुप रहे, पर वह निस्तब्धता बातों की अपेक्षा अधिक मर्मस्पर्शिनी थी; युवक समझ गया था कि मारिया क्या सोच रही है, मारिया के कुछ कहने के पहले ही उसने स्वयं बात करना शुरू कर दिया।

बहुत कठिनाई से शब्दों को चुन कर पैवेल बोला—"हाँ, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा एक अतीत था। पर मुझे उससे कोई मतलब नहीं है। मैं वह सब नही जानना चाहता। जीवन मे कुछ अनभूतियाँ ऐसी होती हैं जो सारी मलिनता दूर कर देती हैं—जैसे आग में धातु का मैल साफ हो जाता है। मै जो कर रहा हूँ, वह जान-बूझ कर कर रहा हूँ। लेकिन तुम्हे एक शर्त माननी पड़ेगी—ईश्वर के लिये, अपने अतीत के विषय में एक भी बात मुझसे न कहना। वे बातें सुनने पर मुझे बहुत दुःख होगा, मेरे मन मे एक आतक छा जायगा—विशेष-कर तुम्हारे मुँह से सुनने पर।"

मारिया नीरव हो गई, उसके सिर मे चक्कर आने लगा—आँखों के सामने अँधेरा छा गया। पैवेल उसका हाथ कस कर पकड़ कर बार-बार कहने लगा—"नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं! किसी मनुष्य के विषय मे विचार करने के समय उसकी भूलो पर ध्यान देना चाहिये—या उसके हृदय को देखना चाहिये?"

भाई जिस तरह बहिन से कहता है उसी तरह गम्भीर और सीधी-सादी भाषा मे पैवेल इसी ढग की और भी बाते कहता जा रहा था कि बाग से आनन्द मनाने वाले लोगो का शोर और गाने की ध्वनि उन लोगो के पास जा पहुँची। मारिया इवानोवना को लगा कि वह जनता

और देखने में भी वैसा ही अच्छा लगता है; इन आँखों के भीतर से उनकी आत्मा दीख पड़ती है—तब तक आत्मा निर्मल और अक्षुब्ध रहती है। हाँ, मैं इस तरह स्कूल के चौथे से पाँचवे दर्जे में गई। फिर जब छठे दर्जे में गई तब स्कूल के चुस्त कपड़े मुझे बुरे मालूम होने लगे।"

मारिया ने एक ठंडी साँस ली और अधखुली आँखो से सोफा के पीछे सिर टेक दिया। पैवेल उसका एक हाथ अपने हाथ मे लेकर उस पर प्यार के साथ मृदु आघात करने लगा। मारिया ने हाथ नहीं हटाया, आँखे भी नही खोलीं। मीठी झपकी के आवेश मे वह अपने को बालिका के रूप मे देखने लगी।

फिर उसने, मानो नीद से जाग कर, फिसफिसा कर कहा—"हाँ, वह समय बहुत ही सुन्दर था, और उसके बाद—"

युवक ने उसकी बात काट कर कहा—"मैं जानता हूँ कि उसके बाद क्या हुआ था—यानी अनुमान कर सकता हूँ—"

सहसा एक आवेग-पूर्ण, प्रबल इच्छा ने मारिया को आक्रान्त कर लिया। उसने सोचा—जो ऐसा शान्त है, इतना अच्छा है, इतने निर्मल-चरित्र का है, उससे अपने समस्त जीवन का इतिहास कहना ही चाहिये! उसे बता देना चाहिये कि वह कैसी स्त्री से शादी करके उसे अपने पैतृक घर में लाना चाहता है। यह सच है कि मारिया के जीवन का इतिहास सुनने पर वह घृणा से मुँह फेर लेगा, लेकिन नीच प्रवंचना की अपेक्षा यह अच्छा है। ओफ! उसने इतनी झूठी बातें कही हैं, सारा जीवन झूठ करती आ रही है, पहिले उसने जो कुछ भी कहा है, सब झूठ था। पैवेल ने जब पहली बार विवाह का प्रस्ताव किया था, तब उसने उसे उपहास-मात्र समझा था—सोचा था कि मेरी जैसी स्त्री से घनिष्टता बढ़ाने के लक्ष्य से ही उसने यह प्रस्ताव किया है। अपने जीवन के इतिहास में उसे अनेकों बार इस तरह का अनुभव

किया कि उसके हृदय पर एक अज्ञात भार है। वह रोने लगी; अपने ऊपर क्रोधित हुई।

"बूढ़ी—तू बड़ी मूर्ख है—तू बड़ी मूर्ख है!"

बड़े दर्पण के पास जाकर वह बहुत उत्सुकता से अपना चेहरा देखने लगी—देखा कि यौवन की चमक कुछ क्षीण हो गई है। तीखे भाव से वह जरा मुस्कराई।

"बूढ़ी—एकदम बूढी हो गई हूँ?"

एक समय था जब प्रौढ़ स्त्रियो को युवती बनने के लिये जी-जान से कोशिश करती देख कर मारिया उनका उपहास किया करती थी, अब उसकी बारी आई है! समय किसी पर दया नही करता। मारिया दोनो हाथो से अपना सिर पकड़ कर अपने आपको गालियाँ देने लगी—रोने लगी। वह पैवेल से कभी शादी नही करेगी। यह बहुत ही हास्यजनक होगा,—बाईस का पति, और पैंतीस साल की पत्नी—तेरह वर्ष का गहरा व्यवधान! नही, वह उससे केवल प्रेम करके ही जीवन काट देगी—पैवेल का प्रेम चाहे रहे, या न रहे। पर किसी का प्रेम न पाकर 'फेंकी हुई चीज' की तरह रहना! नही इसमे भी कोई हर्ज नहीं है। पर लोगों के निकट हास्य-जनक होना भी असह्य होगा! पर बूढा पुरुष क्या युवती स्त्री से विवाह नही करता है? ऐसे भी विवाह हुये हैं जो एक दूसरे के स्नेह पर प्रतिष्ठित हैं। कुछ ऐसे भी लोग दीख पड़ते हैं जो जीवन मे केवल एक बार प्रेम करते हैं और अपनी पत्नियो को अपने जीवन का सर्वोत्तम भाग समझते हैं। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वे दोनो भी आमरण अनन्त सुख से सुखी रहे? इसके सिवाय, अपने प्रेमी के हृदय मे जरा-सा परिवर्त्तन देखते ही वह उसे छोड देने के लिये तैयार रहेगी, उसकी स्वतन्त्रता उसे लौटा देगी।

उसके इस प्रेम की उन्मत्तता उसके नाट्यालय के साथियो से छिपी नहीं रही, उससे साक्षात् होते ही वे मुस्कराते रहते। और वह मोटा

उसे बुला रही है; उसकी इच्छा हुई कि वह अपने आपको उससे दूर—बहुत दूर—छिपा कर रक्खे;—वे लोग तो उसे साधारणों की ही सम्पत्ति समझते हैं।

मारिया ने एक माता के से स्वर मे कहा—"तुम भले हो, तुम महान् हो! दुनिया मे वास्तविक अच्छे आदमियो की इतनी कमी है! कोई यो ही भला नही हो सकता—भला होना तो वश पर निर्भर करता है। तुम्हारे माँ-बाप भी बहुत भले होगे।"

"हाँ, वे बहुत भले हैं।"

बहुत रात्रि तक वे इसी तरह बैठे हुये छोटी-मोटी बातों की आलोचना करते रहे। इन तुच्छ बातो मे भी उन्होंने एक अज्ञात गुरुता अनुभव की। विदा लेने के समय, मारिया ने पैवेल का चुम्बन किया। यही उनका प्रथम चुम्बन था और मारिया यह अनुभव करके चकित हुई कि उसके हृदय मे हमेशा से अधिक धड़कन हुई।

रात्रि अधकारपूर्ण थी। केवल देर से आने वाले अतिथि ही बाग़ मे थे। एक 'एकान्त कमरे' से शराबियो के झगड़ों की आवाज आ रही थी। थके हुये खानसामे खाली बर्त्तन और बोतलें लिये शीघ्रता से बगल से चले गये। सारी हवा शराबियो की बकवाद और प्रमोद की कलुषित भाप से भरी हुई थी।

पैवेल ने मारिया को एक बग्घी के पास ले जाकर उसे भीतर बिठा दिया।

जरा मुस्करा कर बहुत शान्त भाव से मारिया बोली—"मैं नहीं चाहती कि तुम मुझे घर तक पहुँचाओ।"

(३)

आने वाली राते भी सफेद और बिना चाँद की थीं—सेण्ट-पीटर्सबर्ग की वही सफेद राते।

मारिया इवानोवना के चित्त मे सुख नही था। उसने अनुभव

"ओ ! कैसी पागल है टानिया ! लोग क्या कह रहे हैं, वह सब दुहराने की जरूरत ही तुझे क्या है ?"

"लेकिन मैं जानती हूँ मारिया, कि तुम किसी से प्रेम करने लगी हो !"

"मान लो कि यह सच ही है—तो इससे क्या ?"

"मैं जानना चाहती थी कि प्रेम करते हुये तुम्हे कैसा लगता है ।"

मारिया 'हो-हो' करके हँस उठी ।

"अरी पगली, मुझे सन्देह होता है कि तू भी किसी से प्रेम करने लगी है ।"

"मैं नही जानती । दो आदमी मेरी खुशामद करते हैं—एक नाट्यालय का नौकर, और दूसरा बाल काटने वाला नाई ।"

"तू दोनो मे से किसे प्यार करती है ?"

"दोनों ही मुझे एक से अच्छे लगते हैं ।"

"पगली कहीं की ! अगर दोनो ही अच्छे लगते हैं तो तू एक को भी प्यार नही करती । प्रेम एक से ही किया जा सकता है । प्रेम करने की अभी तेरी आयु नहीं है, टानिया । प्रेम होने पर उसके विषय मे क़िसी से पूछने की आवश्यकता नही होती ।"

मारिया ने इस सरल किशोरी को हृदय से लगा कर कई बार चुम्बन किया ।

"मारिया, सब तुमसे प्रेम करते हैं । सभी तुम्हे चाहते है ।" मारिया की छाती पर अपना छोटा-सा सिर रख कर वह बोली—"तुम मुझसे कहना नहीं चाहती हो, लेकिन तुम सब कुछ जानती हो । नाट्यालय का नौकर निराश होकर भट्टी पर शराब पीने के लिये चला गया, और वह नाई पिस्तौल की गोली से अपना सिर उड़ा देने की धमकी दे रहा है । अब मैं क्या करूँ, यह समझ मे नहीं आता ।"

अभिनेता बुटूसोव, एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी मजाक का अनुवाद करके कहता—"हमारी मारिया इवानोवना अपने ४०) के दो नोटों को, दो २०) के नोट देकर तुड़ाना चाहती है। एक नकद और एक उधार में। इसे ही आपस में कर्ज लेना कहा जाता है।"

उसके मित्र ही ये सब फबतियाँ और सस्ती मज़ाक की बातें सुनाते। वह बहुत नाराज हो जाती, पर उसका एक जवाब था—"वे समझते नहीं हैं, इसीलिये नाराज होते हैं।"

मारिया के नाट्यालय में एक गोरी किशोरी थी, उसका नाम था टानिया। अभी हाल मे वह नाट्यालय मे आई है; और अभी तक उसने अपनी कुमारी की लज्जा नही खोई है। मारिया उससे स्नेह करती थी, और अपनी पोशाक मे एक गुल-दस्ता आलपीन से लगा देने के लिये अक्सर उसे अपने सजने के कमरे मे बुला लेती थी, फिर उसे कुछ मिठाई देकर बिदा कर देती थी।

टानिया नाट्यालय मे मारिया को एक आदर्श स्त्री समझती थी। रग-मच पर जाने के पहिले वह बरामदे के रास्ते मे मारिया के लिये प्रतीक्षा करती, उसकी प्रत्येक बात पर ध्यान देती और प्रेम की दृष्टि से उसका अनुसरण करती। अपने पर टानिया की यह निर्वाक् श्रद्धा देख कर मारिया मन ही मन हँसती और इस सुन्दर किशोरी को देख कर उसे स्वाभाविक ममता होती।

रग-मच के पीछे लोगो की बात-चीत कुछ समय तक सुनने के बाद टानिया ने सँकरे बरामदे मे मारिया के लिये प्रतीक्षा की और मारिया अकेली है या नहीं, यह निश्चित रूप से जानकर उसके सजने के कमरे मे गई।

"तुझे कुछ चाहिये, टानिया ?" मारिया ने पूछा।

किशोरी घबरा कर बोली—"नही—हाँ—" फिर हकलाती हुई बोली—"वे सब कह रहे हैं—क्या तुम किसी से प्रेम करने लगी हो ?"

भी कुछ बुरा नहीं लगता है, क्योंकि वे इनकी अभ्यस्त हैं। और तुम मुझे नाट्यालय छोड़ने के लिये कह रहे हो, पर यह कैसे सम्भव है? मेरी शर्त्त मुझे छोड़ने नही देगी। मैं अगर छोड़ कर चली जाऊँ, तो मुझे एक भारी रकम भरनी होगी।"

"वह रुपया मैं दूँगा।"

"पर मेरी साख? अगर मैं एक बार शर्त्त तोड़ूँ तो कौन मैनेजर मुझे फिर काम देगा? आज तुम मुझ से प्रेम कर रहे हो—इस समय सभी ठीक है; लेकिन कौन जानता है कि कल क्या होगा?"

"ईश्वर के लिये, मारिया, ऐसी बातें न कहो!" पैवेल गम्भीर और नम्र स्वभाव का है, वह अपनी बात या अपने काम के बारे मे अधिक नही कहता। पर नाट्यालय के समाज मे कुछ भी छिपा नहीं रहता। मारिया ने लोगो से सुना था कि पैवेल वोल्गा प्रान्त के एक बहुत धनी जमीदार का पुत्र है, उसने विश्वविद्यालय से उपाधि पाई है, और बिना वेतन किसी मन्त्री के दफ्तर मे काम करता है।

आस्टमस एक बहुत ही सन्देह-जनक चरित्र का आदमी था। उसका काम नाट्यालय के अभिनेताओं के साथ था। वह ऊँची टोपी पहिनता था, नाक पर सोने का चश्मा लगाता था और नाना भाषाओ मे बाते कर सकता था। जान पडता था, जैसे वह सब कुछ जानता है और सब को जानता है। वह नाट्यालय के प्रतिनिध के रूप मे अभिनेताओं, खास कर अभिनेत्रियों का, काम देखता था। उसका खास काम था अपने मालिकों के लिये उपयोगी आदमी ढूँढना, नाटकों की प्रशसा-भरी समालोचनायें लिखना और लोगो की निन्दा और बदनामी की बाते चारो तरफ फैलाना। मारिया अनेक वर्षो से उसे जानती थी और अनेकों बार उसने अपने कामो मे उसे लगाया था। पर अब वह उससे बहुत डरती थी। वह जानती थी कि आस्टमस

पैवेल से यह किस्सा कहते समय मारिया बहुत हँसती रही, लेकिन पैवेल को इसमे हँसने लायक कोई बात नही मिली।

प्रतिदिन ही एक-दूसरे से साक्षात् होने लगा। पैवेल मानो अपना कर्त्तव्य समझ कर, प्रति सध्या को बाग मे आकर समय काटता। केवल अभिनेता, नौकर-चाकर और खानसामा ही उसे जान गये हों सो नही, बाग़ में आने वाले-लोगो और नाटक के दर्शकों से भी उसकी जान-पहिचान हो गई थी। और इस जगह से उसका सम्बन्ध और परिचय जितना ही घनिष्ठ हो उठा, उतनी ही इसके प्रति उसकी घृणा बढने लगी। उसे जान पड़ता—यह सभी भयकर है, अति कुत्सित है और सुधार के बाहर है। शराबी जनता को खुश करने के लिये अभिनेताओ और अभिनेत्रियों को नाना प्रकार के धोखे की रचना करते हुये देख कर उसे बड़ा कष्ट होता। खास कर अभिनेत्रियाँ एक दूसरे से प्रतिद्वन्द्विता करके जिस तरह की निर्लज्जता करतीं, उसे देख कर वह बहुत दुःखित होता।

दूसरो की तरह मारिया भी 'चटपटे' गाने गाते समय नाना प्रकार की भाव-भगियाँ करती। उसका चित्रित चेहरा, नकली हीरों से ढँका कठ और बाँहे, उसकी निर्लज्ज मुस्कान और भाव-भगी देख कर पैवेल को डर लगता। प्रतिदिन रात्रि के भोजन के समय, वह मारिया से एक ही बात बार-बार कहता—"मारिया, चलो हम लोग यहाँ से चले जायँ। बड़ी भयानक जगह है। तुम नहीं जानती कि जब तुम रगमच पर नाना प्रकार की भाव-भगी करती हो, तब मुझे कितना कष्ट होता है! मैं तुमको पहिचान नही सकता। तुम्हारा चेहरा मुझे अपरिचित-सा लगता है, और तुम्हारी मुस्कान, तुम्हारी भावभगी, तुम्हारा स्वर—"

मारिया बोली—"तुम इसके अभ्यस्त नही हो, इसीलिये तुम्हे ऐसा लगता है—केवल मैं ही नहीं—जब मछली-वालियाँ जरा-सी उत्तेजना मे बहुत उत्साह से भद्दी गालियाँ बरसाने लगती हैं, तब उन्हे

(४)

मारिया ने जब कहा कि उसने नाट्यालय छोड देने का निश्चय किया है; तब पैवेल को बहुत आनन्द हुआ।

उसने हर्ष से पैवेल की ओर देख कर कहा—"आज मेरे गाने का अन्तिम दिन है। कल ही मैं मैनेजर को त्यागपत्र दे दूँगी। फिर भी मेरे दिल मे कुछ खटका हो रहा है, इसलिये कि भरी जवानी मे मै नाट्यालय को छोड़ रही हूँ। यहाँ मैं एक बहुत आकर्षण की चीज थी। लोगो ने मुझे बहुत पसन्द किया था। मेरे चले जाने पर इस कम्पनी की हानि हो सकती है।"

"प्यारी, वे अवश्य ही तुम्हारी जगह पर और किसी को रख लेंगे।"

"तुम भूल रहे हो कि मुझे बहुत हर्जाना देना होगा। बारह हजार रुपये या ऐसी ही कोई रकम। मेरे पास सिर्फ चार हजार रुपये हैं—इन रुपयों को मैंने बुरे समय के लिये जमा कर रक्खा था।"

"रुपये के लिये तुम कुछ भी चिन्ता न करो, मारिया।"

"जान पड़ता है कि तुम अपनी भावी पत्नी को बन्दीपन से छुडाने के लिये मुक्ति का दहेज दे रहे हो।"

"बिल्कुल यही बात है। तुमने ठीक कहा है। तो तुम्हारा यह अन्तिम अभिनय है?"

"हॉ पैवेल, और आज रात को नाट्यालय की भोजन-शाला मे हम लोगो का अन्तिम रात्रि भोजन होगा।"

दोनों ने उत्सुक प्रेम की दृष्टि से एक-दूसरे की ओर देखा, फिर मारिया अभिनय के लिये चेहरे पर रग लगाने चली गई; और पैवेल अपनी लज्जा की वस्तु को अन्तिम बार देखने के लिये नाट्यालय के भीतर गया। शराब-खाना बहुत ही निम्न श्रेणी का था, शराब-खाने पर आश्रित कुछ भिखमगे, सज्जनवेषधारी कई ठग, और आनन्द के अभिलाषी प्रौढ और बूढ़े ग्रामीण लोग, जो राजधानी मे किसी काम से

घटनाओं से क्षुब्ध उसके जीवन की सभी बाते जानता है और वह चाहे तो एक गुमनाम पत्र लिखकर उसके उदीयमान सुख और सौभाग्य को एक क्षण मे नष्ट कर सकता है।

आस्टमस स्वय भी उस परिस्थिति को अच्छी तरह समझता थ और इसीलिये वह मारिया के प्रति अप्रीतिकर घनिष्टता दिखाने लगा था। एक बार वह अपनी निर्दय दृष्टि से सीधा उसकी ओर ताक कर परिहास के रूप मे बोला—"अच्छा, अच्छा, आजकल एक छोटा-मोटा प्रेम का नाटक चल रहा है, मारिया इवानोवना? पर नही, तुम अपना अमूल्य समय और नष्ट मत करो। तुम मेरी बुद्धि और राय पर निर्भर रह सकती हो, क्योंकि मैं 'स्त्रियो की गुप्त बातों की कब्र' कहा जाता है। यही मेरे जीवन का ध्येय है, मारिया इवानोवना! खैर हॉ—मारिया इवानोवना, अगर तुम मेरा एक उपकार करो! मुझे विश्वास है कि तुम करोगी। टानिया नाम की एक नाचने वाली को तुम अवश्य जानती होगी। वह मुझे बेहद अच्छी लगती है, लेकिन जरा सा इशारा करते ही वह शर्माने का बहाना करती है और नाराज हो उठती है। अगर तुम मुझे अपने कमरे मे उससे मिलने दो—जैसे अचानक—तो कैसा रहे? इसके सिवाय मुझे अच्छी तरह मालूम है कि वह तुम्हे बहुत मानती है। और तुम बहुत बहुत चतुर हो, चाहो तो अनायास ही उसे राजी—"

मारिया क्रोध से लाल होकर उसकी बात बीच ही मे काट कर बोली—"मिस्टर आस्टमस, मुझे क्षमा करना। मैं ऐसे मामलों से कोई सम्बन्ध रखना नही चाहती।"

"तुम एक नये प्रतिद्वन्द्वी की आशका कर रही हो—यही न मारिया? ओ हो हो! सचमुच मैंने यह नहीं सोचा था।"

इन बातों के बाद इस जगह से शीघ्र से शीघ्र भाग जाने के सिवाय मारिया के लिये और कोई चारा ही नही था।

था; चित्त चचल और आनन्दित था । युवक ने पूछा—"सब खतम हो गया न ?"

"हाँ ।"

"तुम मैनेजर से मिलीं ?"

"क्षण भर के लिये । अपना संकल्प उसे जता दिया है; अब इन बातों को जाने दो ।"—यह कह कर मुस्कराती हुई मारिया ने टेबिल पर दस-बारह 'विजिटिङ्ग कार्ड' फेंक दिये ।

फिर वह मुँह बिचका कर बोली—"ये सब बूढ़े ग्रामीण मुझे शान्ति से नहीं रहने देंगे । मैं उनको बिल्कुल ही पसन्द नहीं करती । उनसे मुझे बडी घृणा है । वे नासमझ युवक नहीं हैं, वे बडे-बडे परिवारों के आदरणीय पिता हैं, वे सती स्त्रियों के पति हैं, वे पारिवारिक सुखों के जीवित उदाहरण हैं—उन्हें क्या रत्ती भर भी लज्जा नहीं आती ?"

उन दोनों ने फिर विद्यार्थियों के से सीधे-सादे रात्रि-भोजन के लिये खानसामे को हुक्म दिया । और एक सोफा पर बैठ कर एक-दूसरे की ओर प्रेम-भरी दृष्टि से देखने लगे ।

मारिया बोली—"आश्चर्य है! यह सब इतनी शीघ्रता से हो गया, मानो बिल्कुल स्वप्न-सा है । अच्छा, यह तो कहो कि हम लोगों का एक-दूसरे से परिचय कैसे शुरू हुआ ? सच कहती हूँ, मुझे कुछ भी याद नहीं आ रहा है ।"

"हम लोगों का परिचय कैसे हुआ, यह बात सुनने में उतनी अच्छी नहीं लगेगी । इसी तरह के एक 'एकान्त कमरे' में हुआ था । क्या तुम भूल गईं ?"

"ठहरो, याद करती हूँ । तुम्हारे साथ एक बार दो बूढ़े सज्जन आये थे । हाँ, उनमें एक अजीब सूरत का आदमी था—एक नाटा-सा बूढ़ा—उसने अपना नाम बताया, डाक्टर किण्डर बैल्सम । उसने मुझसे कहा कि उसी रात को बाग में तुमसे उसकी जान पहिचान हुई थी ।"

आते थे, यहाँ बैठे रहते थे—पर आज पैवेल जैसे कुछ नहीं देख रहा था। सभी एक बुरे स्वप्न की भाँति उसकी आँखो से ओझल हो गये थे। वह उन चेहरो को पहिचान भी नही पा रहा था—मानो सब मिल कर एक सा हो गया था। वह केवल मन ही मन सोच रहा था—"ओ! यहाँ से भाग कर खुली हवा मे जाने पर चैन मिले! घर की वोल्गा-नदी के किनारे मारिया को ले जाने के बाद मैं कितना सुखी होऊँगा!"

उसे जान पड़ा कि प्रवाह के पथ मे कोई अप्रतिरोधनीय बाधा आ जाने पर जैसे जल की गति रुक जाती है, उसी भाँति समय की गति मानो सहसा रुक गई है।

मारिया इवानोवना आज के 'प्रोग्राम' की अन्तिम अभिनेत्री थी। दर्शक जानते थे कि आज वह सदा के लिये विदा ले रही है, इसलिये वे अक्लान्त भाव से तालियाँ पीट-पीट कर उसे बार-बार यवनिका के सामने बुला रहे थे।

पैवेल मन ही मन कह रहा था, "बस करो! बस करो! अब और नहीं! अब उस बेचारी को छोड़ो!"

मारिया उसके साथ बाग की भोजन-शाला के एक 'एकान्त कमरे' मे आज अन्तिम बार भोजन करना चाहती है, यह जान कर पैवेल चकित हुआ। उसके विचार से, पीछे की ओर एक बार भी न देख कर इस जगह से एकदम भाग जाना ही अच्छा था। किन्तु नारी के हृदय का भीतरी तत्व कौन जान सकता है? शायद उसने अपने अतीत को अन्तिम बिदा देने के लिये, अपनी बुरी आदतो को सदा के लिये छोड़ने के लिये ऐसा विचार किया है।

युवक अपने 'एकान्त-कमरे' में मारिया के लिये प्रतीक्षा करने लगा। दूसरे दिनों की भाँति आज उसे यह कोठरी उतनी गंदी प्रतीत नहीं हुई।

मारिया ज़रा देर करके आई। उसके चेहरे पर कुछ सुख का भाव

मारिया ने कुछ शङ्कित स्वर मे कहा—"परमात्मा के लिये, मेरे साथ न आओ; कोई जरूरत नही है। टानिया मुझे घर तक पहुँचा देगी।"

युवक ने मारिया को 'सजने के कमरे' तक पहुँचा दिया। टानिया तब घर जाने की तैयारी कर रही थी,—वह मारिया के साथ जा सकेगी, उसके साथ अकेली बग्घी मे बैठ सकेगी, यह सोच कर उसे बहुत आनन्द हुआ। युवक उन लोगों को बग्घी में बिठा कर बहुत देर तक खड़ा रहा। विदा के समय मारिया ने उसकी ओर एकटक देखा था और कितनी ही प्रेम की बातें उससे कही थी; इसीलिये वह कुछ भी समझ नहीं पा रहा था—वह मारिया के अद्भुत व्यवहार से चकित हो रहा था।

(५)

टानिया आशङ्कित-भाव से अपनी आदरणीय देवी को आलिङ्गन करके अस्फुट स्वर मे बोली—"मारिया इवानोवना! बहिन! मुझसे कहो कि तुम्हे क्या हो गया है?"

मारिया ने पागल की भाँति उसकी ओर देखा। उसके गालों पर आँसू बह रहे थे—आँसू पोंछ कर दबे स्वर से बोली—"मारिया इवानोवना अब नही है। वह मर गई हैं। हा परमात्मा, आखिर पाप का फल मुझे इस तरह भोगना पड़ा!"

"मारिया, मेरी बहिन! सब पुरुष एक ही से होते हैं—वे सब धोखेबाज हैं!"

"नही, नहीं, सो नहीं टानिया। पैवेल एक ऊँचे हृदय का और निर्मल चरित्र का आदमी है। तू आज रात को मेरे साथ रहेगी? जो हुआ है, वह मैं तुझे समझा नही पा रही हूँ!"

बाग से मारिया का कमरा निकट ही था। वहाँ पहुँच जाने के बाद ही मारिया को सब घटनाये सोच कर अन्तिम निर्णय करने का अवसर मिला। उसके दिमाग मे तूफान से भगाई हुई तरगो की भाँति चिन्ताये एक-दूसरे का पीछा कर रही थीं। और वह भयानक शब्द

पैवेल ने मुस्करा कर कहा—"उन्होने तुमसे अपना असली नाम छिपाया था, मारिया। यह हम लोगो के बीच एक गुप्त बात थी। देखो मारिया, मेरे पिता बडे अच्छे आदमी हैं, बडे दयालु हैं—कभी-कभी उन्हे जरा 'मौज' करने की इच्छा होती है। वे अच्छे गाने सुनने के लिये पागल हैं। इसीलिये मैं तुम्हारा गाना सुनाने के लिये उन्हे छिपाकर लाया था। वे गाना सुन कर इतने मुग्ध हो गये थे कि फिर दो-तीन दिन अकेले ही आये थे।"

मारिया उसी क्षण युवक की बाँहो से अपने को छुड़ा कर, सोफा से कूद पड़ी; उसकी सारी देह थर-थर काँपने लगी, उसका चेहरा सफेद हो गया। वह दबे स्वर से बोली—"वे—वे तुम्हारे पिता हैं?"

युवक उठा, अपने हाथो में उसका हाथ लिया, और उसे फिर बिठाने का प्रयत्न करता हुआ बोला—

"हाँ! उनमें कुछ दोष हैं, फिर भी वे बहुत अच्छे आदमी हैं।"

मारिया बार-बार कहने लगी—"पिता! पिता! पिता!"

फिर युवक की बाँहो से अपने को अलग करके दुर्बल और असहाय की भाँति थकी-सी वह एक कुर्सी पर बैठ गई।

"मारिया, मारिया, तुम्हे क्या हो गया! तुम कैसी हो रही हो?"

मारिया ने कोई उत्तर न देकर दोनो हाथों से अपना मुँह ढँक लिया।

"मारिया, तुम उन्हे क्षमा न करोगी? यह तो एक तुच्छ बात है।"

मारिया दोनों हाथो से सिर छिपा कर कराहने लगी।

फिर सिर पर से हाथ बिना हटाए हुये ही वह बोली—"कुछ नहीं। मुझे कभी-कभी ऐसा हो जाता है—सिर मे बहुत दर्द हो रहा है। मुझ पर नाराज न होना। मैं अभी घर जाना चाहती हूँ। कल सध्या के समय यहीं तुम मेरा अन्तिम निर्णय सुन पाओगे। मुझे पहले मैनेजर से बाते करना आवश्यक है।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा, मारिया।"

रूस

काम, मृत्यु और रोग

लेखक—टालस्टाय

दक्षिणी अमेरिका के निवासियों मे निम्नलिखित कथा प्रचलित है।

ईश्वर ने प्रारम्भ मे मनुष्यों को इस तरह से बनाया था कि उन्हे काम करने की कोई आवश्यकता न थी। उन्हे न घरों की आवश्यकता थी, न कपड़ों की, न खाने-पीने की। उन दिनों में सबकी आयु सौ वर्ष की होती थी। बीमारी का नाम तक वे लोग नहीं जानते थे।

कुछ समय के बाद, मनुष्य किस तरह से अपना जीवन बिता रहे हैं, यह देखने के लिये ईश्वर ने जब अपनी दृष्टि इधर डाली, तो देखा कि मनुष्य सुखी नहीं हैं। सुख भोगने की जगह पर उन्होने एक दूसरे से लड़-झगड कर और केवल अपनी-अपनी चिन्ता करते रह कर जीवन को ऐसा दुःखमय बना लिया था कि ससार को दिन-रात कोसते रहते थे।

तब ईश्वर ने सोचा, 'ये लोग अलग-अलग रहते हैं, प्रत्येक का जीवन अपने ही लिये है, इसीलिये यह सब गड़बड है।' और इस दशा को बदलने के लिये ईश्वर ने ऐसा प्रबन्ध किया कि मनुष्य काम किये बिना जीवित न रह सकें। अब उन्हे ठड और भूख के कष्ट से बचने के लिये मकान बनाना, जमीन खोदना और फल और अनाज पैदा करना और इकट्ठा करना आवश्यक हो गया।

ईश्वर ने सोचा, 'इस काम के कारण ये लोग अब मिल-जुल कर रहने लगेंगे। औजार बनाना, लकडी काटना और ढोना, मकान तैयार करना, अनाज बोना और काटना, सूत कातना और बुनना और कपड़े

'पिता' हथौड़े की तरह उसके दिमाग मे आघात कर रहा था। हाँ—'पिता'! उसी क्षण उसने मानो आँखों के सामने ही उसे देख पाया—उसकी सारी देह सिहर उठी। आस्टमस के उसे परिचित करा देने के बाद उसके गाने सुनने के लिये वह अनेकों वार उसके कमरे मे आया था; और प्रत्येक बार उसके लिये फूल, मिठाइयाँ और कीमती गहने लाया था। वह एक ग्रामीण बूढ़ा है, बहुत स्वस्थ और पुष्ट-देह का है—जीवन का आनन्द अभी उसके रक्त मे है। एक बार गाने सुन कर डाक्टर किण्डर बैल्सम के जाने पर मारिया ने देखा कि उसकी पाउडर की डिब्बिया के नीचे दो सौ रुपये का एक नोट रक्खा है। अब यह सब बातें आग मे तपाये लोहे की तरह उसके हृदय को जलाने लगीं। वह जैसे उस बूढ़े का स्वर सुन रही थी; मानो वह कह रहा था—"आज कल के युवक किसी काम के नहीं हैं! वे दुधमुँहे छोकरे समझते ही क्या हैं! स्त्रियों के सम्बन्ध मे डाक्टर किण्डर बैल्सम एक जानकार है, उसका नुसख़ा है एक भारी रकम का चेक या नोट देना—जिससे अच्छे जौहरी की दूकान से अच्छे गहने खरीदे जा सकते हैं।"

मारिया मन ही मन अनुभव करने लगी,—जिस कीचड़ के भीतर उसने अपना सारा जीवन बिताया है, कदाचित् फिर उसी कीचड़ में वह आ पड़ी। इसके बाद डाक्टर के पुत्र पैवेल से क्या वह शादी कर सकती है? बहुत हो चुका। वह स्वयं दूसरों की बाँदी, सर्व-साधारण की सम्पत्ति, एक निम्न श्रेणी की नाचने वाली है। वह किस साहस से एक माननीय घराने के युवक से प्रेम करना चाहती है! नही, उसके लिये कोई भी दण्ड पर्याप्त नहीं है।

उसके दूसरे दिन रात को पैवेल मारिया से जवाब पाने के लिये अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा था। टानिया ने बाग़ मे आकर चुपचाप उसके हाथ मे एक लिफ़ाफा दिया। लिफाफ़ा खोल कर पैवेल ने देखा, एक पूरे कागज पर संक्षिप्त शब्दों मे केवल एक वाक्य लिखा—है—"कोई उत्तर नहीं।"

वश मे कर रक्खा था। इसका परिणाम यह हुआ था कि बलवान् मनुष्य और उनके परिवार वाले स्वय कुछ भी काम न करने के कारण अपने आलस्य और बेकारी से दुःखित थे। दूसरी ओर निर्बलों को अपनी शक्ति से अधिक काम करना पड़ता था और वे आराम न मिलने से दुःखित थे। प्रत्येक दल दूसरे दल से डरता था और घृणा करता था। मनुष्य का जीवन पहले से भी अधिक दुःखमय हो गया था।

यह सब देख कर ईश्वर ने मनुष्यो की दशा मे सुधार करने की इच्छा से अपने अन्तिम उपाय को काम मे लाने का निश्चय किया। उसने मनुष्यों मे तरह-तरह के रोग फैला दिये। ईश्वर ने सोचा, जब प्रत्येक मनुष्य को कभी न कभी रोग का कष्ट भोगना पडेगा, तो सब की समझ मे आ जायगा कि जो स्वस्थ हैं उन्हे रोग-पीड़ितों पर दया करनी चाहिये, उनकी सहायता करनी चाहिये, जिससे कि जब वे स्वय रोग के कष्ट भोग रहे हों, तो दूसरे लोग उसी तरह उनकी भी सहायता करें।

ईश्वर यह प्रबन्ध करके चला गया। लेकिन जब वह यह देखने के लिये फिर लौटा, कि अब तरह-तरह के रोगों का आक्रमण होने के बाद मनुष्यों की क्या दशा है, तो उसने देखा कि वे पहले से कहीं अधिक दुःख भोग रहे हैं। वही रोग जिन्हे ईश्वर ने मनुष्यों का आपस मे मेल-जोल बढाने के लिये फैलाया था, उनको एक-दूसरे से और भी अधिक दूर कर रहे थे। जिन मनुष्यो मे दूसरों से अपना काम कराने की शक्ति थी, वे रोगी होने पर निर्बलों से अपनी सेवा भी करा लेते थे, पर दूसरों के बीमार पड़ने पर स्वय कभी सहायता नहीं करते थे। दूसरी ओर निर्बलों को बलवानो के लिये काम भी करना पड़ता था और उनके रोगी होने पर सेवा भी करनी पडती थी, जिसके कारण वे इतने थक जाते थे कि उन्हें अपने घर के रोगियों की दशा देखने

बनाना—इन कामों को अलग-अलग करना असम्भव है। इसी से इन लोगों की समझ मे आ जायगा कि जितनी ही अच्छी तरह से ये साथ-साथ काम करेंगे उतना ही अधिक सुख इन्हे मिलेगा और अन्त मे ये लोग मिल-जुल कर रहने लगेंगे।'

कुछ समय बीत जाने के बाद ईश्वर फिर देखने को आया कि मनुष्य किस तरह से रह रहे हैं—उनका जीवन सुखमय है या नहीं।

लेकिन ईश्वर ने देखा कि अब वे पहले से भी अधिक बुरी दशा मे हैं।

वे साथ-साथ काम करते थे—करना ही पड़ता था। मगर सब एक साथ नहीं। उन्होंने छोटे-छोटे दल बना लिये थे। प्रत्येक दल दूसरे दल का काम छीनने के प्रयत्न मे रहता था। वे एक-दूसरे के काम मे विघ्न डाल कर अपनी शक्ति और समय को लड़ाई-झगडों में व्यर्थ नष्ट करते रहते थे। सबकी दशा बुरी थी।

ईश्वर ने सोचा, 'यह भी ठीक नहीं रहा'; और तब उसने ऐसा प्रबन्ध किया कि मनुष्यों को अपनी मृत्यु के समय का पता न चले; कोई भी मनुष्य किसी भी समय, एकाएक, मर जाय। ईश्वर ने इस बात की घोषणा मनुष्यो में कर दी।

ईश्वर को आशा थी कि किसी भी दिन मृत्यु आ जाने की बात जानने पर मनुष्य अपने जीवन के अनिश्चित समय को बरबाद नहीं करेंगे और क्षणिक लाभ के लिये आपस मे झगड़ा नहीं करेंगे।

किन्तु परिणाम उल्टा ही हुआ। जब ईश्वर मनुष्यों की दशा का पता लगाने के लिये लौटा, तो देखा कि उनकी दशा इस बार भी बुरी ही है।

मनुष्यो मे जो सबसे अधिक बलवान् थे उन्होने, मनुष्य की मृत्यु किसी भी समय हो सकती है, इस नियम का सहारा लेकर, बहुत से निर्बलो को मार डाला था और बहुतो को मारने की धमकी देकर अपने

इंग्लैंड

प्रेम का मूल्य

लेखक—आस्कर वाइल्ड

युवा विद्यार्थी सोच रहा था, "वह कहती है कि यदि मैं उसके लिये लाल गुलाब का फूल लाऊँ तभी वह मेरे साथ नाचना स्वीकार करेगी। परन्तु मेरे बाग में तो एक भी लाल गुलाब नहीं है!"

ऊँचे वृक्ष पर बने हुए अपने सुन्दर घोसले मे से बुलबुल ने झाँक कर विद्यार्थी को देखा और चकित हो गई।

"सारे बाग में गुलाब का एक भी फूल नहीं है! विद्यार्थी ने फिर कहा और उसकी सुन्दर आँखों मे आँसू आ गये—"हाय! इस ससार में सुख कितनी साधारण वस्तुओं पर निर्भर रहता है! आज तक जितने बुद्धिमान् लेखकों ने जो कुछ लिखा है वह सब मैंने पढ़ा है। दर्शन-शास्त्र का प्रत्येक सिद्धान्त मैं जानता हूँ। फिर भी केवल एक लाल गुलाब के कारण मेरा जीवन दुःखमय है!"

बुलबुल ने कहा, यही एक सच्चा प्रेमी है। प्रत्येक रात्रि को मैं सच्चे प्रेमी के गुण गाती हूँ, पर आज तक मैं उसे देख नहीं सकी। प्रत्येक रात्रि को मैंने उसकी कहानी तारो को सुनाई है, और आज मैं उसे प्रत्यक्ष देख रही हूँ! इसके बालो का रग भौरे की तरह काला है और इसके ओठ इसके इच्छित लाल गुलाब के समान लाल हैं। परन्तु प्रेम ने इसके मुख को चाँदनी की तरह सफेद कर दिया है और दुःख ने इसके ललाट पर अपनी मोहर लगा दी है।"

"कल रात को राजकुमार के यहाँ उत्सव होगा"—विद्यार्थी फिर

था उनकी सहायता करने का समय ही नहीं रहता था। निर्धन रोगियों का दृश्य धनवानो के आमोद-प्रमोद मे विघ्न न डाल सके, इसलिये ऐसे मकानो का अलग प्रबन्ध किया गया था जहाँ पड़े रह कर निर्धन लोग कष्ट उठाते और मर जाते थे। मरते दम तक उनके प्रिय सम्बन्धी उनके पास नहीं आ सकते थे। केवल किराये पर रक्खे हुये कुछ लोग उनके पास रहते थे, जो बिना सहानुभूति दिखाये उनकी उल्टी-सीधी शुश्रूषा कर देते थे और उनसे घृणा तक करते थे। इसके अतिरिक्त बहुत से रोगों को सक्रामक समझ कर लोग न केवल उन रोगियों से, बल्कि उनकी शुश्रूषा करने वालों से भी अलग रहते थे।

तब ईश्वर ने सोचा, यदि मेरे इस उपाय से भी ये लोग नहीं समझ सके कि सुख कैसे मिल सकता है तो फिर इन्हे बहुत से दुःख सहने के बाद ही समझ आयेगी। और ईश्वर मनुष्यो को ज्यों का त्यो छोड़ कर चला गया।

इस प्रकार अपने ही सहारे रह जाने पर बहुत दिनों के बाद मनुष्यों की समझ मे आया कि उन्हे सुखी होना चाहिये और वे सुखी हो भी सकते हैं। अभी थोडे ही दिन पहिले कुछ मनुष्य इतना समझने लगे हैं कि काम कुछ लोगों के लिये "हौआ" और कुछ लोगो के लिये कठिन गुलामी नही, बल्कि एक सुख देने वाली वस्तु होनी चाहिये, जो कि आपस में एकता को बढ़ाती है। अब वे समझने लगे हैं कि किसी भी मनुष्य की मृत्यु किसी भी क्षण हो सकती है, इसलिये जीवन का जितना समय हमारे हाथ में है, उसका प्रत्येक साल, महीना, दिन, घटा और मिनट हमे एकता और प्रेम मे बिताना चाहिये। वे समझने लगे हैं कि रोग हमे एक-दूसरे से अलग करने वाले नहीं, बल्कि एक-दूसरे के साथ प्रेम-पूर्ण एकता बढ़ाने वाले होने चाहिये।

"एक गुलाब के लिये !" सब ने कहा—"छिः, यह कैसा मूर्ख है !" छिपकली दूसरे का दुःख अनुभव नहीं कर सकती थी, वह बड़े ज़ोर से हँसी।

परन्तु बुलबुल ने विद्यार्थी के दुःख का रहस्य समझा। वह चुपचाप अपने घोंसले में बैठी प्रेम की अपूर्व-शक्ति पर विचार करने लगी। एकाएक उसने अपने पंख फैलाए और उड़ गई। वह झाडी के पास से छाया के समान उड़ती चली गई और छाया के ही समान बाग के चारों ओर घूमने लगी। छोटे घास के मैदान मे एक सुन्दर गुलाब का वृक्ष था। बुलबुल उसके पास गई और कहने लगी—"मुझे एक लाल गुलाब दो। इसके बदले मे मैं तुम्हे अपना सब से मधुर गाना सुनाऊँगी।"

परन्तु वृक्ष ने अपना सिर हिलाया और कहा, "मेरे गुलाब तो समुद्र के फेन की तरह सफ़ेद हैं और पर्वत के ऊपर बिछे हुये बर्फ से भी अधिक निर्मल हैं। तुम मेरे भाई के पास जाओ जो उस पुरानी जल-घडी के पास उगा है। कदाचित् वह तुम्हारी माँग पूरी कर सके।"

बुलबुल दूसरे वृक्ष के पास गई, जो पुरानी जल-घड़ी के पास उगा था। उसने कहा—"मुझे एक लाल गुलाब दो। मैं तुम्हे अपना सब से मधुर गाना सुनाऊँगी।"

परन्तु गुलाब ने सिर हिला कर कहा—"मेरे फूल तो पीले हैं। तुम मेरे भाई के पास जाओ जो कि उस विद्यार्थी की खिड़की के नीचे उगा है। कदाचित् वह तुम्हारी माँग पूरी कर सके।"

बुलबुल उस वृक्ष के पास गई, जो विद्यार्थी की खिडकी के नीचे उगा था। उसने कहा—"मुझे एक लाल गुलाब दो। मैं उसके बदले में अपना सब से मधुर गाना तुम्हे सुनाऊँगी।"

परन्तु वृक्ष ने अपना सिर हिलाया और कहा—"मेरे फूल लाल तो हैं, परन्तु ठंड के कारण मेरी नसे जम गई हैं, पाले के कारण मेरी

कहने लगा, "और मेरी प्रेमिका भी उसमे आवेगी। यदि मैं उसके लिए लाल गुलाब ले जाऊँ, तो वह मेरे साथ प्रातःकाल तक नृत्य करेगी; मैं उसकी कोमल देह का आलिङ्गन कर सकूँगा। वह अपना सुन्दर मुख मेरे वक्षस्थल पर रक्खेगी और उसका हाथ मेरे हाथ मे रहेगा। परन्तु मेरे बाग में तो एक भी लाल गुलाब नहीं है! नहीं, मुझे चुपचाप बैठा रहना पडेगा—वह नाचती हुई मेरे पास से निकल जायगी। वह मेरी ओर देखेगी तक नही और मेरा हृदय टूक-टूक हो जायगा!"

बुलबुल ने फिर कहा—"सचमुच ही यह एक सच्चा प्रेमी है। मैं जिस सच्चे प्रेम के गान गाती हूँ, उसे ही यह अनुभव करता है। जो मेरे लिए सुख है, वही इसके लिए दुःख है। निश्चय ही प्रेम एक अलौकिक वस्तु है। प्रेम हीरों से भी अधिक मूल्यवान् और मोतियों से भी अधिक सुन्दर है। मोती-हीरों से प्रेम नही मोल लिया जा सकता, और न प्रेम बाजार मे मिल सकता है।"

युवा विद्यार्थी ने कहा—"मधुर सगीत-लहरी बहती होगी! मेरी प्रेमिका उसकी ताल पर नृत्य करेगी—इतनी सुकुमारता से कि उसके पैर भूमि को नहीं छूते होंगे। सुसज्जित युवक उसके आस-पास जमा हो जायँगे। परन्तु वह मेरे साथ कभी नहीं नाचेगी, क्योंकि उसे उपहार देने के लिये मेरे पास लाल गुलाब नहीं है!" इतना कह कर वह भूमि पर लेट गया और हाथों से मुँह ढँक कर कराहने लगा!

उसी समय एक हरी छिपकली अपनी पूँछ हवा मे उठाये हुये उधर से निकली और उसने पूछा, "यह क्यो रो रहा है?"

"सचमुच, क्यों?" एक तितली ने पूछा, जो सूर्य की किरण के पीछे उड़ रही थी।

"सचमुच, क्यों?" एक गेंदे के फूल ने अपने पड़ोसी से कहा।

बुलबुल ने उत्तर दिया, वह एक लाल गुलाब के लिये रो रहा है।"

एक लाल गुलाब मिल जायगा। इसके कारण दुःखी न होओ। मैं उसे चाँदनी रात मे गाना गाकर बनाऊँगी और अपने हृदय के रुधिर से उसे रँगूँगी। इसके बदले में मैं तुमसे केवल यही चाहती हूँ कि तुम एक सच्चे प्रेमी बने रहो, क्योंकि प्रेम तत्व-ज्ञान से भी अधिक बुद्धिमान् और शक्ति से भी अधिक बलवान् है। आग की लाल लपटों के समान उसके पख हैं और वैसा ही उसका शरीर भी है। प्रेम के अधर मधु के समान मीठे और उसकी श्वास नैवेद्य से भी अधिक सुगंधित है!"

विद्यार्थी ने ऊपर देखा और सुना, परन्तु वह बुलबुल की भाषा नहीं समझ सका, क्योंकि वह तो केवल वही जानता था जो उसकी पुस्तकों मे लिखा था। परन्तु वह वृक्ष जिस पर बुलबुल का घोंसला था, समझ गया और अत्यन्त दुःखित हुआ, क्योंकि वह उस बुलबुल से, जिसने अपना घोंसला उसकी डालियों मे बनाया था, बहुत प्रेम करता था। उसने धीरे से कहा—"क्या तुम सचमुच चली जाओगी? मुझे बहुत सूना-सूना लगेगा। अच्छा, अन्तिम बार एक गाना तो सुना दो!"

बुलबुल ने गाया और उसका स्वर पानी की मृदु-तरङ्गों के संगीत की तरह चारों ओर बहने लगा। जब बुलबुल अपना गाना गा चुकी तो विद्यार्थी उठा और अपनी जेब से नोटबुक तथा पेंसिल निकाल कर कहने लगा—"बुलबुल की बनावट अवश्य सुडौल है। परन्तु क्या उसके हृदय मे प्रेम भी है? नहीं। वह अपने को दूसरों के लिये बलिदान नहीं कर सकती। वह केवल सगीत के ही बारे में सोचती है और सभी जानते हैं कि कलाये स्वार्थ-पूर्ण होती हैं। परन्तु फिर भी यह मानना ही पड़ेगा कि उसका कठ अत्यन्त मधुर है।" विद्यार्थी कमरे मे चला गया और पलग पर लेट कर अपनी प्रेमिका के बारे मे सोचते-सोचते सो गया।

कलियाँ मुरझा गई हैं, और तेज हवा से मेरी बहुत-सी डालियाँ भी टूट गई हैं। इसी कारण इस साल कोई लाल गुलाब नहीं फूलेगा।"

बुलबुल ने हताश होकर कहा—"मैं लाल गुलाब का केवल एक फूल चाहती हूँ, केवल एक! क्या कोई भी उपाय ऐसा नही, जिससे मैं गुलाब पा सकूँ?"

वृक्ष ने उत्तर दिया, "हाँ, एक उपाय है; परन्तु वह इतना भयानक है कि मुझे तुमसे कहते हुये डर लगता है।"

बुलबुल ने साहस-पूर्वक कहा, "नहीं, तुम मुझे बताओ; मैं बिल्कुल नही डरती।"

वृक्ष ने उत्तर दिया, "अच्छा सुनो, यदि तुम लाल गुलाब चाहती हो तो तुमको चाँदनी रात में गाना गा कर उसे बनाना होगा, फिर अपने हृदय के रक्त से उसे रँगना होगा। तुम को अपनी छाती मेरे काँटे पर रख कर चुभानी होगी और उसी समय गाना भी गाना होगा, जिससे तुम्हारा रक्त मेरी नसों मे बहने लगे और मैं फिर से जीवित हो जाऊँ।"

"एक फूल के लिये जीवन का बलिदान!", बुलबुल ने मन मे कहा —"जीवन तो सब को प्यारा है। पेड़ों के बीच, हरे जगल मे बैठ कर, सूर्य को अपने सोने के रथ मे और चन्द्रमा को अपने मोतियो के रथ मे जाता देख कर, कितना सुख होता है! फूलो की सुगन्ध, फलो का हवाओं से हिल कर पत्तो से आँख-मिचौनी खेलना और पर्वत के ऊपर वायु से तरगित घास, यह सब कितना मधुर है! फिर भी प्रेम जीवन से अच्छा है। और फिर भला एक मनुष्य के हृदय के आगे एक पक्षी के हृदय का क्या मूल्य है!"

यह सोच कर उसने अपने पख फैलाए और उड़ गई। वह छाया के समान झाड़ी के ऊपर से, और छाया के ही समान उद्यान के ऊपर से भी उड़ती चली गई। युवा विद्यार्थी उस समय भी वैसा ही लेटा था—उसके नेत्र वैसे ही अश्रुपूर्ण थे। बुलबुल ने कहा, "तुमको

गया, क्योंकि उस समय वह ऐसे प्रेम का गीत गा रही थी जो कि मृत्यु से पूर्ण होता है, ऐसा प्रेम जो चिता मे नहीं जलता, सदैव अमर रहता है। उसी समय सुन्दर फूल एकदम लाल हो गया। पखुडियों के किनारे लाल थे और फूल का हृदय मरकत की तरह लाल था!

परन्तु बुलबुल का स्वर धीमा पड़ता गया और उसके छोटे पख फड़फड़ाने लगे। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। उसका स्वर और धीमा पड़ गया और उसे ऐसा जान पड़ा, मानो कोई उसका गला घोंट रहा हो। तब उसने साहस-पूर्वक बल लगा कर अन्तिम बार गाया। श्वेत चन्द्र ने उसे सुना और वह उषाकाल को भूल कर आकाश में ही रह गया। लाल गुलाब के फूल ने भी उसे सुना, वह भी एक बार कॉप गया और अपनी पॅखुड़ियॉ खोल दीं। उसका स्वर प्रतिध्वनित होकर कन्दराओं में गया और सोते हुये गड़रियों को उनके स्वप्नों से जगा दिया। नदी-तट पर लगे हुये नरकुल के पौधो के अन्दर से होती हुई ध्वनि समुद्र तक जा पहुँची। वृक्ष ने प्रसन्नता-पूर्वक कहा, "देखो-देखो! फूल तैयार हो गया!" परन्तु बुलबुल ने कोई उत्तर न दिया। वह लम्बी घास मे मरी पड़ी थी और वह कॉटा उसी प्रकार उसके हृदय में चुभा हुआ था!

दोपहर के समय विद्यार्थी ने अपनी खिड़की खोली और बाहर देख कर बोला, "ओ हो! मैं कितना भाग्यशाली हूँ! कितना सुन्दर लाल गुलाब है! ऐसा फूल तो मैंने आज तक कभी, कहीं नहीं देखा।" यह कह कर वह नीचे झुका और फूल तोड़ लिया। फिर उसने कपडे पहिने और फूल लिये हुये अपनी प्रेमिका के घर की ओर दौड़ा। उसकी प्रेमिका द्वार के पास बैठी एक रील पर नीली रेशम लपेट रही थी और उसका कुत्ता उसके पास बैठा था।

विद्यार्थी ने चिल्ला कर कहा, "तुमने कहा था कि यदि मैं लाल गुलाब लाऊँ, तो तुम आज उत्सव मे मेरे साथ नाचना स्वीकार करोगी।

और फिर जब आकाश मे चन्द्रमा का उदय हुआ, तो बुलबुल उड़ कर उसी वृक्ष के पास पहुँची और उसके एक कॉटे से अपनी छाती सटा कर खड़ी हो गई। सारी रात्रि वह कॉटे को हृदय से चुभाए गाती रही और निर्मल किन्तु कठोर चन्द्रदेव झुके हुये सुनते रहे। सारी रात बुलबुल गाती रही और कॉटा उसी प्रकार उसके हृदय में चुभता गया और उसका जीवन-रक्त बहता गया। सब से प्रथम बुलबुल ने एक बालक और बालिका के हृदय मे प्रेम के आविर्भाव का गीत गाया। उस गुलाब की सब से ऊपर वाली डाली पर एक फूल निकला। जैसे-जैसे वह एक गाने के बाद दूसरा गाना गाती गई, वैसे-वैसे उस फूल में एक के बाद एक नई पंखुड़ी आती गई। वह फूल नदी-तट पर के कोहरे की भॉति मलिन और उषाकाल के पखों के समान धूमिल रग का था। वृक्ष ने एक बार कहा—"अपने हृदय को और जोर से दबाओ, नही तो सवेरा हो जायगा और फूल अधूरा ही रह जायगा।" बुलबुल ने कॉटा और जोर से चुभाया और उसी के साथ उसका गाना भी तीव्र होता गया, क्योंकि अब वह एक युवा और युवती के हृदय में कामना के आविर्भाव का गीत गा रही थी।

फिर उस गुलाब के फूल मे हल्का गुलाबी रग छा गया। परन्तु कॉटा अभी तक उसके हृदय को पूरी तरह नही छेद पाया था, इसी से फूल का भी मध्यभाग अभी सफेद ही था, क्योंकि बुलबुल के हृदय का रक्त ही तो फूल के हृदय को रग सकता था।

वृक्ष ने फिर कहा—"और जोर से दबाओ! नही तो फूल बनने के पहिले दिन निकल आयेगा।"

बुलबुल ने और अधिक दबाया और कॉटा उसके हृदय मे घुस चला। उसी क्षण उसे असह्य पीड़ा का अनुभव हुआ। पीड़ा बहुत अधिक थी, इसी से उसके साथ-साथ उसका गाना भी भयानक होता

यह लो ! संसार भर में इसके समान सुन्दर फूल तुम्हें कहीं मिलेगा । आज रात को तुम इसे अपने हृदय पर लगा लेना, और हम नाचेंगे तब यह तुमको बतायेगा कि मैं तुमसे कितना करता हूँ ।"

युवती ने एक बार भौंहे टेढ़ी कीं और कहा, "परन्तु यह तो कपड़ों पर अच्छा नहीं लगेगा । इसके सिवाय आज एक धनी जमीं के पुत्र ने मुझे सुन्दर हीरे भेजे हैं । सभी जानते हैं कि हीरे गुलाब फूलों से कहीं अधिक मूल्यवान् होते हैं ।"

विद्यार्थी ने क्रोध में आकर कहा, "निश्चय ही तुम विश्वासघाति हो !", और फिर उस बहुमूल्य फूल को सड़क पर फेंक दिया औ और—उस फूल के ऊपर से एक गाड़ी का पहिया निकल गया !

युवती ने उत्तर दिया, "विश्वासघातिनी ! मैं आप से कहे देती हूँ आप बड़े धृष्ट हैं । और फिर आप हैं ही कौन ? एक मामूली विद्यार्थी और वह एक धनी जमींदार का पुत्र !" इतना कह कर वह उठी औ अन्दर चली गई ।

"प्रेम भी कितना तुच्छ है !" निराश विद्यार्थी ने घर लौटते-लौटते सोचा—"प्रेम सदैव ऐसी बाते बताता है जो कभी होती ही नहीं और ऐसी वस्तुओं में विश्वास दिलाता है जो असत्य हैं !"

यही सोचता-सोचता वह अपने कमरे में चला गया और एक बड़ी-सी दर्शन-शास्त्र की पुस्तक, जिस पर धूल जम गई थी, निकाल कर पढ़ने लगा ।

* समाप्त *